॥ श्री आईजी प्रसादात् ॥

श्री आई माता का संक्षिप्त इतिहास

लेखक व संकलनकर्ता

नारायणराम लेरचा

बडेर, बिलाड़ा (राजस्थान)

4

॥ श्री आईजी प्रसादात् ॥

श्री आई माता का संक्षिप्त इतिहास

लेखक व संकलनकर्ता

नारायणराम लेरचा

बडेर, बिलाड़ा

प्रकाशक

माजी साहब राजकंवरजी

दिवान साहब श्री माधवसिंहजी

जतीजी श्री मोती बाबाजी

प्राप्ति स्थान :

१. बडेर, बिलाड़ा (राज०)

२. कमल ऑप्टीकल्स, बिलाड़ा (राज०)

●

मुद्रक :

सज्जन प्रिन्टिंग प्रेस
त्रिपोलिया बाजार,
जोधपुर (राज०)
☎ 22970

●

प्रथमावृति
2000
वि. सं. २०४०

●

मूल्य :
५/- रुपये

●

"दो शब्द"

श्रीमान् दिवान साहब श्री माधवसिंहजी की प्रेरणा से मैंने प्रस्तुत पुस्तक "आई माता का संक्षिप्त इतिहास" का संकलन कर लेखन का साहस किया। जो मेरे लिये सर्वथा असम्भव कार्य था। मैं कोई साहित्यकार या इतिहासकार नहीं हूं। यों भी यह मेरा प्रथम प्रयास है। लेकिन श्रीमान् दिवान साहब की प्रेरणा से इस कार्य में सफलता प्राप्त की। मुझे अनुभव न होने के कारण, कई कठिनाईयों का सामना करना पड़ा। लेकिन स्वर्गीय दिवान साहब हरीसिंहजी के समय में श्री बद्रीदानजी चारण के द्वारा (आई माता के इतिहास व दिवान परिवार के सम्बन्ध में) कई तथ्य इकट्ठे किये हुवे थे। श्री बद्रीदानजी चारण द्वारा इकट्ठे किये गये तथ्यों से मुझे बहुत सहयोग मिला। साथ ही वर्तमान कामदार श्री पन्नेसिंहजी पड़िहार ने बडेर ठिकाना की पुरानी बहियों व परवानों से अवगत कराया। जिससे मुझे सफलता प्राप्त हुई। मैंने पहले ही निवेदन कर दिया है कि यह मेरा प्रथम प्रयास है तथा मैं कोई साहित्यकार या इतिहासकार नहीं हूं।

अतः विद्वान पाठकों से अनुरोध है कि प्रस्तुत पुस्तक में यदा कदा त्रुटियां दृष्यिगोचर हों तो उन त्रुटियों से मुझे अवगत कराने की कृपा करें। मैं हृदय से उनका आभारी रहूंगा।

निवेदक—

नारायणराम लेरचा

जून 1983

बडेर, बिलाड़ा (राज०)

स्व. श्री नारायणराम लेरचा

- समर्पण -

स्वर्गीय दिवान साहब

श्रीमान् हरीसिंहजी

बडेर, बिलाड़ा

को सप्रेम सादर समर्पित

—नारायणराम लेरचा

श्री आई माताजी का मन्दिर

बडेर, बिलाड़ा (राज०)

श्री आई माता का संक्षिप्त इतिहास

संवत् 1250 के आस-पास ब्रह्मा की खेड़ नामक राज्य पर गोहिलों का शासन था। गोहिल राजा का मंत्री डाबी जाति का सांवतसिंह था। किसी कारण राजा से अनबन हो जाने से मंत्री सांवतसिंह आसथानजी से मिलकर खेड़ पर हमला करा दिया। गोहिलों की हार हुई व राव आसथानजी का शासन हो गया। तब डाबी सांवतसिंह खेड़ छोड मांडू (मांडवगढ) से 20 मील दूर अम्बापुर नामक गांव में आकर बस गया। उसी डाबी जाति के सांवतसिंह के वंश में अनुमानतः संवत् 1440 के आस-पास बीका का जन्म हुआ। बीका डाबी बचपन से ही अम्बा माता का भक्त था। अम्बापुर में मां अम्बा का मंदिर था। उसी मंदिर में जाकर बीका हमेशा अम्बा माता की भक्ति किया करता था। बीकाजी के ब्याह के कई वर्ष बीतने के बाद भी उनके कोई सन्तान नहीं हुई तो वे हमेशा मां अम्बा से सन्तान प्राप्ति की आराधना किया करता था। बीकाजी की अटूट आस्ता व भक्ति देख, एक रात मां अम्बा ने स्वपन में दर्शन देकर बीका को वरदान दिया कि "मैं तेरी भक्ति से बहुत प्रसन्न हूँ। तेरी मनोकामना पूर्ण होगी, मैं तेरे घर कन्या रूप में आऊंगी।" यह वरदान दे मां अम्बा अलोप हुई। सुबह उठ कर बीकाजी ने अपनी पत्नी को स्वपन की बात बताई। मां अम्बा की कृपा देख दोनों पति पत्नि बहुत खुश हुवे।

संवत् 1472 के आस पास माँ अम्बा के दिये वरदान से बीका के घर एक कन्या का जन्म हुआ। कन्या के जन्म से बीकोजी अति प्रसन्न हुवे। कन्या का नाम जीजी रखा। जीजी तो माँ अम्बा का ही रूप थी। अतः बाल्य काल से ही भक्ति में लीन रहती

थी । जब जीजी की अवस्था बारह बरस की हुई । उस समय उसका रूप इतना मोहक था कि लोग कहते बीका के घर रत्न आया है । ऐसा रूप हमने आज तक न तो कहीं देखा और न ही कहीं सुना । जीजी के रूप की खबर आस पास फैलने लगी। उन्ही दिनों मांडू (मांडवगढ) राज्य का शासक महमूद शाह था। महमूद शाह अति दुष्ट व हिन्दुओं पर अत्याचार किया करता था। हिन्दुओं की बहु बेटियों को जबरदस्ती अपने महलों में डाल देता था । जब बादशाह ने जीजी के रूप की खबर सुनी तो उसकी लालसा जीजी को प्राप्त करने बढी । उसी समय अपनी सांत नोकरानियों को अम्बापुर जीजी को देखने हेतु भेजी। नोकरानियां अम्बापुर पहुंच कर जीजी का तेज रूप देख बहुत आश्चर्य चकित हुई । तुरन्त वापस मांडू (मांडवगढ) आकर बादशाह से अर्ज की कि आपके महलों में जितनी हूरमें हैं, उनमें से शायद ही कोई ऐसी हो जो जीजी के रूप का मुकाबला कर सके । ऐसी नारी हमने आज तक नहीं देखी । नोकरानियों के मुंह से जीजी की इतनी तारीफ सुन बादशाह की लालसा अति प्रबल हुई । तुरन्त अपने मन्त्री को बुलाकर आज्ञा दी कि शिघ्रता शिघ्र जैसे तैसे अम्बापुर के बीका डाबी की पुत्री जीजी को महलों में डाली जाय । मंत्री बुद्धिमान था । उसने बादशाह से निवेदन किया कि बीका जाति का क्षत्री है । जीते जी अपनी पुत्री को कैसे लाने देगा । आप बीका को बुला कर जीजी के साथ विवाह करने की बात करो । यदि बीका मान जाय तब तो ठीक अन्यथा और सोचा जायेगा । बादशाह ने मंत्री की बात मानकर एक घुड़सवार को अम्बापुर बीका को बुलाने भेजा । घुड़सवार तुरन्त अम्बापुर जाकर बीका को ला बादशाह के सामने उपस्थित किया । बादशाह ने बीका से जीजी के साथ विवाह करने की बात कही । बीकाजी बात सुन कर

शोकाकुल हुवे । और बादशाह से कहा कि मैं अपनी पत्नि व पुत्री को पूछ कर जवाब दूंगा । क्योंकि यह काम पुत्री पर ही निर्भर है । यह सुन बादशाह ने बीका से कहा "तुरन्त जाकर अपनी पुत्री से पूछ कर मुझे जवाब दो ।" बीकाजी बादशाह से विदा ले शोक सिन्धु में डूबे अपने घर पहुंचे । चेहरा उतरा हुवा देख उनकी पत्नि ने पूछा कि आपकी यह दशा क्यों कर है । इस पर बीकाजी ने अपनी पत्नि को सारा हाल सुनाया और कहा कि मेरे जीते जी यह बात असम्भव है । मैं अपना सिर काट कर मां अम्बा के चरणों में अर्पित कर दूँ और तूँ मेरे पीछे सती हो जाना ।

माता पिता की आपस में हो रही बातें जब जीजी ने सुनी तो अपने पिता से कहा कि आप मन में किसी प्रकार की चिन्ता न रखें । आप जाकर उस दुष्ट बादशाह से कह दें कि जीजी ब्याहने को तैयार है । तूं विवाह करने आजा । आप निडर होकर जाइये । साथ में यह भी बता देना कि विवाह हिन्दू रीति से होगा व विवाह के पहले का भोजन (कंवारा भात) यहां आकर करना होगा । साथ में किसी प्रकार की खाद्य सामग्री नहीं लावें । आप विवाह का दिन निश्चित कर आ जावें । बीकाजी ने जीजी की बात अंगिकार कर बादशाह के पास जाकर विवाह की बात कही व साथ में जीजी द्वारा बताई शर्तें भी बतादी । यह सुन बादशाह ने कहा तूं गरीब आदमी है । मेरी लाखों की फोज हेतु भोजन का सामान कहाँ से लायेगा । जिस वस्तु की आवश्यकता हो वो यहां से ले जा । बीकाजी साफ इन्कार कर विवाह की तिथि मुकर्र कर वापिस अपने घर आ गये ।

बादशाह जीजी से विवाह की बात सुन मन में बहुत प्रसन्न हुआ। अपने मन्त्री को बुला बरात की तैयारी की आज्ञा दी। लाखों की फौज के साथ बादशाह निश्चित तिथि को बरात बना कर अम्बापुर पहुंच, गांव के बाहर डेरा डाल दिया। तथा बीकाजी को अपने आने की खबर भिजवा दी। बीकाजी बादशाह के पास आकर अपने पास से खाद्य सामग्री व्यय न करने को कह कर पुनः अपने घर आ जीजी को बताया। जीजी को बादशाह के आने की खबर मिलते ही खाद्य पदार्थ की ऐसी सुव्यबस्था की कि जो वस्तु मांगे वो अखूट कर दी। आप तो जाकर एक छोटी झोंपडी में बैठ गई और दरवाजे पर अपनी एक सहेली को बिठा दिया। बादशाह के आदमी भोजन करने आने लगे। ज्यों ज्यों बादशाह के आदमी भोजन करने आते उन्हें जीजी मांगे उससे सवाया भोजन देती गई। यह वार्ता जब बादशाह के कानों तक पूगी तो उसने सोचा बीका तो एक साधारण आदमी है। भोजन की इतनी सामग्री कहां से लाया। यह सोच इस बात को जानने व जीजी को देखने हेतु बादशाह एक फकीर का रूप बना कर सन्ध्या समय जीजी की झूंपड़ी पहुंचा।

जीजी तो देवी का अवतार थी। उसी समय बादशाह को पहचान लिया। मन में सोचा यही दुष्ट अय्यासी बादशाह है। जो मेरे साथ विवाह करने आया है। अभी इसे बताती हूं। यह सोच जीजी उस झूंपड़ी से बाहर निकली। बाहर आते ही जीजी का तेज रूप देख बादशाह मूर्छित होकर गिर पड़ा। मूर्छा टूटने पर उठ कर भागने लगा। उसी समय जीजी ने सिंह वाहिनी रूप धारण कर बादशाह पर झपटी और ललकारा–हरामखोर, दुष्ट ठहर, भागता कहां है। अभी तो मेरे साथ विवाह करना है। इतना सुनते ही देवी का प्रचन्ड रूप देख बादशाह थर थर धूजने

लगा । उसका सारा घमण्ड चूर हो गया । देवी के चरणों में गिर कर गिड़गिड़ाने लगा । तथा कहने लगा "या अल्लाह यह क्या बला है । हे देवी मां मैंने आपको पहचाना नहीं । आप तो साक्षात देवी है । मैं आपके चरणों का दास हूं । मुझे माफ कर दो । कुरान की सौगन्ध खाकर कहता हूँ कि आप जैसी देवियों से तो क्या, हिन्दू मात्र से द्वेश व कुव्यवहार नहीं करूंगा । इस पर जीजी ने उससे कई शर्तें अंगिकार कराई तथा उसे छोड़ा । बादशाह ने बीकाजी को अपना गुरु बनाया व जीजी का उपासक बन गया । अम्बापुर में माँ अम्बा का भव्य मन्दिर बनवाया । जहाँ आज भी लाखों लोग दर्शनार्थ आते है । मंदिर की देख-रेख दांता दरबार करते है । वो मन्दिर आबू रोड से 15 किलोमीटर है और अभी गुजरात राज्य में है ।

जब लोगों को जीजी के चमत्कारों की जानकारी हुई तो लोग जीजी के दर्शनार्थ उमड़ पड़े । आस पास के लाखों की भीड़ अम्बापुर में रहने लगी । अम्बापुर एक पवित्र धाम बन गया । देवी (जीजी) ने लोगों को कई परचे दिये और लोगों का दुख दूर किया । आस्तिकता के इतने डंके बजे कि लोग जीजी को देवी मानकर पूजने लगे । कई वर्ष अम्बापुर में रहते एक दिन जीजी ने अपने पिता बीकाजी से कहा कि मैं कहीं शान्त स्थान पर तपस्या करना चाहती हूं । यहां पर लोगों की भीड़ के कारण मेरी तपस्या करना सम्भव नहीं है । ऐसा कह अपने पिता से बिचार बिमर्श कर तपस्या हेतु मारवाड़ में बलीपुर नामक स्थान का चुनाव किया । जहां बावनी गंगा बहती है, स्थान पवित्र है । स्थान का चुनाव हो जाने पर जीजी अपने पिता के साथ अपनी धार्मिक पुस्तकें व आवश्यक सामग्री की

गठरी बनाकर एक पोठिये (बैल) पर लादकर अम्बापुर से मारवाड़ में बलीपुर के लिये प्रस्थान किया ।

अम्बापुर से चल कर जीजी (देवी) सर्वप्रथम आडावला पहाड़ की तलहटी में बसा गांव नारलाई पहुंची । वहां आकर एक खूंटे के अपना बैल बांधकर जीजी पहाड़ी पर चढी । पहाड़ी पर चढ कर अपने हाथ का डंडा (सोवन चिटिया) पहाड़ी पर एक चट्टान से छुआया । डंडा के छूते ही पहाड़ी पर एक गुफानुमा कमरा बन गया । उस जगह बैठ कर अपना मंदिर कायम किया व घी की ज्योति जलाई, जिसकी लो पर केशर पड़ा । कुछ दिन वहां पर भक्ति की । उस स्थान का नाम जेकलजी रखा । जहाँ आज भी अखंड ज्योति जलती है और केशर पड़ता है । नीचे तलहटी में जहां पर अपना बैल बांधा था । उस खूंटे का नाम खूंटियां बाबजी पड़ा, जिसे आज भी लोग बड़ी श्रद्धा से पूजते हैं । वो खूंटा ग्राम नारलाई में सीरवी पड़िहार गोत्र के घर में आज भी विद्धमान है । पिड़ियार गोत्र में शादी के अवसर पर आज भी खूंटिया बाबजी की जात देते हैं ।

नारलाई में कुछ दिन रह कर आगे के लिये प्रस्थान किया । आगे गांव डायलांणा पहुँचे । जो कि मेवाड़ राज्य में था । डायलांणा गांव के पूर्व की ओर बेरा सादारण के जाव में जाकर ठहरे । स्थान पवित्र जान कुछ समय वहां ठहरने का विचार किया । लेकिन उस स्थान पर धूप अधिक थी । आसपास कोई वृक्ष नजर नहीं आया । यह देख माता जीजी ने खेतों में हल चलाते किसानों से छाया करने को कहा । आस-पास कुछ था नहीं, ऐसी स्थिति में किसानों ने एक हल को खड़ा कर उस पर घास डाल कर छाया कर दी । हल बड़ वृक्ष की लकड़ी का बना हुआ था । तथा उसके झंवाड़े में एक सिवल राईरण की लकड़ी की लगी हुई थी । जीजी मां के चमत्कार से हल के स्थान पर

एक बड़ का वृक्ष व उपर राईरण का पेड़ उग गया । यह रचना देख किसान मां के चरणों में पड़े। बड़ वृक्ष के नीचे अपने मंदिर की स्थापना की व अखंड ज्योति जलाई । जिसकी लो पर केशर पड़ा । उस बड़ के पेड़ का नाम जीजी बड़ रखा । आज बड़ वृक्ष मौजूद है । अखंड ज्योति जलती है । जिस पर केशर पड़ता है । कोई भी मनुष्य यदि सच्ची भक्ति से उस बड़ के पेड़ के नीचे बैठ कर आराधना करे तो उसकी मनोकामना पूर्ण हो जाती है । जीजी को तो तपस्या करने हेतु बलीपुर आना था । अतः कुछ समय डायलाणा में रह कर आगे के लिये प्रस्थान किया ।

चलते २ सुबह के समय ग्राम भेसाणा के पास से गुजर रहे थे कि सामने एक ग्वाला मिला जो अपनी भेंसों को चराने जंगल की ओर जा रहा था । भेसाणा में ग्वालों का बहुत आतंक था । वे हर किसी के खेत में अपनी भेंसों को डाल देते थे ।" लाठी पर जोर रखते थे । पूरा गांव उनके अत्याचारों से दुखी था । ऐसे समय में ग्वाला मां जीजी को सामने आता हुआ मिला था । ग्वाले ने मखोल से कहा "ऐ डोकरी किधर जा रही है । आगे से हट जा कहीं मेरी भेंसों को बिदकायेगी ।" ग्वाले की बात पर जीजी ने कोई ध्यान नहीं दिया । इस पर ग्वाला गुस्सा करके आस पास पत्थर ढूंढने लगा । जिससे जीजी को मार सके । यह देख मां जीजी ने कहा "भाई क्या ढूंढ रहा है । तुझे पत्थर चाहिये, जा तालाब की पाल पर व अन्दर बहुत से पत्थर पड़े हैं । जितने चाहे उठाला ।" जब ग्वाले ने तालाब की ओर देखा तो हैरान रह गया । उसकी सारी भेंसों के पत्थर बन गये थे । ग्वाला मां के चरणों में गिर कर गिड़गिड़ाने लगा । आज भी ग्राम

भेसांणा के तालाब पर देवी के श्राप से बने भेसों के पत्थर देखे जा सकते हैं ।

भेसांणा के ग्वाले का गर्व गाल कर जीजो मां आगे रवाना हुई । रास्ते में सोजत होते हुए जब सूकड़ी नदी के किनारे बसी सीरवी बीला की ढाणी के पास से गुजर रहे थे । उस समय बीला जीजी मां को देख बड़े आदर से उन्हें प्रणाम किया । बीला की भक्ति देख जीजी मां ने वरदान दिया कि बीला थांरी ढांणी खूब बधे ने फलेला ने फूलेला । घणी सम्पत्ति होगी । देवी के वरदान से बीला की ढाणी बढ कर आज सुन्दर बड़ा गांव बीलावास बसा हुआ है ।

वहां से आगे चलते हुवे जीजी मां संवत् 1521 के भादरवा शुद्ध बीज शनिवार को बलीपुर पहुंचे । बलीपुर में जीजी सर्व-प्रथम पास में बसी हांबड़ों की ढाणी में गये । वहां जाकर पूछा "भाई मैं एक छोटी झूंपड़ी बांध कर तुम्हारी गवाड़ी में रहना चाहती हूं ।" यह सुन उस सीरवी (हांबड़) ने कहा आगे ही मारे तो सांपत मोकली है । तेरी झूंपड़ी को गायां बिखेर बेगी व खा जायेगी । उस हांबड़ सीरवी का नाम बीला था जो नगा का पुत्र था । वह धनवान था । लोगों को ब्याज से रुपये देता व दूना वसूल करता था । उसका अत्याचार भी ज्यादा था । अपने धन के घमंड में उसने जीजी को मना किया था । इस पर देवी जीजी ने कहा जा तेरी गांयों को चोर ले जायेंगे । अन्न की कमी आ जायेगी । ऐसा श्राप सुन बीला हांबड़ घबराया और जीजी मां के चरणों में पड़ कर माफी मांगने लगा । इस पर जीजी मां ने कहा जा आज से तूं मेरा कोटवाल रहेगा । आगे से तेरे हांबड़ वंश के ही मेरी कोटवाली करेगें । यह सुन बीला जीजी

की भक्ति करने लग गया। उसके एक लड़की थी। जिसका नाम शोढी था। शोढी बचपन से ही मां की सेवा करने लगी थी। मां जीजी उससे पुत्री तुल्य प्यार करते थे। आस-पास के लोग जीजी के चमत्कार सुन दर्शनार्थ आने लगे। यहां तक की बीलपुर तो खाली हो गया और बीला की ढाणी आबाद हो गई। जब से ढाणी बड़े गांव का रूप ले लिया तो उसका नाम बिलाड़ा पड़ा। जीजी मां के बिलाड़ा आने पर लोग उन्हें आई माता के नाम से पुकारने लगे।

वहां से चलकर आई माता राठोड़ सीरवी की गवाड़ी आकर अपनी छोटी झोंपड़ी बना कर रहने लगे। अपने बैल को पास में एक नीम के नीचे बांध दिया। जहां पर आजकल बडेर आबाद है। आई माता की झोंपड़ी व बैल के बंधने के स्थान पर नीम आज भी विद्यमान है।

उन्हीं दिनों बिलाड़े का राज्य राव जोधाजी के पुत्र भारमलजी के आधीन था। भारमलजी तो ज्यादातर अपने पिता के पास जोधपुर ही रहा करते थे और बिलाड़े के राज-काज के काम की देखरेख राव धूहड़जी के वंशज लाखाजी के पुत्र जाणोजी को मंत्री बनाकर सौंपी हुई थी। जाणोंजी संवत् १५१७ के माघ वदी बीज शनिवार को बिलाड़ा आकर अपना कार्य सम्भाल यहीं सपरिवार निवास करने लगे। जाणोंजी, राव धूहड़जी के वंशज होना निम्न छप्पय से प्रमाणित होता है।

राज संभाली ने सुजस, नगर वील निज राज।
भारमल्ल के सचिव भणि, सहुक्कत राज सु काज॥
कम धज ली रविवंश में, धूहड़ राव सधीर।
धूहड़ रे चंडेस भौ, ताहि चंड रनवीर॥

ताहि अजेसी सुत भयो, बापलता सुत बंग।
बंग सुत तवाधौ भयो, ताकै ध्वारड़ अंग।।
धारड़ सुत बसतो भणे, बसता सुत लाखेस।
लाखे सुत जाणों भयो, जांणा सुत माधेस।।

राव धूहड़जी के वंश का विवरण निम्नानुसार है।

(1) राव धूहड़जी पाली के रखवाले बनाये गये थे। व खेड़ का राज्य गोहिलों से लड़ कर प्राप्त किया था।

(2) चन्डीपालजी --जन्म संवत् 1207 माघ सुद 5
विवाह–संवत् 1228 चेत सुद 10
स्वर्गवास–संवत् 1267 आषाढ़ सुद 6

(3) अजयसिंहजी—जन्म - संवत् 1232
विवाह—संवत् 1252 स्वर्गवास - संवत् 1317

(4) बापलजी – जन्म—संवत् 1306 माघ वद 9 गुरुवार
विवाह—संवत् 1319 मिगसर स्वर्गवास – सं. 1352

(5) बगसीजी – जन्म—संवत् 1322 माघ सुद 7
विवाह—संवत् 1332 माघ सुद 6 सोमवार
स्वर्गवास—संवत् 1368

(6) धारड़जी जन्म—संवत् 1340 आसोज सुद 8
विवाह—संवत् 1355 जेठ सुद 6
स्वर्गवास—संवत् 1380

(7) बसतोजी—जन्म—संवत् 1375 कातिक सुद 8
विवाह—संवत् 1394 चेत सुद 12
स्वर्गवास–संवत् 1460 कातिक सुद 12

(8) लाखोजी—जन्म –संवत् 1420 चेत सुद 6
विवाह—संवत् 1440 ग्रासोज सुद 12
स्वर्गवास—सवत् 1470 कार्तिक वद 6

(9) जाणोंजी—जन्म—संवत् 1461 जेठ सुद 6
विवाह—संवत् 1481 वैसाख सुद 2
स्वर्गवास—संवत् 1539

(10) माधवजी—जन्म—संवत् 1484 कार्तिक वद 6
विवाह—संवत् 1525
स्वर्गवास—संवत् 1555 कार्तिक वद 6

ग्राई माता राठोड़ों की गवाड़ी में रहने लगे व ग्रपना मंदिर कायम किया। वहां पर ग्रखंड ज्योति जलाई जिसकी लो पर केशर पड़ा। जो ग्राज दिन विद्यमान है। जाणोंजी व उनकी पत्नि दोनों रात दिन ग्राई माता की भक्ति में लीन रहते थे। जाणोंजी ग्रक्सर दुखी रहा करते थे। जाणोंजी के दुख का यह कारण था कि उनके माधव नाम का एक पुत्र था। वह वीर प्रकृति का था। एक दिन जाणोंजी ने माधव को ताड़ना देकर पढने भेजा। इस ताड़ना से रूष्ट होकर माधव ग्रपने घर से भाग गया। उसको बहुत खोज की गई लेकिन कहीं भी पता नहीं लगा। उस समय माधव की ग्रायु मात्र बारह बरस की थी। माधव घूमता घामता रामपुरा जाकर वहां के रावजी की चाकरी करने लगा। कई वर्ष रहते रावजी को माधव पर पूर्ण विश्वास हो गया था। माधव वीर व बलिष्ठ तो था ही। यह देख रावजी ने ग्रपनी सेना का सेनानायक बना दिया। उन्हीं दिनों रामपुरा पर एक गनीम बादशाह ने हमला कर दिया। उस हमले को माधव

ने नाकाम कर दिया। माधव का कार्य देख रावजी खुश हुवे और उसे अपना दीवान बनाकर ५० हजार की जागीर के तीन गांव (अल्हेर, आमद, हासलपुर बख्शीस किये। अपना मशहूर उमराव बनाया। जागीर के गांव आज तक मौजूद है। जो इन्दोर राज्य में है। इन्दोर में इनकी प्रथम श्रेणी के सरदारों में बैठक है तथा राजश्री व ठाकुर की पदवी है।

माधवजी ने तो रामपुरा में जाकर बहुत सा मान प्राप्त कर लिया था। लेकिन यहां जाणोंजी को उनकी खबर नहीं थी। इसी कारण हरदम दुखी व उदास रहते थे। दोनों पति पत्नि आई माता से हमेशा माधव का पता लगाने की अरदास किया करते थे। एक दिन आई माता ने खुश होकर जाणोंजी से कहा कि चिन्ता मत करो तुम्हारा पुत्र माधव शिघ्र आयेगा। वह बहुत प्रसन्न है। उसने बहुत नाम कमाया है। यह सुन जाणोंजी आई माता के चरणों में पड़कर निवेदन किया कि हे मातेश्वरी आप माधव को बुलाकर एक बार उसका मुंह दिखा दो तो मैं माधव को आपकी सेवा में सूंप दूंगा। यह सुन आई माता ने कहा अब माधव शिघ्र आयेगा। इस पर जाणोंजी को पूर्ण विश्वास हो गया कि अब मेरा पुत्र आई माता की कृपा से शिघ्र आ जायेगा।

उन्हीं दिनों पीपाड़ के एक करोड़पति सेठ की कन्या का रिश्ता रामपुरा के एक सेठ के पुत्र से तै हुवा। उसी साल असाढ में विवाह की तिथी मुकर्र हुई। विवाह के समय रामपुरा के सेठ ने रावजी से अर्ज की कि आप बरात में साथ पधारें। क्योंकि रास्ता लम्बा है और रास्ते में चोर डाकुओं से बरात की रक्षा आपके द्वारा होगी। रावजी तो जरूरी कार्यवश बरात के साथ आ नहीं

सके और माधवजी को बरात की रक्षा हेतु साथ भेज दिया। बरात रामपुरा से रवाना होकर रास्ते में सहवाज गांव में रात्रि विश्राम लिया। सेहवाज में जाणोंजी की बहन, माधवजी की भुआ विवाही हुई थी। जब माधवजी की भुआ को माधवजी की खबर मिली तो तुरन्त अपने पास बुलाया। बिलाड़ा के समाचारों से अवगत करा कर कहा कि शिघ्र बिलाड़ा जावो। जाणोंजी बहुत दुखी है। माधवजी अपनी भुआ की आज्ञा मान वहां से बरात के साथ रवाना होकर पीपाड़ पहुँचे। विवाह सम्पन्न करा कर पुनः रामपुरा लौटते समय बिलाड़ा रूके और अपने माता पिता से मिले। जाणोंजी माधवजी का हाथ पकड़ कर आई माता के पास ले गये। माधवजी ने आई माता के चरण स्पर्श किये। कुछ दिन रहने के बाद माधवजी रामपुरा जाने के लिये विदा मागी। इस पर जाणोंजी ने साफ मना कर दिया लेकिन आई माता ने कहा आप माधव को जाने दो, मैं इसे वापस बुला लूंगी। इस पर जाणोंजी ने माधवजी को रामपुरा जाने दिया। बहुत दिन बीतने पर माधवजी की मां ने आई माता से निवेदन किया कि माधव को शिघ्र वापस बुलाईये। इस पर आई माता ने एक ईग्यारह तार का बना डोरा माधवजी की मां को दिया और कहा कि रोज सुबह उठ कर इस डोरे के एक गांठ लगाते रहना। माधव आवे जब तक गांठ लगाते रहना। माधवजी की मां ने डोरा ले लिया और रोज एक गांठ लगाती रही।

उधर आई माता रामपुरा में रावजी को स्वप्न में दर्शन देकर अपना चमत्कार बताया। रावजी आई माता के चरणों में पड़े और बोले-मां मेरे लिये क्या हुक्म है। इस पर आई माता ने कहा शिघ्र माधव को बिलाड़ा भेज देना इतना कह देवी अलोप हुई। रावजी ने बड़े आदर सत्कार से माधवजी को बिलाड़ा रवाना किया।

रामपुरा से विदा हो माधवजी ईग्यारवें दिन बिलाड़ा पहुंच गये थे। अतः आई माता के दिये हुवे डोरे के माधवजी की मां ईग्यारह गांठे लगा चुकी थी। वह ईग्यारह तार का ईग्यारह गांठ लगा डोरा आई माता ने अपने हाथ से माधवजी के दाहिने हाथ के बांधकर अपने आई पंथ का शुभारम्भ किया। आई माता ने कहा यह डोरा (जिसका नाम बेल रखा) पुरुष दाहिने हाथ व स्त्री गले के बांधे, आई पंथ के अनुयाईयों की यह जनेऊ है।

सिर हाथ दियो आई, सही इमकर (डोरो) बांधियो।
विसतरे धर्म पृथवी, विचे कर (वडहर) सेवक कियो।।

आई माता की बेल (डोरा) के सम्बन्ध में

काचो सूत बटायके, तार ईग्यारे ताम।
ग्रंथ एक दस गांठ जै, बांधिये गुरु नाम।।
दक्षिण कर मानव तणे, वनिता गल बंधाय।
दस अवतारे ग्रंथ गुन, हनुमान हितलाय।।
हनुमान अवतार दस, ग्रंथ इग्यारे जान।
डोरो आई मात को, बांधे साधु सुजान।।
भूत प्रेत यक्ष डाकणी, देव पित्र को दोष।
डोरा तणे प्रसाद ते, करे न कबहुं रोस।।
जमते डान ही जाय जिण, कोढ कलंक न थाय।
मिले अपुत्रा पुत्र घणा, अधनी धन ग्रह आय।।

आई माता ने इस बेल को पवित्र डोरा माना है व इसके बांधने वाला आई माता के पंथ "आई पंथ" का अनुयायी होता है।

"बेल के ईग्यारह नियम"

बेटी ने परणावजो, पईसो ले जो मत एक ।
लक्ष्मी थांरे घणी बधेला, विचार राखजो नेक ।
केणों करजो गुरां रो, मारग बताया प्रमाण ।
इतरो ध्यान सदाई राखो, पर नारी मां ज ण ।
बयानी सूं लेजो ज्ञान, करो अतिथि रो सम्मान ।
यातना मत देवो किणी ने देता रेजो दान ।
रक्षा करजो जीवां री, हिंसा सूं रो दूर ।
हरदम ध्यान धरो आई रो, करणा मूठ नित पूर ।
निन्दा किणी धरम री, मत करजो थे दिल माय ।
यदा कदा झूठ मत बोलो, चोरी जारी ने छिटकाय ।
मत छोड़ो धर्म रो मारग, केणों दिवाण रो मान ।
कहे नारायण सुणजो भायों, लेवो गुरों सूं ज्ञान ।।

माधवजी अब आई माता की सेवा करने में लग गये व तन मन से भक्ति में लीन रहने लगे । एक समय वर्षा होने पर आई माता ने माधव से कहा कि वर्षा हो गई है, खेतों में जाकर जवार बो दो। थोड़ी मेरे लिये भी बो देना ताकि मेरे बैल के चारा हो सके । आई माता की आज्ञा पा माधवजी १५-२० किसानों को साथ ले बिलाड़ा के दक्षिण दिशा में जाकर खेत में हल जोत जवार बोई । दोपहर के समय आई माता एक छोटी टोकरी में चार रोटी डाल कर खेत में पहुंचे और सब किसानों से कहा कि आवो सब दोपहरी करलो । सब किसान आई माता के पास आकर बैठ गये । छोटी टोकरी में चार रोटी देख किसानों ने कहा मां आप तो एक की दोपहरी लाई हैं, हम इतनों का पेट कैसे भरेगा । माता

खुश होकर बोली-तुम सब बैठो और खावो। मैं तुम्हारा पेट भरूंगी यह कहकर टोकरी से रोटियां निकाल निकाल कर सबको खिलाती गई। सब किसानों ने भर पेट खाना खाना खाया तो भी टोकरी में चार रोटी बच गई। यह देख सब किसान आई माता के चरणों पड़े।

आई माता बिलाड़ा में आकर एक घास की झूंपड़ी में अपना मन्दिर स्थापित किया। वो झूंपड़ी आज दिन बिलाड़ा बडेर में दर्शनार्थ मौजूद है। संवत १५२५ में नगा के पुत्र बिला हांबड़ की पुत्री शोढी (जो आई माता की सेवा में थी) की अवस्था विवाह योग्य हुई तो आई माता को उसके विवाह की चिन्ता हुई। विवाह हेतु योग्य वर की तलाश की गई। लेकिन शोढी के योग्य वर नहीं मिला। इस पर आई माता ने सोचा कि शोढी का विवाह माधव के साथ कर दिया जाय तो उत्तम रहेगा। यह सोच आई माता ने जाणोंजी से बात को, जाणोंजी ने आई माता की बात सुन निवेदन किया कि माधव को तो मैं आपके सुपुर्द कर चुका हूं। जैसी आपकी इच्छा हो, वैसा ही करें। आई माता ने माधव को बुलाकर शोढी के साथ विवाह करने की बात कही। माधव आई माता की बात सुन थोड़ा हिचकिचाया, इस पर आई माता ने कहा देख माधव या तो विवाह की बात अंगीकार कर, यदि तेरे में वचन लोपने की हिम्मत हों तो मेरा वचन लोप। माधवजी धर्म संकट में पड़े। हाथ जोड़ आई माता से निवेदन किया कि मेरा विवाह पहले रामपुरा में शोढा राजपूत की लड़की के साथ हो चुका है। अब शोढी के साथ कैसे विवाह करूं। शोढी जाति की सीरवी है। सीरवी न मालूम कौन हैं। माधवजी की बात सुन आई माता ने उसे समझाया कि "सीरवी असल में राजपूत हैं। तूं किसी बात की चिन्ता मत कर तथा शोढी के साथ विवाह करले।"

श्री आई माताजी की झोंपड़ी
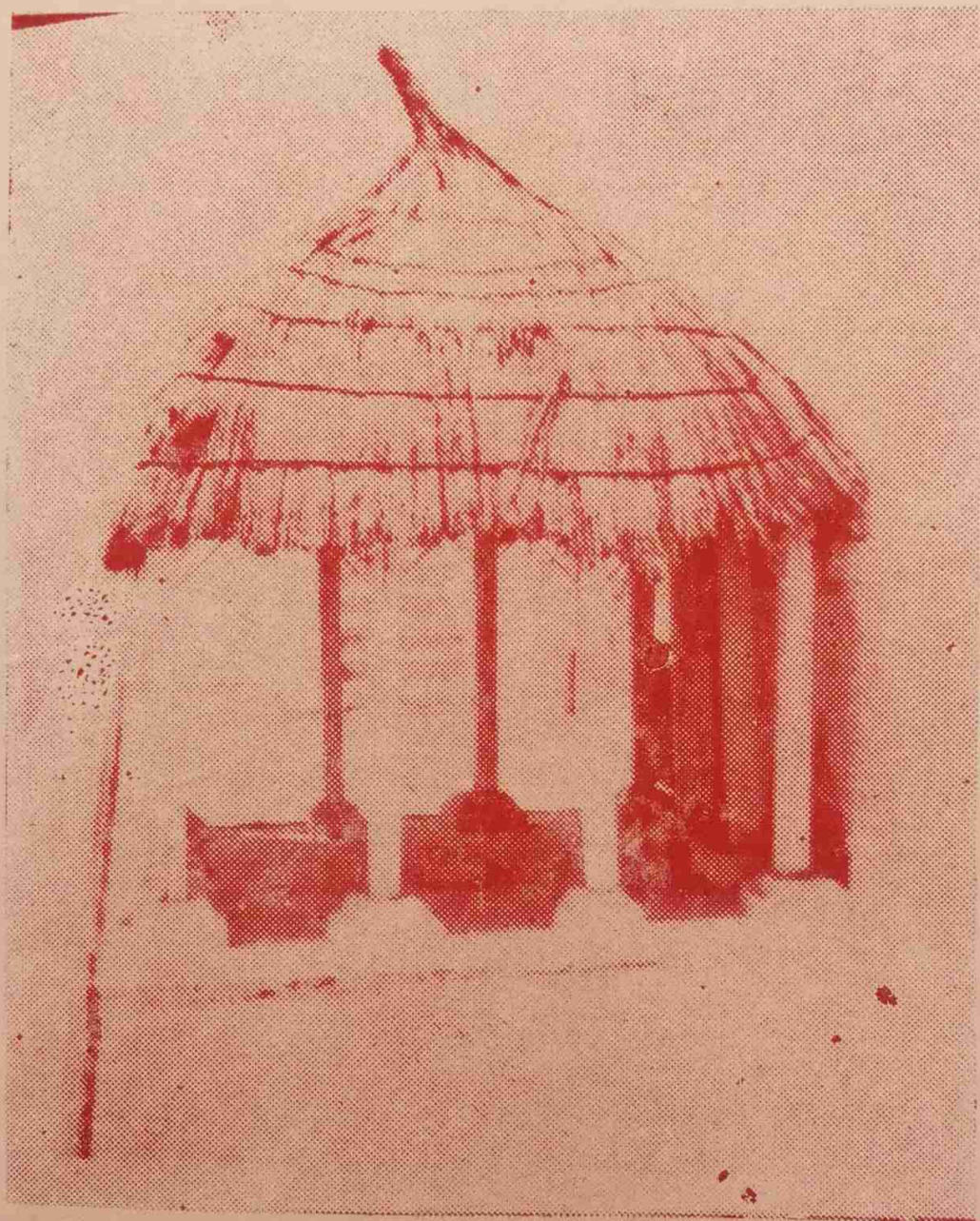
बडेर, बिलाड़ा (राज०)

श्री आई माताजी की भेल (रथ)
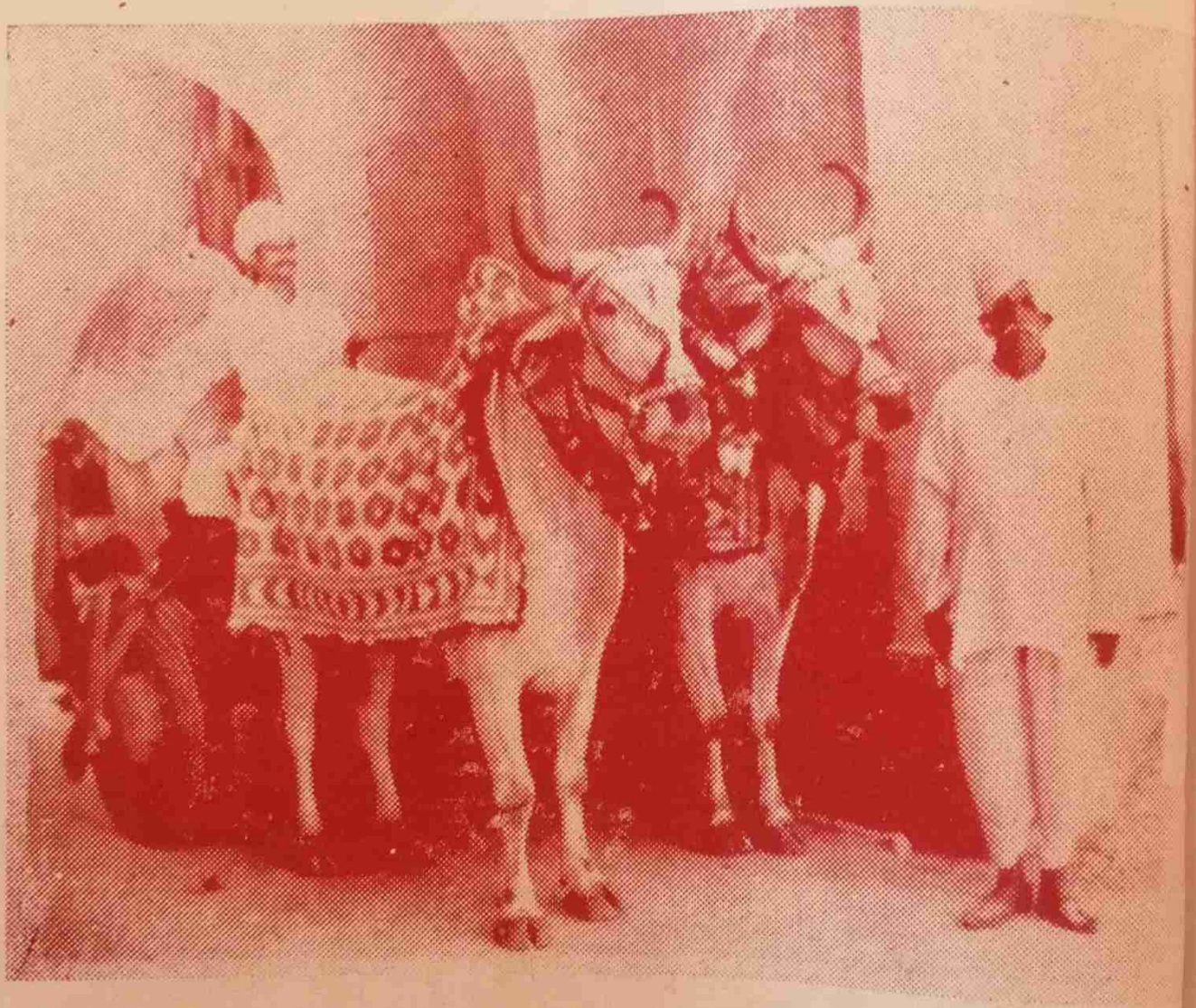
बडेर, बिलाड़ा (राज०)

सीरवियों की उत्पत्ति के बारे में बताया–

कुल उत्पत तोने कहूं, सुन माधव चितधार ।
विप्र आदि च्यारू भ्योवरण, स्वधाता संसार ।।
क्षत्री कुल में प्रगटना, धरा थंभ नर धरि ।
यांमें भेद न जानियै, जुध स्वारथी बडवीर ।।
सोवनगढ़ सिर कोप कियो, अल्लावदी सुरताण ।
रजपूतां सांका किया, विखौ भयो रा जाण ।।
भाज गया केता भिड़े, अमल किये असुराय ।
छोड़ धरा जालोर दिश, मुरधर बसे जु आय ।।
सकटी जोते सांत सौ, सरीता लूणी आय ।
सीर करे हल हासिया, खेती अन निपजाय ।।
वड साखा सोहड़ वडे, शूरवीर दातार ।
सीर कियो तब सीरवी, सऊ दाखे संसार ।।

"दोहा"

असल जात क्षित भुज सदा, मैं समभावें तोहि ।
अन्तर इनसे जिन करो, सगत भगत जे होहि ।।

इसी प्रकार सीरवी जाति की उत्पत्ति के बारे में लिखा गया है–

"सीरवी जाति का इतिहास"

सी– सीर कियो जद सीरवी, सै जाणे संसार ।
र– रवि कुल में है उत्पत्ति, जोधा हा वडवीर ।।
वी– वीर घणांई जुंझीया, कान्हड़ दे रे साथ ।
जा– जालोर छोड़ निकल्या, जीत तुर्कों रे हाथ ।।
ति– तिथ छोड़ी अपने वतन री, वीखो पड़ता ताईं ।
का– कार राखी क्षत्री कुल री, झुकिया नी तुर्कों जाईं ।।

इ- इतरो विखो भुगतता, फिरता जंगलों माय ।
लि- तिणवारे सै सीरकर, खेत जोतिया जाय ।।
हा- हासियो हल हाथ सूं, खेती अन्न निपजाय ।
स- सकटी जोते सांत सो, सरिता लूणी आय ।।

इतनी बातें समझा कर आई माता ने माधवजी से कहा "यदि तूं शोढी के साथ विवाह कर लेगा तो लाखों सीरवी तेरी आज्ञा मानेंगे । सीरवियों का आचरण बहुत पवित्र है । ये राजपूत क्षत्रिय हैं । तूं बिना हिचकिचाहट से इस बात को अंगीकार कर ले । इतना सुन माधवजी ने आई माता की आज्ञा मान कर शोढी के साथ शुभ लग्न में विवाह कर लिया ।

उन्हीं दिनों भारमलजी अपने पिता (जोधाजी) के फूल लेकर गयाजी तीर्थ गये हुवे थे । समय ज्यादा बीतने पर जब भारमलजी वापिस नहीं लौटे तो जाणोंजी ने आई माता से अरदास की कि भारमलजी गयाजी तीर्थ से वापिस नहीं लौटे हैं । क्या कारण है । आप कुछ आज्ञा प्रदान करावें ।

भारमल पिता तण, फूल ले गया सिधायो ।
सुणियों जोधा सुतन, ताम पतशाह रूकायो ।।
आई हुता अरज, एम जाणे गुजराई ।
सुण बात मात सेवक तणी हित करने माता हंसी ।।
भारमल मास एकण मही, अवस कियां घर आवसी ।

आई माता ने जाणोंजी को कहा-तुम चिन्ता मत करो, भारमल एक माह बाद वापिस आ जायेगा । आई माता के वचनों से भारमलजी एक माह बाद गया तीर्थ से वापिस आगये । वापिस आकर सबसे पहले भारमलजी ने आई माता के चरणों में शीश नवाया ।

माता तणों हुकम, घरां भारमल आयो ।
सौह प्रजा राजी हुई, वले मोतियां बधायो ।।
आईजी रे पगां लगो, भारो कर जोड़े ।
अत सेवा आदरी लियो, ब्रिद सु सबद लोड़े ।।
प्रथमाद बीच पूगो प्रचो, थिरजद बडहर थापियो ।
बीलपुर तखत जांण सुतन, इस मधकर सेवग कियो ।।

"दोहा"

जाणा सुत मघराज ने, आई सेवग किद्ध ।।
सगती बिलाड़े सदा, नित लावे नव निद्ध ।।

भारमलजी आई माता के पास आकर अरदास की कि बिलाड़ा अब आज से आपके सुपुर्द करता हूं । इतना कह कर कुछ समय यहां रह कर बडेर का पूरा प्रबन्ध किया फिर आई माता से विदा लेकर जोधपुर गये ।

उन्हीं दिनों मेवाड़ का शासक रांणा कुम्भा था । राणा कुम्भा के दो पुत्र (उदा व रायमल) थे । उनमें से एक बार उदा ने कुम्भा को मार कर मेवाड़ का राज लेना चाहा । रात के समय अपने आठ योद्धाओं के साथ सोये हुवे कुम्भा पर हमला कर दिया, कुम्भा बड़ा वीर था । आपस में लड़ाई हुई । कुम्भा घायल हो गया और उदा को भी घायल कर दिया । पुत्र जान कुम्भा ने उदा को जीवित छोड़ा । कुम्भा का दूसरा पुत्र रायमल निर्दोष था । उसे कुंभा ने कहा तूं मुझे मुंह मत दिखा और मेरे राज्य के बाहर चला जा । रायमल पिता की आज्ञा मानकर मेवाड़ छोड़ कर मारवाड़ में आ गया । रायमल चिन्ता में डूबा घूमता रहा

एक दिन वह सोजत आया । सोजत में लोगों के मुंह से आई माता के चमत्कारों की बातें सुनी । सुनकर तत्काल बिलाड़ा आकर आई माता के चरणों में शीश नवाया । खूब तन मन से

आई माता की भक्ति में लीन हो गया। रायमल की श्रद्धा देख आई माता ने वरदान दिया कि "रायमल जा तुझे मेवाड़ का राज बख्सा। लेकिन पहले तूं एक माह तक मेड़ता जाकर निवास कर। एक माह बाद तुझे मेवाड़ का राज्य मिल जायेगा।

कुंभारे दोय कंवर, राज विलसे राजेस्वर।
जेठो उदो कंवर, बिया रायमल बहादर ।।
एक समय उदल, द्रोह पित हूत उपायो।
धावड़िया ले आठ, अरध निश मारण आयो ।।
पोढियो राण उपर पलंग, उण पर बंध उदे लियो।
जंणा आंठ जमदठ्ठ गहि, कुम्भा ने लोहड़ कियो ।।

आई माता के वचनों से रायमल मेड़ता चला गया और वहां निवास करने लगा।

।। छप्पय ।।

राणा या रायमल, मात मुख हुंता दक्खे।
त्यारीकी तसलीम, वचन वंदियो परक्खे ।।
पाट कठे मूझनू, अरज कुंवर गुदराई।
तो दीधो चितोड़ एम, मुख अक्ख आई ।।

एक माह बीतने पर मेवाड़ के सरदारों ने मेवाड़ की गद्दी पर बैठाने हेतु रायमल को पत्र लिखा।

॥ छप्पय ॥

कागल ले काशीद, जाय मेड़ते सपत्रो ।
धर प्यारी तूं धणी, पिता वे कुष्ठ पोहतो ॥
रायमल ता अस चढे, मात गोडे फिर आयो ।
राज तणों प्रताप, पाट पित हन्दो पायो ॥
हव राण साथ माहरे चलो, इण विध सूं किर्धा अरज ।
फिर मात कहे मल कुंवर नूं, तूं जाय भोगो पित रज ॥
आई रो सुण वचन, कुंवर कुंम्भ गिर सिधायो ।
हरख धमस बहु हुआ, पाट पित हन्दो पायो ॥
आई सूं अरज गांम, दस माहरा लीजे ।
रायमल कहे मात, वास मेवाड़ करीजे ॥

॥ दोहा ॥

पांच सौ बीघा तांबा पतर, डायलाणा मे धरलाई ।
इख शाख शूर चन्द, घात ने रायमल राणो दई ॥

जब रायमल को चितौड़ के सरदारों का पत्र मिला तो तुरन्त मेड़ता से रवाना होकर आई माता के पास आकर शीश नवाया । आई माता से निवेदन किया कि आपकी कृपा से मुझे मेवाड़ का राज प्राप्त हुआ है । आप अब मेरे राज्य से दस गांव स्वीकार कर मेवाड़ में पधार कर विराजें । यह सुन आई माता ने मेवाड़ चलने व दस गांव लेने से इन्कार किया । इस पर भी रायमल ने 500 बीघा जमीन आई माता को ग्राम डायलाणा में भेंट की और साथ में यह प्रतिज्ञा की कि मेरे वंशज जो मेवाड़ की गद्दी पर बैठेगे वो आई माता को 50 बीघा जमीन भेंट करते रहेंगे । इतनी अर्ज कर रायमल आई माता से आज्ञा ले मेवाड़ चला गया ।

॥ छप्पय ॥

होसी आई पाट जको, कमधज अवतारी ।
बीघा धर पचास, राण देसी छत्र धारी ॥
वले वड़ी मोहताद, राण लिख अवचल अप्पे ।
वडहर माता तणा, गांव डायलाणों थप्पे ॥
मोहताद बीघा पचास री, कीधी पिढी व्रत करे ।
धरन दे तको कु पुत्र धर, इम राणा रायमल उच्चरे ॥

डायलाणा ग्राम में देवी ने बड़ वृक्ष प्रगटाया था । उस समय वहां अपना मंदिर कायम किया था । डायलाणा मेवाड़ राज्य में होने के कारण राणा ने वहीं पर आई माता को जमीन भेंट की थी । व हर राणा वहीं पर 50 बीघा जमीन आई माता को भेंट करते रहे थे । जिसका प्रमाण आगे जिस राणा ने जिस दिवान के समय में जमीन भेंट की थी, उनके प्रवानों से प्रमाणित होता है ।

माधवजी रात दिन आई माता की सेवा करते रहते थे । व साथ में आई पंथ का प्रचार कर लाखों मनुष्यों को डोराबंद बनाया था । जिसमें हर जाति के लोग हैं । सीरवी मात्र आई पंथ के अनुयायी बन गये । आई पंथ के डोराबन्द आज समस्त भारतवर्ष में फैले हुवे हैं । एक बार माधवजी ने आई माता से निवेदन किया कि आप मेरे साथ गांव २ घूम कर आई पंथ का प्रचार करे । यह सुन आई माता ने कहा कि मैं वृद्ध हूं, चल फिर नहीं सकती, अतः गांव गांव कैसे फिरूंगी । इस पर माधवजी ने एक रथ बनवाया । उस रथ में आई माता को विराजमान कर खुद उसको हांकने लगे । उस रथ का नाम

भेल रखा गया था। भेल में बिराजमान होकर आई माता धर्म प्रचार हेतु गांव गांव घूमने निकले। सर्वप्रथम बिलाड़ा से रवाना होकर गांव बीलावास पहुंचे। बीलावास के लोगों ने आई माता का खूब स्वागत सत्कार किया। वहां पर लोगों ने आई पंथ को ग्रहण किया। कई लोग डोराबन्द बन गये। बीलावास से विदा होकर आगे आई माता गांव नाडोल पहुंचे। नाडोल के लोगों ने भी आई माता के रथ को बधा कर गांव में लिया। व खूब स्वागत किया। वहां से विदा होकर आगे गांव कोटड़ी पहुंचे। गांव कोटड़ी के लोगों ने आई माता का स्वागत किया, कई लोग डोराबन्द बने। शाम के समय गांव की चौपाल में भजन का कार्यक्रम रखा गया। उसमें एक साधु गुंसाई डूंगरगिरीजी भी आये। डूंगरगिरीजी देवगढ मदारिया से आकर गांव कोटड़ी में रहे थे। अच्छे ज्ञानी व धर्म के जानकार थे। चोपाल पर भजन भाव के दोरान गुंसाई डूंगरगिरीजी ने आई माता के रूप को पहचाना और नतमस्तक हुवे। डूंगरगिरीजी के पास चार चेले थे। आई माता ने डूंगरगिरीजी से कहा कि आपके पास चार चेले हैं। उनमें से दो चेले मुझे दे दो। मेरी भेल के साथ रहने व बिलाड़ा बडेर में मेरे मंदिर की देख रेख करने चाहिये। आई माता की बात सुन गुसांईजी ने अपने दो शिष्य रूपगिरी व केशरगिरी को आई माता के सुपुर्द किया। उन दोनों शिष्यों को साथ लेकर आई माता ने गांव कोटड़ी से प्रस्थान किया। वहां से आगे मेवाड़, मारवाड़ में घूमते हुवे धर्म प्रचार करते हुवे पुनः बिलाड़ा पधारे। बिलाड़ा में लोगों ने बड़े धूम-धाम से आई माता को बधावा कर बडेर में लाये। इसी प्रकार रथ (भेल) गांव २ घूम कर पुनः वर्ष में चार बोजों को बिलाड़ा आया करता था। तब उन्हें बधावा कर लाया

जाता था। उन्हीं चार बीजों को आज भी आई माता के रथ को बधाया जाता है। वे चार बीजें निम्न है।

(1) चेत्र सुद बीज (2) वेसाख सुद बीज
(3) भादरवा सुद बीज (4) माघ सुद बीज

चारों बीजों का महत्व यह है–

(1) चेत्र सुद बीज—संवत 1561 के चेत्र सुद बीज शनिवार को आई माता अलोप हुई थी।

(2) वेशाख सुद बीज—इस बीज को हर वर्ष किसान नये साल की खेती का शुभारम्भ कर हल की पूजा करते हैं।

(3) भादरवा सुद बीज—संवत् 1521 के भादरवा सुद बीज शनिवार को आई माता बिलाड़ा पधारे थे।

(4) माघ सुद बीज—संवत् 1557 के माघ सुद बीज शनिवार को आई माता ने अपने हाथ से गोयन्दजी के तिलक कर दिवान की गद्दी पर बैठाया था।

ये चार बीजें आई पंथ में धार्मिक पर्व माने जाते हैं। इन्हीं चारों बीजों को आई माता के मंदिर में आई माता की गुप्त पूजा दिवान साहब के हाथ से होती है। व भादरवा सुद बीज को हर वर्ष अखंड ज्योती बदली जाती है।

आई माता डूंगरगिरीजी के चेलों को यहां लाकर अपने मंदिर की देखरेख का कार्य सौंपा व गांव २ भेल के साथ भेजते रहे। उन्हीं चेलों ने आगे अपने शिष्य बनाये जिससे बिलाड़ा

श्री आई माता की बीज की पूजा के समय
पोशाक पहने हुए
दिवान श्री हरीसिंहजी

बडेर में बाबा मंडली बनी। ये डांगरिया बाबा कहलाते हैं। ये बाबा लोग आज भी आई माता की भेल के साथ गांव 2 घूमते हैं। और आई पंथ के अनुयाईयों को बेल (डोरा) देते है। उसके बदले हर परिवार से पहले डैड आना व एक सेर धान लेते थे। लेकिन बदलते समयानुसार आजकल हर परिवार से एक रुपया व एक किलो धान लेते हैं। उन्हीं में से एक बाबा बडेर में आई माता की पूजा करता है। उनमें से एक जो सुयोग्य हो उसे जती बनाया जाता है। जिसकी देख रेख में भेल व मंदिर की व्यवस्था होती है। बाबा सीरवी जाति के ही होते हैं। इन्हें आई पंथी अपना गुरु मानते है। जब किसी दम्पति के संतान नहीं होती है तो वे आई माता से अरदास करते हैं कि यदि मेरे संतान होगी तो पुत्र आपकी सेवा में अर्पित कर दूंगा। आई माता की कृपा से पुत्र उत्पन्न होने पर उसे यहां लाकर बाबा बना दिया जाता है। यदि किसी के अपंग सन्तान हो तो भी आई माता के मन्दिर में सोंप देते हैं। आई माता की कृपा से वो अपंग पूर्ण स्वस्थ हो जाता है। आज भी ऐसे अपंग जो आई माता की कृपा से स्वस्थ हुवे हैं यहां आई माता के मंदिर में मौजूद है। बाबा लोग आजीवन ब्रह्मचर्य का पालन करते हैं। ये सादविक प्रवृति के होते हैं। सब कुछ आई माता का मानते हैं। इसका एक उदाहरण है जब कोई मनुष्य या औरत इन बाबा लोगों को नमस्कार करते हैं तब कहते हैं बाबजी पगे लागूं। उस पर बाबा लोग आशीर्वाद खुद नहीं देते हैं। और कहते हैं। "आई जी रे" याने आई माता के पांव लगो वो आशीर्वाद देंगे।

आई माता ने आज से 500 वर्ष पहले अपने स्थान बडेर बिलाड़ा में अनाथ आश्रम, विद्यवा आश्रम, गौआश्रम आदि

स्थापित कर दिये थे। जिसमें अनाथ बालक रहते थे व विधवा औरतें यहां आकर रहती थी। सीरवियों में पुर्नविवाह की परम्परा रखी हुई थी। जिससे यहां आने पर विधवा का पुर्नविवाह किया जाता था। लूली लंगड़ी गायों को यहां रखा जाता था। तथा कोई भी आई पंथी डोराबंद आई माता के दर्शनार्थ आने पर उसके ठहरने व खाने पीने की निशुल्क व्यवस्था होती थी जो आज दिन भी होती है। यहां ठहरने व खाने पीने की पूर्ण निशुल्क व्यवस्था है।

माधवजी आई माता की भक्ति मे लीन रहते और आई पंथ का प्रचार करते हैं। आई माता की कृपा से संवत् 1530 में पुत्र उत्पन्न हुआ। जिसका नाम गोयन्द रखा गया। गोयन्द बचपन से हो आई माता का भक्त था। माधवजो पर आई माता की अटूट कृपा थी। आई माता ने माधव को ब्रह्मज्ञान सुना कर वरदान दिया था कि तेरे वंश में एक से एक महान होगा। तेरे अन्न धन की कोई कमी नहीं रहेगी।

।। छप्पय ।।

माधो सेवा करे सदा, मांत री नरेसर।
आसत दी आपरी, शीश माता दीधा कर।।
कर डोरो बांधियों, सहु ब्रह्म ज्ञान सुणायो।
बांह हूत भालने, आप गादी बैठायो।।
हव वंश ताहरो विशतरो, कमल सदा चढसी कला।
ताहरे पूठ होसी तिके, एक एक सूं आगला।।
माधा ने कर मया, एम मुक्ख अक्खे आई।
अन्न धन्न आसत, कमी इण घर नह कोई।।
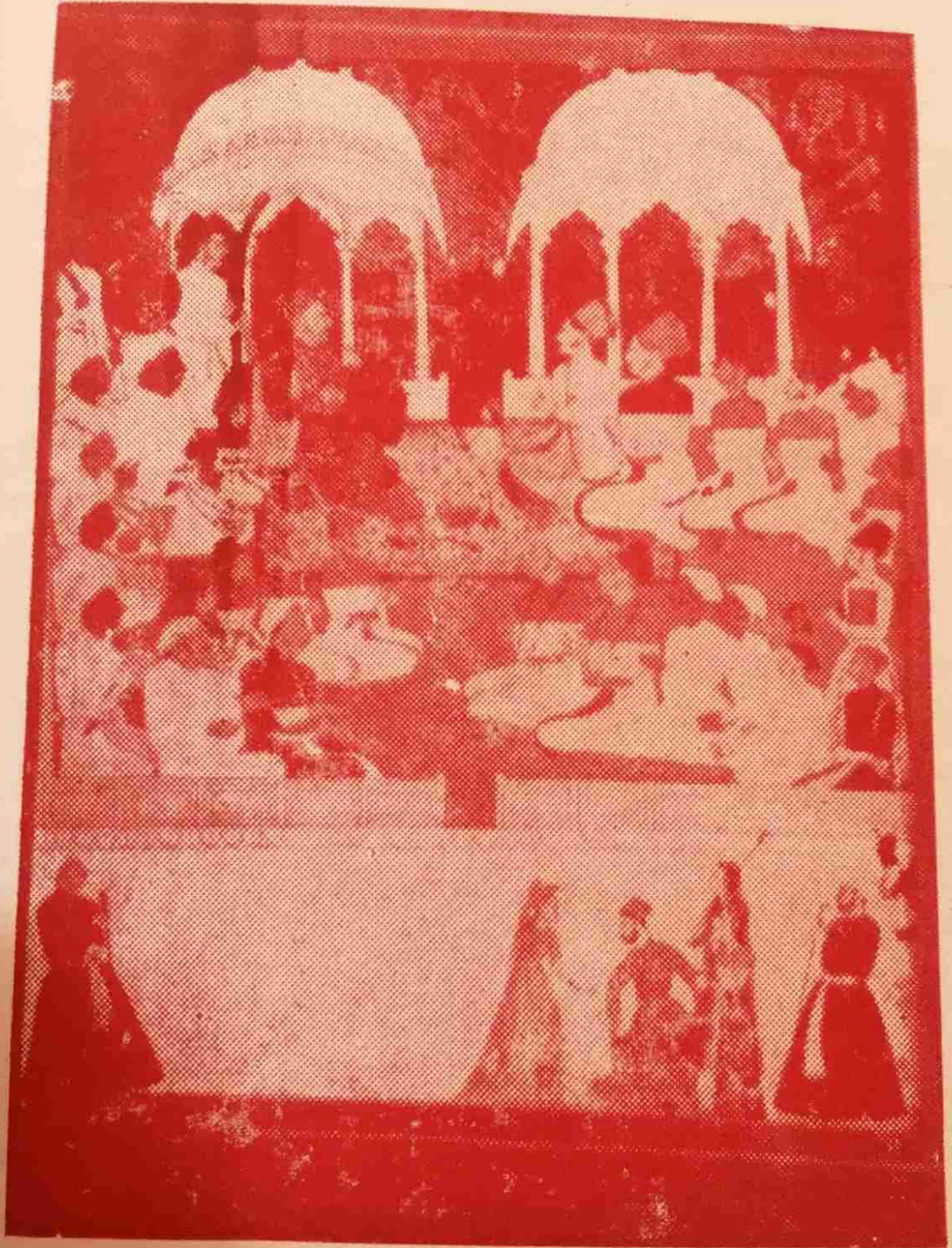
दिवान श्री गोयन्ददासजी

सेवा करसी सभ्य तिको, वैकुण्ठ होवे सी ।
पंथ पिसतर सी प्रथी, मोटा राव राण मनेसी ॥
समरसो तठे हाजर सदा, तीजी ताली आवसूं ।
पाटवी परम आंहसी हुसी, वले सेवा करसी बसूं ॥

इतना वचन आई माता ने माधवजी को दिया था । माधवजी आई माता की भक्ति करते हुवे 73 वर्ष की आयु में संवत् 1557 में स्वर्ग को प्रस्थान किया । उनके पीछे उनकी राणी शोढी सती हुई थी । आपके एक ही पुत्र गोयन्द था ।

"गोयन्ददासजी"

जन्म—संवत्—1530 ब्याह—संवत्—1542
पाट—संवत् 1557 माघ सुद 1 स्वर्ग—संवत् 1612 पोह सुद 2

माधवजो के स्वर्गवास के समय गोयन्दजी की आयु 27 वर्ष की थी । गोयन्दजी आई माता की सेवा करने लगे । आई माता का गोयन्दजी पर बहुत स्नेह था । आई माता ने अपने हाथ से गोयन्दजी को संवत् 1557 के माघ सुद [बीज शनिवार को कुंकम का तिलक कर दिवान की पदवी देकर गद्दी पर बैठाया था ।

॥ दोहा ॥

आई एम उचारवे, गोविन्द सुण घणा जाण ।
म्हारे तूं गादी मूदे, देवी रो दीवाण ॥

आई माता अपने पंथ के डोरा बंद बान्डेरूओं को इकट्ठा कर सबको साक्षी बना अपने मन्दिर में ज्योति को सामने रख

गोयन्द को दिवान की गद्दी पर बैठाया था। आप गोविन्दजी की पूठ पिछे खडे होकर सब डोरा बन्दों से कहा कि गोविन्द आज से मेरा दिवान है। अब इन्हें दिवान के नाम से पुकारे। तथा मेरी ज्योति जो इस गद्दी पर बैठे दिवान होगें उनमें विद्यमान समझना। दिवान को मेरा ही रूप समझना। तभी से आज तक आई पंथी दिवान को पूज्य मान कर अपना धर्म गुरु मानते हैं। साथ आई माता ने समस्त डोरा बन्दों को अपने पंथ के नियम बताये और कहा कि जो इन नियमों का पालन करेगा वो मेरा भक्त होगा।

आई माता द्वारा बताये गये आई पंथ के नियम

1. किसी धर्म की निन्दा मत करना।
2. किसी की प्रशंसा का छेदन मत करना।
3. चोरी जारी जीव हिंसा मत करना।
4. दूसरी आतमा को कष्ट मत पहुंचाना।
5. शराब, मांस का सेवन मत करना।
6. बीड़ी, जर्दा, भांग, गांजा, अफीम से सदा दूर रहना।
7. माता पिता की सेवा करना।
8. पैसा लेकर बेटी की शादी मत करना।
9. अतिथी, अभ्यागत, साधु सन्यासी की सेवा करना।
10. वैद शास्त्र की निन्दा मत करना, निन्दा करने वालों के पास मत बैठना।
11. झूठ वचन कभी मत बोलना।
12. पराई स्त्री को मां, बहन के समान मानना।
13. पाखण्ड मत करना, पाखन्डियों से सदा दूर रहना।
14. किसी से रुपयों का ब्याज मत लेना।

15. सतगुरु–धर्म के जानकार को करना ।
16. सुबह उठकर धरती माता को प्रणाम करना ।
17. हमेशा स्नान करके ध्यान पाठ करना ।
18. परोपकार करना व सदाचार का पालन करना ।
19. गुरु के बताये वचनों का जाप करना ।
20. सुबह शाम धूप कर ध्यान करना ।
21. गद्दी पर बैठे दिवान को मेरा रूप जानना ।
22. धर्म का मार्ग मत छोडना ।
23. शुद्ध भोजन बनाकर मेरा स्मरण कर प्रथम भोग लगाकर भोजन ग्रहण करना ।
24. हर माह की शुक्ल पक्ष की बीज को काम की छुट्टी रखना व दूध दही संत साधुओं को वरताना ।
25. शुक्ल बीज को मेरा भोग लगाना, कंणमूठ पूरना व मेरा वृत रखना । बीज को पर्व मानना ।

ये आई पंथ के नियम हैं । अतः इन नियमों का पालन करना ।

इतनी बातें बताकर आई माता ने सबको आशीर्वाद दिया । इसी प्रकार समय बीतता रहा । गोयन्दजी आई माता की सेवा करते रहे । संवत् १५६१ के चेत सुद बीज शनिवार को आई माता ने अपने बांडेरूओं से कहा कि मैं अब सात दिन गुप्त तपस्या करना चाहती हूं । अतः सात दिन तक मेरे मंदिर के दरवाजे मत खोलना । यह सुन सब भक्तों ने निवेदन किया कि हम आपके दर्शन किये वगेर अन्न जल ग्रहण नहीं करते हैं । भला सात दिन कैसे निकलेंगे । इस पर आई माता ने सबको समझाया कि आप लोग गोयन्द को मेरा रूप समझकर इसके दर्शन करके भोजन करते रहना । यदि सात दिन के पहले दरवाजा खोल

दिया तो आप लोग पछतायेंगे। नहीं तो मैं सात दिनों के बाद
तुम्हें गादो बैठी मिलूंगी। इतना कह कर आई माता ने अपने
मंदिर के दरवाजे बन्द कर दिये। तीन चार दिनों के बाद
लोगों ने कहा कि आई माता ने समाधी ले ली है। अपनों से
नाराज है। ऐसी बातें सुन श्रद्धालु भक्तों के मन में शंका उत्पन्न
हुई। वे गोयन्दजी को दरवाजा खोलने के लिए कहने लगे। आखिर
अधिक हठ देख पांचवे दिन मंदिर के दरवाजे खोल दिये गये।
सब भक्त अन्दर प्रविष्ट हुवे। उसी समय क्या देखते हैं कि आकाश
की ओर एक ज्योति जा रही है। आई माता कहीं नजर नहीं
आई, जिस गद्दी पर आई माता विराजमान थी, उस पर आई माता
का भगवा चोला, मोजड़ी, ग्रन्थ व माला ही दृष्टिगोचर हुवे। आई
माता अलोप हो चुकी थी। यह देख सबको बड़ा भारी दुख हुआ और
खूब पछताये। ऐसा उदाहरण विश्व इतिहास में कहीं नहीं मिलेगा
कि कोई देवी देवता अलोप हुवे हों। केवल आई माता ही एक
ऐसी देवी ने अवतार लिया था। जो कि अलोप हुई थी।

आई माता के अलोप होने पर जो पीछे उनकी गद्दी पर
पांच नारियल, मोजड़ी, चोला, माला, ग्रंथ मिले थे वे आज दिन
५०० वर्ष पुराने (मानों आज के ही हों) बिलाड़ा बडेर में आई
माता के मंदिर में विद्यमान है, जिनकी पूजा होती हैं। तभी से
आज तक अखंड ज्योति जलती है जिसकी लो पर केशर पड़ता है।
इसी अखंड जोत को साल में एक बार भादवा सुद बीज (जिस
दिन आई माता बिलाड़ा पधारे थे)को बदला जाता है। आई पंथ
के डोरा बन्दों का सबसे बड़ा पर्व माना जाता है। इसके दो तीन
दिन पहले आई पंथी अपनी गायों भेसों का सारा दूध लाकर यहां
पर दही जमाते है। जो करीब 15-20 मन हो जाता हैं। उस

सारे दही को भादवा सुद बीज को सुबह जल्दी एक बड़ी पत्थर की बनी गोली में डालकर चार आदमी बिलोते है। उससे जो घी निकलता है, उसे अखण्ड ज्योति में डाला जाता है। दिन के 11 बजे उस बिलोनो की बडकरसा सपत्नि पूजा करते हैं। जतीजी पूजा करवाते हैं, फिर वो घी नई ज्योति में डालकर बड-करसा पत्नि सहित बन्द परदे में ले जाकर मंदिर में दिवान साहब के हाथ से पहले वाली ज्योति हटाकर नई लाई हुई ज्योति स्थापित करते हैं। बाद में पुजारी, जतीजी व दिवान साहब मंदिर के द्वार बन्द कर पूजा करते हैं। यह पूजा गुप्त होती है। वर्ष का सबसे बड़ा पर्व होने से दूर दूर से गुजरात, मध्यप्रदेश, मेवाड़, पश्चिमी राजस्थान से आई पंथी आते हैं। दही से बनी छाछ को आई माता का प्रसाद मानकर भक्त लोग बड़े प्रेम से ग्रहण करते हैं। यहां तक कि कई भक्त इस छाछ को शिशियों में भरकर डाक द्वारा अपने सम्बन्धियों को भेजते हैं। उस दिन आई माता के मंदिर में मेला रहता है। हर आई पंथी शुद्ध भोजन का भोग लाते हैं और साथ में कलश में कणमूंठ पूरते हैं। दिन में आई माता की आसीस होती हैं। हांबड़ जाति के कोटवाल द्वारा आई माता के घी गुड़ का बना चूरमा का भोग लगाकर सब भक्तों को बांटते है। खूब भजन भाव होते हैं। शाम के समय गाजों बाजों से औरतें गीत गाती हुई एक औरत पूजा की थाली व एक औरत चांदी का बड़ा कलश लेकर आई माता की भेल को गांव के बाहर से बधा कर लाते हैं जो वर्ष में चार बीजोंको बधाई जाती है। रात्रि में जागरण होता है।

आई माता की आज्ञा से दिवान को आई पंथी पूज्य मानते है। इसका उदाहरण है कि डोरा बन्द दिवान की पूजा व आदर सत्कार किस प्रकार करते हैं।

जब किसी आई पंथी के घर में शादी का उत्सव हो। उस समय वह दिवान साहब को अपने घर आमंत्रित करते हैं। घर का मालिक अपने कुटुम्ब के भाईयों को व गांव के दो चार पंचों कोटवाल को साथ लेकर दिवान साहब को आमंत्रित करने जाते है, साथ में आई माता को भी आमंत्रित करते हैं। जब आमंत्रण स्वीकार हो जाता है तो घर का मालिक दिवान साहब को 11 रु. व नारियल भेंट देता हैं व आई माता के रथ (भेल) के नारियल भेंट रखता है। इस पर निमन्त्रण स्वीकार माना जाता है।

निश्चित तिथी को दिवान साहब व भेल उसके घर जाते हैं। उस समय सब सगे सम्बन्धी इकट्ठे होकर गाजों बाजों से पहले आई माता के रथ बधा कर अपने घर ले जाते हैं। उसके बाद दिवान साहब को भी बड़े उत्साह से गाजों बाजों से बधा कर अपने घर ले जाते हैं। उस समय दिवान साहब घोड़े पर बैठ कर पुराने रीति रिवाज से अचकन व साफा बांध कर सिरपेच लगा कर हाथ में तलवार रखते हैं। घोड़े पर बैठे हुए को तिलक कर आरती उतारी जाती है। जब घर के आंगन में पहुंचते हैं तो घोड़े से नीचे उतरते हैं और पैदल चलते हैं। उस समय आगे पगमंडणों (लाल व सफेद लम्बा कपड़ा) बिछाते हैं, दिवान साहब पग मंडणों पर चल कर घर में जाते हैं। जहाँ पर पूर्ण खाद्य सामग्री रखी रहती है वहां जाकर उस सामग्री की पूजा करते हैं। व अपने हाथ से सारे देवताओं को भोग थालियों में डालते है। फिर देवताओं को भोग लगा कर वहां से पंडाल में आकर बैठते हैं। जहां पर सभी सगे सम्बन्धी इकट्ठे होते हैं। उधर भोजन की पंगत शुरू हो जाती है, जितने सबके साथ बैठ कर धार्मिक व अन्य आपसी बातचीत करते हैं। शाम के समय

दिवान साहब की पंगत होती है । जिसमें बीच में पाट पर दिवान साहब विराजते हैं और सामने पंक्ति से सारे पंच, घर के भाई बन्ध बैठकर एक साथ भोजन करते हैं । भोजन करने के बाद घर का मालिक अपनी हेंसियत के अनुसार दिवान साहब के नजराना करता है । तथा उसके भाई बन्ध भी नजराना करते है। फिरदिवान साहब नजराने के अनुसार घर के मालिक को सोने का कंठा या सोने की माठियां (हाथ के कड़े) बख्शीस करते हैं व साफा बंधाते हैं । भाईयों को पागें बंधाते हैं । वो आदमी उस कंठे या माठियों को समाज में बेरोकटोक पहन कर फिर सकता है । इस प्रकार के आमन्त्रण को भल देना कहते हैं । इससे यह अहसास होता है कि डोराबंद दिवान साहब को कितना पुज्य मानते हैं ।

दिवान गोयन्ददासजी ने आई पंथ का बहुत प्रचार किया था । लाखों लोगों को डोरा बन्द बनाया था । ये बड़े दानी व उदार प्रकृति के थे । जब 1582 में भयंकर अकाल पड़ा था । उस समय आपने धान से मनुष्यों की व चारे से पशुओं की बहुत सहायता की थी । इस सेवा से इन्हें पृथ्वी साधार की उपाधि मिली थी । गोयन्ददासजी का उद्देश्य मनुष्य मात्र की सेवा करना था । इसी उद्देश्य से देशाटन किया करते थे । गांव गांव घूमते, आई पंथ का प्रचार करते व आई पंथियों का दुख सुख सुनते थे । लोग जो कि बिलाड़ा पहुंच नहीं सकते थे, उन्हें अपने गांव में ही दिवान साहब के दर्शन हो जाते थे ।

एक बार आप देशाटन में सिंध मुल्तान की तरफ पधारे उन्हीं दिनों दिल्ली का शासक बादशाह हुमायूं था । हुमायू

चनार के बादशाह से शिकस्त खाकर दुख का मारा इधर उधर घूमता था। उन्हीं दुख के दिनों में हुमायूं की मुलाकात दिवान गोयन्ददासजी से हुई। आपस में दोनों अच्छे परिचित हुवे। गोयन्दजी ने हुमायूं की बहुत सहायता की। तथा उसका साहस बंधाया। व वरदान दिया कि तूं हिम्मत रख, तुझे पुनः दिल्लो का राज्य प्राप्त होगा। तथा एक भाग्यशाली पुत्र उत्पन्न होगा। जो पूरे भारत में अपना नाम कमायेगा। दिवान साहब के वरदान से संवत् 1599 के काती शुक्ला 6 को उमरकोट में हुमायूं के पुत्र हुआ। जिसका नाम अकबर रखा गया। थोड़े समय बाद हुमायूं को पुनः दिल्ली का राज्य प्राप्त हो गया। राज्य प्राप्त होने पर हुमायूं दिवान साहब को भूला नहीं था। अपने पुत्र अकबर को बाल्यकाल में ही बिलाड़ा आई माता व दिवान गोयन्दजी से परिचित करा दिया था। अकबर बचपन से ही दिवान गोयन्दजी का आदर करता था। थोड़े समय बाद हुमायूं की मृत्यु हो गई और अकबर दिल्ली की गद्दी पर बैठा तो सर्व-प्रथम दिवान गोयन्दजी को याद किया। गोयन्दजी उस समय वृद्ध थे व अस्वस्थ भी रहते थे। तो भी अकबर से मिलने दिल्ली गये। दिल्लो पहुंचते ही अकबर ने गोयन्दजी को बुला दिवाने खास में अपने सामने कुर्सी पर बैठाया। और खूब आदर सत्कार किया। इस पर दिवान गोयन्दजी ने कहा कि तेरी बादशाहत ऐसी जमेगी कि न भूतोनः न भविष्यतिः। इस वचन से अकबर बहुत खुश हुवा और अपने व अपने पिता के दुख के दिनों की सहायता का स्मरण हुआ। अकबर ने गोयन्दजी को दिवान की पदवी दी। तथा मोतियों की कंठी 2 सोने के लंगर 3 दुशाला 4 पुणाचा 5 और जनाना मरदाना सिरोपाव, हाथी एक भूरो मंगल गज, घोड़ो एक पंचकल्याण, नगारा निशान, आवड़ी

बाजा, छड़ी किरणियो पालखी व साथ में राजाओं का लवाजमा आदि बख्शे। साथ ही यह आज्ञा प्रदान करवादी कि दिवान का नगारा निशान पूरे भारत में बिना किसी रोक टोक के बजेगा व पांव में सोने का लंगर पहन कर हाथी की सवारी से पूरे भारत में घूम सकते हैं। गुरां भुवनकिर्तीजी को बुला कर सारी कुरब कायदे वंशावली में लिखवाये। तथा दिवान साहब को परवाना लिख कर दिया। उस समय तो गोयन्ददासजी ने सब अंगीकार कर लिया लेकिन विदा होते समय निवेदन किया कि दिवान का पद तो मुझे पहले ही आई माता के हाथ से प्राप्त हो चुका है। अकबर बहुत बुद्धिमान था। इस गूढ आशय को समझकर कहा कि दिवान का पद मेरा और आई माता दोनों का ही रहेगा। इसके अलावा चौधरी का पद जो सर्वोत्तम है वो मैं तुम्हें देता हूं। चौधरी का पद उस मनुष्य को मिलता है जो देश की दशा से पूर्ण परिचित हों। शाम धर्मी व प्रतिष्ठित हो। तथा राज कार्य में आला खानदान को सलाह देता रहे। उसे ही यह चौधरी का पद मिलता है। वो पद आपको दिया जाता है। इतने मान प्राप्त कर पुनः बिलाड़े पधारे। बिलाड़ा पहुंचने के कुछ समय बाद बीमार ज्यादा हो गये।

॥ छप्पय ॥

आई माता इम उचरे, गोयंद सुण घण जांण।
म्हारे थूं गादी मूंदे, देवी रो दिवाण॥
थिर बिलाड़े थापियो, भुपत गोयंद बरवाण।
आई मात पद आपियो, दाखे जगत दिवाण॥

पनरे सौ सतावने, माह सुद बीज सनीह ।
शुभ दिन बड़ा तिवांर को, मां ने सिरोमनीह ।।
आई मात मुख से अखे, तीखी दीवस तिवार ।
माह सुद बीज सनीह की, निज माने नरनार ।।
सोले सो इग्यारवे, पो सुद बीज प्रमांण ।
अकबर सा पदवी दई, गोयंद देश दिवाण ।।
जद गोयंद कीधी अरज, अकबर सु ं सुण बात ।
पदवी देश दिवाण री, बगसी आई मात ।।
खुश होयर अकबर कह्यो, देश दिवांण सिरेह ।
पद चौधर को पाय के, गोयंद आयो धरेह ।।
दोनूं पद अकबर दिया, चौधर वो दिवाण ।
बीलाड़े राजस करो, सुण गोयंद सुख जांण ।।

गोयन्ददासजी का रोग अधिक बढ गया था । उसी रोग से संवत् 1612 के पोह सुद 6 सोमवार को आपका देहान्त हो गया । उनके पीछे राणी हुल्लाणी चंपाकंवर सती हुई थी । दिवान गोयन्दजी के देहान्त की खबर जब अकबर बादशाह को मिली तो उसने बहुत रंज किया था । गोयन्दजी के एक ही पुत्र थे–लखधीरजी । लखधीरजी दिल के भोले थे । अतः गोयन्दजी के समय में ही लखधीरजी के करमसिहजी पैदा हो गये थे । लखधीरजी भोले भाले होने के कारण इनके पुत्र करमसिहजी को दिवान की गद्दी पर बैठाया गया । लखधीरजी के चार पुत्र थे (1) पंचाणसिहजी, (2) करमसिहजी (3) रतनसिहजी (4) मालसिहजी । इन चारों में करमसिहजी बड़े थे ।

दिवान श्री करमसिंहजी

"दिवान करमसिंहजी"

जन्म—संवत् १५९२

पाट—संवत् १६१२ चेत वद १४

विवाह—संवत् १६१३ काती वद ७

स्वर्गवास—संवत १६३७ आषाढ सुद ११ धांगड़वास

जब करमसिंहजी दिवान की गद्दी पर बैठे, उस समय जोधपुर के महाराजा मालदेवजी थे। राव मालदेवजी दिवान साहब से बहुत खुश थे। करमसिंहजी भी महाराजा की आज्ञा माना करते थे। दिवान करमसिंहजी आई माता के अटूट भक्त तथा सादविक प्रवृति के थे। इनका वैभव बहुत फैला हुआ था। लाखों डोरा बन्द आपकी बात मानते थे।

जोधपुर महाराजा राव मालदेवजी ने दिवान करमसिंहजी की प्रशंसा इन शब्दों में की थी।

धणी माल अंज से धरा, इण विध कहे उच्चार।
हूं छत्रपति ओ हलपति, की जोड़ी करतार॥
राखूं पुत्र समोवड़ी, चढ़ते दिन यह वार।
करसा जिणनुं सम्यजे, ज्यों तूठे करतार॥
जोधाणे राव मल, करमट बिलाड़े कमध।
दोनूं वड़ राजस दिये, सुरतांण उरसाल॥

कुछ समय बाद एक दिन राव मालदेवजी ने अपने पुत्र चन्द्रसेन की योग्यता देख अपने उमरावों की सलाह से राजकाज सोंप दिया। इस पर उनके भाई रामसिंहजी नाराज हो गये और गुस्से

में आकर दिल्ली अकबर बादशाह के पास जाकर सारा वृतान्त कह सुनाया । साथ में यह भी कहा कि आपकी आज्ञा के बिना चन्द्रसेन को राज काज सोंप दिया है । इतना सुनते ही अकबर आग बबूला हुआ और अपनें सेनापति को आज्ञा दी ।

आखे नाम अल्लाह, दाढी कर घाते दहूं ।।
हसन कुली हत्स कारियो, सिर चन्द अकबर शाह ।।

हसन कुली को सेना नायक बनाकर, चतुरंगी फोज के साथ जोधपुर पर धावा बोलने की आज्ञा प्रदान की । हसन कुली फौज लेकर नागोर होता हुआ जोधपुर पहुंचा । चन्द्रसेनजी की फोज भी तैयार थी । आपस में घमासान युद्ध हुआ । जीत की सभावना न देख चन्द्रसेनजी जोधपुर छोड़कर सिवाना चले गये । जोधपुर पर तुर्कों का कब्जा हो गया । सिवाना से चन्द्रसेनजी ने दिवान करमसिंहजी को पत्र लिखा ।

धरा हुवे धमचक्क, सहू सांकिया नरेसर ।
लिख कागद चंदसेरण, ताय मुके बीलहपुर ।।
कमधज्ज करमेत नूं, इसो राव चन्द कहायो ।
हवे घर सूनी करो, असुर खड़ उपर आयो ।।

"दोहा"

तियावार हुकम पर मानकर, कागल शीश चढावियो ।
इम विखो करण मुरधर अभंग, कमसी छोडाणा कियो ।

आई माता के डोरा बन्द अपने धर्म गुरु का इतना कहना मानते थे कि जब कभी किसी कारण से गांव का जागीरदार अन्याय करता तो तमाम कास्तकार गांव छोड़ देते थे । जिसे छोडाणा कहते हैं । फिर वह जागीरदार या ठाकुर दिवान साहब से सुलह कर वापिस कास्तकारों को बसाते थे । इसी

के कहने पर भी गांव छोड देते थे। जब चन्द्रसेनजी हार गये और सिवाना जाकर कागद लिखा कि मारवाड़ पर तुर्कों का शासन हो गया है। अतः आप मारवाड़ को कास्तकारों से खाली कर दो। दिवान करमसिंहजी ने पत्र पढ़कर पूरे मारवाड़ के कास्तकारों से कहा कि मारवाड़ खाली कर दो, जब तक यहां तुर्क रहें, जब तक मारवाड़ में पैर मत रखना। कास्तकार दिवान साहब की आज्ञा मान मारवाड़ छोड मेवाड़ की ओर चले गये।

आपाणे थह कमां, आय गाजियो उतल ।
त्यारा चंद सेरा नूं, लिखे मोकलिया कागल ।।
सिर माहरे तूं सांम, धणी तूं चन्द मुरधर ।
यह बीजो तो विनां, शीश नह धरू अव्वर ।।
ताहरो हुकम लोपू नहीं, कहे चंद सुज हुं करू ।
तो विना चंद राव मालतणा, धणी अब्बर सिर नह धरू ।।
बीलाड़े विरदेत आप, बैठो अवतारी ।
सैह मने हुय खुसी, सुख भोगे धर सारी ।।
मास आठ दस हुआ, जेम धरती सुख जेते ।
करण विखा कारणे, चंद फिर आयो तेते ।।
कमांनू इसो कहवाड़ियो, धीग श्याम ध्रम सिरधरो ।
असुराण जेम जावे अलग, कहियो घर उजड़ करो ।।

जब करमसिंहजी मारवाड़ छोड कर सब कास्तकारों के साथ मेवाड़ की ओर जा रहे थे, उस समय हसन कुली का डेरा सोजत में था। केशवदास नामक एक व्यक्ति ने हसन कुली से जाकर कहा कि मारवाड़ सिरवियों से खाली हो गया है और सब दिवान करमसिंहजी के साथ गोढवाड़ की ओर जा रहे हैं। आज उनका डेरा गांव धांगड़वास में है। इतना सुनते ही हसन

कुली दिवान साहब के पास धांगड़वास पहुँचा और कहने लगा कि मारवाड़ को खाली मत करो। मैं बादशाह से तुम्हें जागीरी दिलवा दूंगा। तुम मान कर वापस चले जावो। यह सुन करम सिंहजी ने कहा हमारे मालिक तो चन्द्रसेनजी है। जैसी वे आज्ञा देंगे वैसा ही करेंगे। तुम कुछ मत कहो। तुम्हारी यदि लड़ने की इच्छा हों तो आ जावो। इस पर हसन कुली ने 5 हजार घुड़सवार भेजकर करमसिंहजी से युद्ध कर दिया। दोनों दलों में घमासान लड़ाई हुई। करमसिंहजी के साथ उनके दो पुत्र थे। जिनमें से एक युद्ध में काम आया। बड़ी वीरता से लड़ते हुवे संवत 1637 के आसोज सुद 11 को युद्ध में काम आये। स्वामीभक्ति में अपनी जान की कुर्बानी दे दी। गांव धांगड़वास में दिवान करमसिंहजी के स्मारक में छतरी बनवाई गई। जिसकी लोग बड़ी श्रद्धा से पूजा करते हैं। उनके पीछे उनकी तीन राणियों रायकंवर, प्रेम कंवर व दि॰ रायकंवर सती हुई थी। दिवान करमसिंहजी के नौ पुत्र थे। (1) हेमराजजी (2) रोहिताश्वजी (3) डूंगरदासजी (4) चोथजी (5) खींवसिंहजी (6) अखेराजजी (7) केसूदासजी (8) लिखमीदासजी (9) मोवनसिंहजी। कंवर रोहिताश्वजी भी दिवान करमसिंहजी के साथ थे। उस समय रोहिताश्वजी की आयु मात्र 11 वर्ष थी। जब करमसिंहजी मारे गये तब तुर्कों ने रोहिताश्वजी को मारना चाहा। लेकिन उनके भाईयों ने गुप्त रूप से रोहिताश्वजी को युद्ध स्थल से बाहर निकाल कर गांव सथलाणा में एक विधवा सुनारी को सारा हाल बताकर उसके पास रख दिया। रोहिताश्वजी पेमकंवर के उदर से उत्पन्न हुवे थे। दिवान करमसिंहजी ने आई माता का मंदिर संवत् 1636 के चेत शुद 2 शनिवार को बनवाया था।
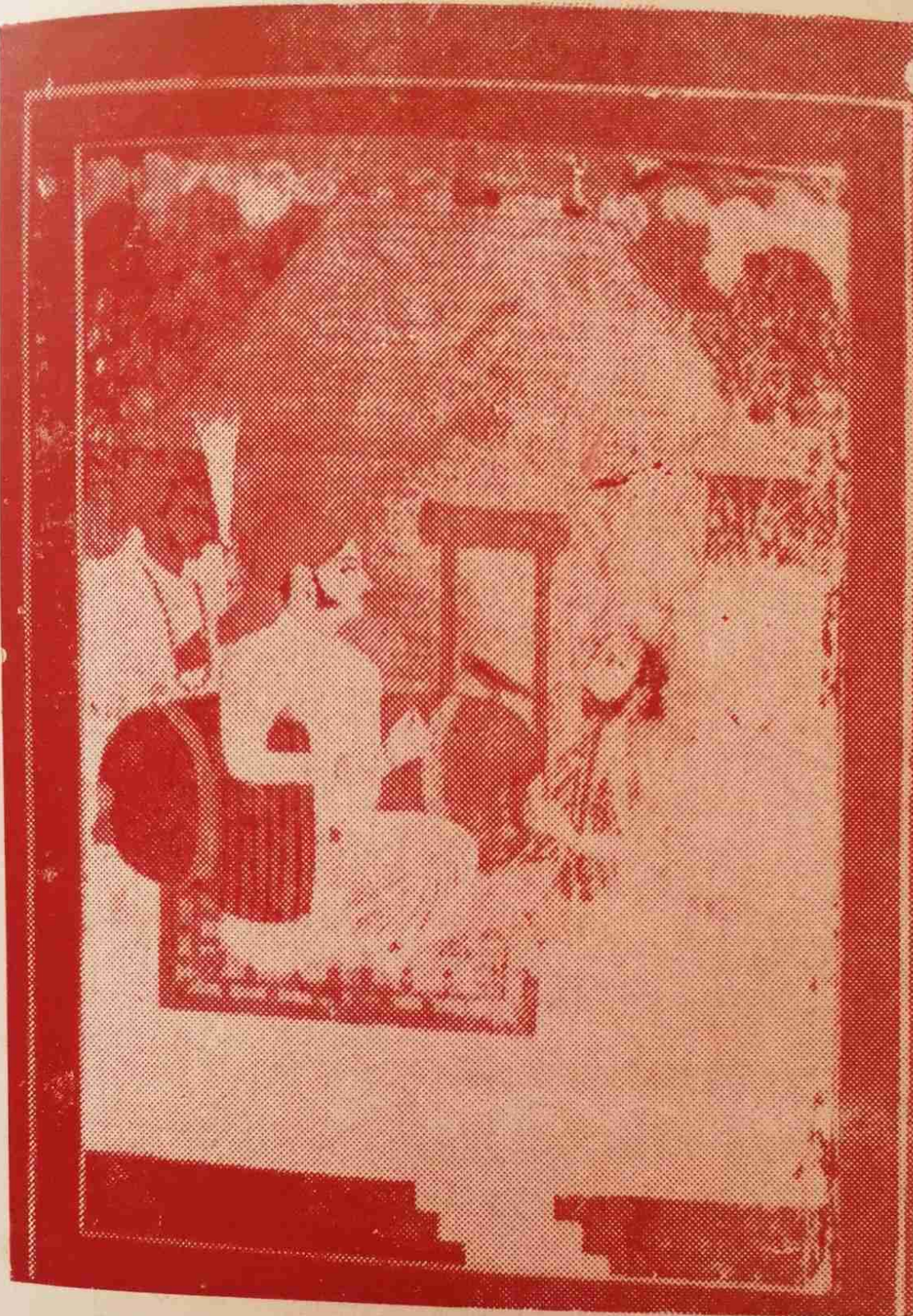
दिवान श्री रोहिताश्वजी

"दिवान रोहिताश्वजी"

जन्म—संवत् 1626 पोह सुद 5
पाट—संवत् 1637 माघ सुद 5
विवाह—संवत् 1642 माघ सुद 5
स्वर्गवास—संवत् 1694 पोह सुद 4

रोहिताश्वजी गांव सथलाणा में विधवा सुनारी के घर रहने लगे। दिन में अन्य बच्चों के साथ जंगल में गायों के बछड़ों को चराने जाया करते थे। वे तो राज बीज थे। अतः जंगल में अन्य बच्चों के साथ राज दरबार लगाते व आप एक टील पर राजा बन कर न्याय करते थे। जब दिन में उन्हें नींद आ जाती तो एक काला नाग फन फैला कर उनके मुंह पर छांया कर देता था। करीब चार माह वहां रहने के बाद एक दिन ग्राम धुन्धाड़ा का एक राजपूत उधर से गुजर रहा था। उसने सोये हुए बालक पर नाग द्वारा छाया करते देख सोचा कि यह कोई राज बीज है। अवश्य छत्रपति होगा। यह सोच साथ खेलते बालकों से पूछा तो बालकों ने कहा कि अमुक सुनारी का बेटा है। वह राजपूत बालकों के साथ उस सुनारी के घर पहुंचा और पूरा हाल मालूम किया। वहां से जोधपुर जाकर महाराजा को सारा हाल कहा। महाराजा उसी समय रोहिताश्व को लेने पहुंचे और उन्हें लाकर संवत 1637 के माघ सुद 5 को दिवान की गद्दी पर बिठाया।

रोहिताश्वजी आई माता के परम भक्त थे। वे रात दिन आई माता की भक्ति में लीन रहते थे। आई माता की कठोर तपस्या किया करते थे। उनकी तपस्या से प्रसन्न हो आई माता ने प्रत्यक्ष रूप में दर्शन दे आशीर्वाद दिया था। रोहिताश्वजी ने इतनी

कठोर तपस्या की कि आई माता के मंदिर में छत मे एक सांकल लटका कर उससे अपनी चोटी बांध कर, एक पांव पर खड़े रह कर छै वर्ष तक तपस्या की थी। लोग आई माता के दर्शन करने आते तब रोहिताश्वजी के चरण स्पर्श करते थे। उनका पांव सूज गया था। छै वर्ष बाद आपने भूमि में अन्दर कमरा बनवाकर उसमें धुनी रमा कर छै वर्ष और तपस्या की थी। इस प्रकार कुल बारह वर्ष तक तपस्या में लीन रहे। जब यहां का वातावरण शान्त नहीं देखा, लोग उनके दर्शन करने अधिक आने लगे तो बिलाड़ा के पूर्व में सुनसान जंगल जहां घनी भाड़ियां थी, वहां जाकर कुछ समय तक एकान्त तपस्या की थी। उस स्थान पर आजकल बेरा रनिया आबाद है। उस बेरे पर रोहिताश्वजी का मंदिर स्थापित किया गया जो आज तक विद्यमान है। डोराबन्द वहां जाकर धूप ध्यान करते हैं और बड़ी श्रद्धा से रोहिताश्वजी की पूजा करते हैं। जिस सांकल से चोटी बांध कर तपस्या की थी, वह सांकल आज दिन बिलाड़ा बडेर में आई माता के मंदिर में विद्यमान है। तथा जिस जगह भूमि के अन्दर गुफा बनाकर धुनी रमाई थी, वो गुफा भी दर्शनार्थ आज दिन विद्यमान है।

तपस्या करने के बाद दिवान रोहिताश्वजी आई पंथ का प्रचार करने लगे और लाखों लोगों को डोरा बन्द बनाया वे गांव गांव आई पंथ के प्रचार हेतु घूमा करते थे। एक दिन आप अपने पिताजी की समाधी के दर्शन करने धांगड़वास पधारे। दर्शन कर वहां से ग्राम सथलाणा में विधवा सुनारी से मिलने गये। रात को सथलाणा में सुनारी के घर ठहरे हुवे थे। सथलाणा सात ढाणियों में बसा हुआ था। उसी रात जैसलमेर के भाटियों ने डाका डाला। इस पर रोहिताश्वजी ने भाटियों को ललकारा।

भाटी भागने लगे। रोहिताश्वजी ने उनका पीछा किया जोधपुर से करीब 30 कि. मी. पश्चिम में कालीजाल नामक गांव के पास जाकर भाटियों को पकड़ा। भाटियों ने आत्मसमपरण किया। और रोहिताश्वजी को पहचान कर उनके शिष्य बन गये। उनके पास जितना सोना चांदी था, सब रोहिताश्वजी को भेंट कर दिया रोहिताश्वजी वापस सथलाणा आये और सथलाणा की सात ढाणियों को शामिल कर एक गांव बसाया और वहां पर आई माताजी का मन्दिर स्थापित कर अखंड जोत जलाई। जिसकी लो पर केशर पड़ा। अखड जोत आज तक जलती है और लो पर केशर पड़ता है। सथलाणा से सुनारी से विदा ले वापस बिलाड़े आये। उस समय किसी चुगलखोर ने जोधपुर जाकर महाराजा उदेसिंहजी को कहा कि रोहिताश्व धर्म के नाम पर लोगों को लूटता फिरता है और बहुत सा सोना चांदी इकट्ठा किया है। यह सुन महाराजा उदेसिंहजी ने तुरन्त आदमी भेज रोहिताश्वजी को जोधपुर बुलवाया। दिवान रोहिताश्वजी जोधपुर महाराजा के पास पहुंचे। महाराजा ने उनसे कहा कि तू धर्म के नाम पर दुनिया के भोले भाले लोगों को लूटता है। तेरे पास ऐसी क्या करामात हैं। मुझे बता। इस पर रोहिताश्वजी ने कहा मैं तो एक साधारण आदमो हूँ। करामात तो मां आईजी के पास है। यह सुन महाराजा ने मंत्री को आदेश दिया कि रोहिताश्व को जेल में बंद कर दो। मंत्री ने रोहिताश्वजी को जेल में बन्द कर दिया। क्या देखते हैं, जेल के ताले अपने आप खुल गये और फाटक भी खुल गया, इस पर महाराजा ने लोहारों को बुलाकर कहा कि इसके पांव में बेड़ो पहना दो। लोहारों ने बेड़ी बनाई तो रोहिताश्वजी का पांव हाथी के समान हो गया। बड़ी बेड़ी बनाई तो पांव सुई के समान हो गया। यह रचना देख लोहार घबराये

और रोहिताश्वजी के पांवों पड़े व आई पंथ के डोराबंद बन गये । आज भी जोधपुर के लोहार डोरा बंद है और उनके मोहल्ले में आई माता का मंदिर स्थापित किया हुआ है। इसी प्रकार महाराजा को रोहिताश्वजी ने और भी परचे दिये। महाराजा उदेसिंहजी रोहिताश्वजी का चमत्कार देख उनसे माफी मांगी तथा कहा मुझे आप हुक्म दो वो करने को तैयार हूं। इस पर रोहिताश्वजी ने अपनी गायों के चरने हेतु जोड़ व पानी पीने हेतु बेरा मांगा। महाराजा उदेसिंहजी ने तत्काल बिलाड़ा में अपने जोड का आधा जोड और पीपलिया बेरा दिया।

पायो अरट पिपलियो, आधो पायो जोड ।
करे अवर ऐती कमरा, रोहितास री होड ॥

जिस समय रोहिताश्वजी को महाराजा ने जोधपुर बुलाया था। उसके रोष में बिलाड़ा के डोरा बंद बडेर के सामने आकर आपस में कट कर शहीद होने लगे। जब यह बात हाकिम को मालूम हुई तो दोड़ा दोड़ा आकर सबको आई माता व रोहिताश्व की सौगंध दिलवाकर शांत किया। तब तक तो 500 डोरा बंद शहीद हो चुके थे। जिनका स्मारक बडेर के चौक में बनाया गया। जहां पर आज कल सीरवी समाज सभा भवन बना हुवा है। हाकिम ने उसी समय महाराजा को पत्र लिखा कि शिघ्र रोहिताश्वजी को छोड़े और बिलाड़ा भेजें अन्यथा मारवाड़ के समस्त काश्तकार शहीद हो जायेंगे। पत्र पढते ही महाराजा ने तुरन्त रोहिताश्वजी से माफी मांग कर बिलाड़ा जाने हेतु विदा किया।

जब रोहिताश्वजी बिलाड़ा पहुंचे तो लोगों ने खूब स्वागत किया। उस समय बिलाड़ा में महाराजा के कामदार भांनजी भंडारी थे। उन्होंने आधा जोड देने की आड लगा दी। इस पर

रोहिताश्वजी ने कहा कि मेरा घोड़ा जोड़ के बीच से गुजरेगा। उस जगह पर घास नहीं उगेगी। मेरा घास लाल रंग का व बिना सिट्टे का होगा और दरबार के जोड़ का घास सफेद रंग का व ऊपर सिट्टे वाला होगा। तुरन्त अपना घोड़ा चलाकर जोड़ को दो हिस्सों में बांटा। जहां रोहिताश्वजी का घोड़ा रूका था वहां पर एक छोटी छतरी व चबूतरा बनाकर रोहिताश्वजी का थान कायम किया। जो आज दिन मौजूद है। जहां पर घोड़ा चला था वहां पर आज भी घास नहीं उगता है। महाराजा के घास पर सिट्टा आता है और दिवान साहब के घास पर सिट्टा नहीं आता है। जो आज दिन भी है। रोहिताश्वजी बड़े सिद्ध पुरुष थे।

जोधपुर महाराजा रोहिताश्वजी को बहुत आदर देते थे। उन्होंने पत्र में कई बार लिखा था कि तुम शामधर्मी हो तथा महाराजा ने संवत् 1667 में यहां तक लिखा कि बिलाड़ा आपको सोंपता हूं। वहाँ की देखरेख आप करना।

इसी प्रकार उदयपुर के महाराणा श्री अमरसिंहजी ने अपने पूर्वज रायमलजी की प्रतिज्ञा के अनुसार 50 बीघा जमीन भेंट की थी। जिसका प्रमाण निम्न परवाना है।

॥ श्री रामों ज्यति ॥

श्री गणेश प्रशादातुः श्री एकलिंग प्रशादातुः

'सही'

महाराजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी आदेशातुः चौधरी रोहितास कस्य। ग्रास मवा किधो।

अरहट किलकरण डायलाणा माहे ए. वि. स. 1660 वर्षे असाढ सुद 1 हुवे श्री मुख।

इसी प्रकार महाराणा प्रताप ने भी 50 बीघा जमीन भेंट की थी ।

॥ श्री रामो ज्यति ॥

श्री गणेश प्रशादातु

श्री एकलिंग प्रशादातु ।

'सही'

महाराजाधिराज महाराणा प्रतापसिंघजी आदेशातु चौधरी रोहितास कस्य ।

ग्राम मय्या किध्धो ग्राम डायलाणा बड़ा मांहे खेत 4 चार साली रा लदक आघांट 1 खेत बड़ वालो 1 खेत राजावो 1 खेत पटचो 1 वाज्योवाड़ ।

४ भोग कलसी ४॥— अरहट १ साणवें सई देसी संवत् १६५१ व्रते आसोज सुद १५

दिवान रोहिताश्वजी के 6 राणियां थी ।

1. पंवार फूलकंवर
2. पड़ियार प्यारकंवर
3. सिमणजी मानकंवर
4. जादम कुनणकंवर
5. पड़ियार स्वरूपकंवर
6. भटियाणी रायकंवर ।

तथा दस पुत्र थे— 1. कनोजी 2. पीथोजी 3 चांदोजी 4. लिखमीदासजी 5. दूदोजी 6. देवराजजी 7. भारमलजी 8. खेतसिंहजी 9. विजैसिंहजी 10 अमराजी । इनमें सबसे बड़े लिखमीदासजी थे । जो पड़ियार प्यारकंवर के उदर से पैदा हुवे थे ।
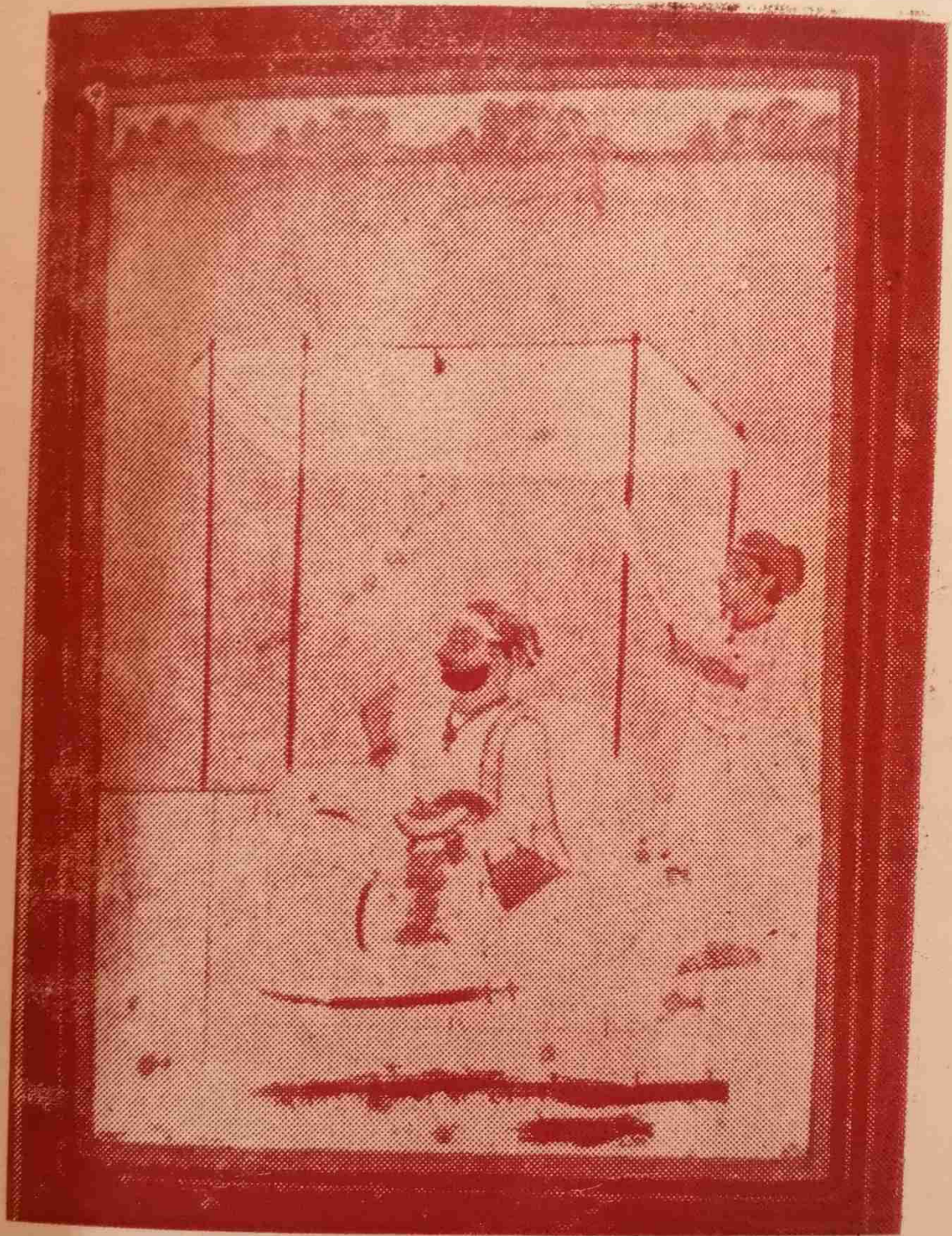
दिवान श्री लिखमीदासजी

आई माता की भक्ति करते हुवे संवत् 1694 में अड़सट वर्ष की आयु में आप स्वर्ग सिधार गये। आपके पीछे आपकी छै रानियां सती हुई थी।

।। दिवान लिखमीदासजी ।।

जन्म—संवत् 1653 आसोज सुद 9
पाट—संवत् 1694 पोह सुद 4
स्वर्ग—संवत् 1700 पोह वद 13

दिवान लिखमीदासजी बचपन से ही अपने पिता रोहिताश्वजी के समान आई माता के भक्त थे। दिवान की गद्दी पर बैठते ही दिवान लिखमीदासजी ने अपने पिता रोहिताश्वजी के पीछे बहुत बड़ा ज्याग किया था। उस ज्याग में लाखों की संख्या में लोग आये थे। ज्याग के खर्च का विवरण निम्न प्रकार है।

3 हजार मरण गुड़, 1 हजार दोय सौ मरण घी, 5 हजार मरण गेहूं, 5 सौ मरण खांड तथा साथ में अन्य सामग्री के लाखों रुपये खर्च हुवे थे।

जिग बलराजा जिसो, लखे किधो बिलहपुर।
कन्याहल दोय लाख, सूतो लीधा वीरहवर ।।
च्यार चक्क नंव खंड जिते, जीमरण कज आया।
करे जिज्ञ राजसू जेत, बाजा बजवाया ।।
धिन्न धिन्न कहे सारी धरा, जिरण जिग इसड़ो जीपीयो।
वर डंका वाज च्यरू वाला, दुनियां विच जस दीपीयो ।।

साथ ही अपने पिता रोहिताश्वजी की यादगार में बांगा गंगा पर एक विशाल छतरी बनवाई। तथा तीर्थ स्थान बांगा गंगा पर छतरी के पास बहुत बडे बड़े दो कुन्ड (जनाना व मरदाना) यात्रियों के स्नान करने हेतु बनवाये। जो आज भी विद्यमान है। जिनसे पानी बहकर आगे नहर द्वारा खेतों में सिंचाई होती है। दिवान लिखमीदासजी मात्र 6 वर्ष तक ही दिवान की गद्दी पर आशीन रहे थे। संवत् 1700 की पोह कृष्ण 13 को आपका स्वर्गवास हो गया था। दिवान लिखमीदासजी के तीन रानिया थी, 1. हाडी प्यारकंवर। 2. सांखली पदमकंवर 3. च्वांण रायकंवर। जो कि तीनों ही उनके पीछे सती हुई थी तथा लिखमीदासजी के दस पुत्र हुवे थे। 1. सोनींगसिहजी, 2. राजसिहजी 3. डूंगरदासजी, 4. हरिदासजी 5. तेजसिहजी 6. मानसिहजी 7. भोजराजजी 8. पुरमलजी 9. जगमालजी 10. भींवराजजी। इनमें राजसिहजी सबसे बड़े थे और राजसिहजी राणी रायकंवर के उदर से पैदा हुवे थे। लिखमीदासजी के स्वर्गवास होने पर दिवान की गद्दी पर राजसिहजी बैठे थे।

———

।। दिवान राजसिहजी ।।

जन्म—संवत् 1680 आसोज सुद 9

पाट—संवत् 1700 माघ कृ. 5

विवाह—संवत् 1701 फागण वद 12

स्वर्ग—संवत्—1746 वेसाख वद 5

दिवान श्री राजसिंहजी

दिवान राजसिंहजी बड़े वीर प्रकृति के थे। परोपकारी भी बहुत थे। किसी का दुख उनसे देखा नहीं जाता था। हर मनुष्य के दुख में सहयोग करते थे। श्राई माता के श्रटूट भक्त थे। इनके समय में जोधपुर के महाराजा जसवंतसिंहजी प्रथम थे। राजसिंहजी, महाराजा के बहुत विश्वासपात्र थे। उनका इतना विश्वास था कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता जिसका प्रणाम निम्न परवाना से मिलता है।

मोहर

स्वारूप श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवंतसिंहजी वचनांतु चौधरी राजसिंघ दीसे सु प्रसाद वाचजो।

तथा थांरी श्ररदास श्राई तिण में लिखीयो थो लिखमीदास राम कह्यो, सो लिखमीदास माहरे भलो बन्दो छो, नें हमें तूं माहरे लिखमीदास—री जागा छे। म्हारा छोरू छो। थे खातर जमा राखजो, म्हे बीलाड़े पधारां छां। ने थांनू सिरपाव टीके देशा। संवत् 1700 रा माघ वदी 3 मु. मेड़ता।

इसी पत्र के थोड़े दिनों बाद महाराजा साहब जसवंतसिंहजी ने बिलाड़ा पधार कर बड़ी प्रसन्नता प्रगट की थी। तथा बिलाड़ा में ही मातम पुरसी की रस्म श्रदा करवाई। जनाना, मरदाना सिरपाव दिये। श्रच्छा कुरब कायदा दिया। हाथी घोड़ा बख्सीस किये। तथा विदा होते समय श्रपने कार्य की खास जिम्मेदारी दी।

महाराजा जसवन्तसिंहजी ने एक बार लाहोर से काम की जिम्मेदारी हेतु पत्र लिखा था।

॥ श्री ॥

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवन्तसिंहजी वचनांतु। चोधरी राजसिंहजी से सुपरसाद वाचजो। श्रागे रा समाचार भला छै। थांहरा दीजो।

तथा अरदास थांरी आई, हकीकत मालूम हुई थे म्हारे बन्दा छो। छोरू छो। उठारी हकीकत म्हानें वेगी मालूम करजो। घणा अरट कराइजो। हासल इधको कराइजो। अरट पड़िया मती राखजो। इधको हासल किया थारो मुजरो छै।

बलदारी जोड़ी अव्वल मांनू मेलजो। संवत् 1703 रा माघ वद 12 मुकाम लाहोर।

————

महाराजा जसवंतसिंहजी, दिवान राजसिंहजी को खास अपना मानते थे। महाराजा ने एक बार खुश होकर राजसिंहजी को बिलाड़ा में तीन बेरे बख्से थे। जिसका प्रमाण निम्न परवाने से मिलता है।

मौहर

स्वारूप श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री जसवंतसिंहजी वचनांतु। चोधरी राजसिंह दीसे सु प्रसाद वाचजो। अठारा समाचार भला छे। थांहरा देजो। अरदास थाहरी आई। हकीकत मालूम हुई। थे छोरू छो। घणा हासल करो। इण भांत थाहरो मुजरो छे। संवत् 1707 रा वैशाख सुद 7 पाव तखत जोधपुर फिर सुरताण हांबड़ा रा अरठ तीनूं ही थांने दिया छै। पं० अरठ घण हासल कराइजो। धणी ने खुवाही करीजो नु म्हारो मुजरो हुवे।

महाराजा जसवंतसिंहजी, दिवान राजसिंहजी को छोरू सम्बोधित करते थे। लेकिन दिवान व आई माता के नाते धर्म गुरु मानते थे।

महाराजा जसवंत तपे, जोधपुर नरेसुर ।
भुज पूजे पतशाह, सूतो अल्लाह बराबर ।।
सोहड़ लख ओ लगे, लख दरबार पले नित ।
हय गय पार न कोय, वसुह सिर वाजे नौबत ।।
गजशाह सुतन दोय राह सिर, सुज भुज पूजे राजसी ।
लखधीर सुतन वह जसलये, जिणरो दीये दसह दिसी ।।

इसी प्रकार उदयपुर के महाराणा राजसिंहजी ने अपने पूर्वज रायमलजी की प्रतिज्ञानुसार दिवान राजसिंहजी को 50 बीघा जमीन गांव डायलाणा मे भेंट की थी ।

।। श्री रामो जयति ।।

श्री गणेश प्रशादातु श्री एकलिंग प्रशादातु

(सही)

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री राजसिंहजी आदेशांतु वभिवा सुथाने शाह डूंगर सी कस्यः ।

अप्रंच चोधरी राजसिंघ ग्राम डायलाणा माहे बीघा 50 आके बीघा पचास मय्या करे दीधा छे। सु किणी करसा रा खेत मत छो। पड़ी धरती हके जसी भर दीजो। कुवो ए खोदाए करसी। परवानगी पंचोली फतेचन्द संवत् 1716 वसे चेत्र वदी 10 सीनु ।

इसी प्रकार उदयपुर महाराणा श्री जैसिंहजी ने भी अपने पूर्वजों की प्रतिज्ञा निभाई ।

।। रामो ज्यति ।।

श्री गणेशप्रशादतु श्री एकलिंग प्रसादतु ।

'सही'

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री जैसिंहजी (यह प्रतिज्ञा राजा रायमलजी कीवी थी) आदेशातु वीझवा सुथाने साह रिखभदास पंचोली मधुसुदन कस्य ।

अप्र चोधरी राजसिंह ग्राम डायलाणा माहे धरती बीघा 50 आके बीघा पचास मया करे दीधी छै । सु किणी करसा रा खेत मत छो । पड़ी धरती है । हको जिसी भरे दीजो । परवानगी पंचोली दामोदर संवत् 1739 रा माघ वद 3 शुक्रवार ।

इन्हीं दिनों में एक गोबी दल (अंग्रेज) यदा कदा हर जगह लूट पाट करता था । जो कोई उनके सामने आता उन्हें भड़का देते थे और कहते कि जो हमसे भिड़ेगा, वो गोब्र के गोले से मारा जायेगा । यह दल तोपों से व आधुनिक हथियारों से लेस था । पूछने पर कहते हम दिल्ली फतह कर राज करेंगे । उनके अत्याचारों ने नाक में दम कर रखा था । गोबी दल ने अजमेर के शोबायतों से युद्ध कर जीत हासल करली थी । जिससे उनका होंसला बढ गया था । नारनोल के बादशाह के पास 5 हजार की सैना थी । वो भी गोबी के साथ युद्ध में हार गये थे । जिससे नारनोल के बादशाह भी बड़ा चिंतित हुआ ।

एक बार संवत् 1728 में गोबी दल ने बिलाड़ा आकर बांण गंगा पर डेरा दिया । गोबी दल का अगुआ जोगीदास नामक एक व्यक्ति ने यहां के भोले भाले लोगों को कूंड़ा पंथी धर्म चलाने के बहाने (नियत बिलाड़ा पर कब्जा करने की) वैसाखी अमावश को बांण गंगा पर इकठ्ठा किया । तथा गुप्त रूप से फोज को इशारा कर उन भोले भाले लोगों पर हमला करवा दिया । इसमें भाटी केसूदास भी सामिल था । भोले भाले लोग मारे गये ।

जब यह बात दिवान राजसिहजी को मालूम हुई तो उन्हें बड़ा क्रोध आया और उसी समय मारवाड़ के वीरों को "गोबी दल को खदेड़ने हेतु" इकट्ठा किया। जब सारे मारवाड़ के वीर इकट्ठे हो गये तो वे किसी के बहकावे में आकर गोबी दल से युद्ध करना मना कर दिया। कहने लगे कि गोबी तो ईश्वर की सता से लड़ते हैं। हम उनके सामने टिक नहीं सकते। यह सुनकर दिवान राजसिहजी ने सबको समझा बुझा कर युद्ध हेतु तैयार किया और संवत् 1728 के वेसाख सुद 2 को गुरुवार के दिन गोबी दल पर टूट पड़े। दोनो दलों में घमासान युद्ध हुआ। विजय श्री राजसिहजी को मिली। यह बात जब जोधपुर महाराजा और उदयपुर महाराणा ने सुनी तो बहुत प्रसन्नता प्रगट की। दिवान राजसिहजी का वैभव बहुत बढ गया था। महाराणा उदयपुर व महाराजा जोधपुर ने दिवान राजसिहजो की प्रशंसा इन शब्दों में की।

सांत खंणा अेवास, सहर भाद्रवो समोफार।
सोने री चित्राम, काम मिने जुहार करी ।।
रंग महल अणपार, बीच चह बचा विराजे।
वां महलां विच खण, सुक्ख भुगते दिन साजे ।।
महाराज जसो पूजे भुंजां, राणा अरघे राजसी।
अवतार वीर इल ऊपरे, दिये जस दस ही दसी ।।

उन दिनों बाहरी आक्रमणों के कारण जोधपुर की माली हालत कुछ कमजोर हो चुकी थी। ऐसी स्थिति में महाराजा जसवंतसिहजी ने रिंया के सेठ व बिलाड़ा दिवान से मदद मांगी थी। उस पर रिंया के स्वामीभक्त सेठ ने रिंया से जोधपुर के

बीच रुपयों से भरी गाडियों की लाइन लगा दी थी । तथा दिवान राजसिहजी ने बिलाड़ा से जोधपुर के बीच धान से भरी गाडियों की लाइन लगा दी थी । दोनों की स्वामीभक्ति व मारवाड़ की मर्यादा रखने की बात देख महाराजा जसवंतसिहजी ने दिवान राजसिह को पत्र लिखा कि मैं तुम्हारी स्वामीभक्ति से अति प्रसन्न हूं, उसके तीन चार दिन बाद महाराजा बिलाड़ा पधारे। बिलाड़ा पधारने पर दिवान राजसिहजी ने महाराजा जसवंतसिह की बहुत खातिर की और बहुत अच्छी गोठ दी । महाराजा ने देखा जिधर नजर पड़े उधर ही किसी बात की कमी नज़र नहीं आई । महाराजा बहुत खुश हुवे । महाराजा को अपने आप पर गर्व हुआ कि मेरी अमलदारी में ऐसे 2 पुरुष भी हैं । महाराजा जसवंतसिहजी विद्वान थे । आपने अपने मुख से फरमाया था ।

असभड़ सांतर ऊमदा, सारी बात सुजाण ।
रूपक मुरधर देश रो, दीवे तूं दीवाण ।।
हिक घर रिया शाह रो, दूजो घर दीवाण ।
आधा में मुरधर अवर, मुख जसवंत फरमाण ।।

महाराजा जसवंतसिहजी की बुद्धि को धन्य है । व दिवान राजसिहजी की स्वामीभक्ति को धन्य है । महाराजा जसवंतसिहजी ने पूरे मारवाड़ में यह आज्ञा प्रसारित करवा दी कि मारवाड़ में ढाई घर है । एक घर तो रिया सेठ का, दूसरा बिलाड़ा दिवान का तथा आधा घर जोधपुर महाराजा का है । उसी दिन से मारवाड़ में ढाई घर गिने जाने लगे ।

महाराजा जसवंतसिहजी आई माता के भक्त थे । एक बार बिलाड़ा आई माता के दर्शन करने पधारे उस समय १०२५) रु० छत्र हेतु आई माता के भेंट किये थे । वापिस लौटते समय

दिवान राजसिंहजी को घोड़ा व सिरपाव बख्से। तथा दिवान साहब को अपने साथ जोधपुर ले गये थे। वहां पर वीर दुर्गादासजी से अच्छी मित्रता हो गई। मित्रता इतनी गाढी हुई कि एक आत्मा दो शरीर हो। एक साथ ही उठना, एक साथ ही बैठना, साथ साथ भोजन करना। उन्हीं दिनों महाराजा को युद्ध के सिलसिले में काबुल जाना था। महाराजा ने राजसिंहजी को भी साथ चलने का कहा। लेकिन बिलाड़ा में आवश्यक कार्य होने के कारण साथ नहीं जा सके थे। जब महाराजा काबुल पहुंचे तो वहां से पत्र लिखा। जिसमें राजसिंहजी को काबुल बुलाया था। पत्र पढते ही दिवान राजसिंहजी काबुल के लिये अपने सैनिकों को साथ ले संवत् 1734 के आसोज वद 2 को बिलाड़ा से रवाना हुवे।

दिवान राजसिंहजी की काबुल यात्रा का वर्णन बहियों में लिखा।

॥ बही की नकल ॥

संवत् 1734 रा आसोज वदि 2 ने महाराजाजी रे पावे श्री श्री राजसिंहजी काबुल विदा हुआ। अमरा नेत सी अणदा और ऊंट 3 सामान रा लेने काबुल विदा हुआ।

जब दिवान राजसिंहजी काबुल पहुंचे तो पीछे से कागद आया कि बिलाड़ा में कुछ उपद्रव हो गया। यह समाचार सुन महाराजा से आज्ञा ले माघ सुद 14 को काबुल से रवाना होकर फागण वद 10 को बिलाड़ा पहुँचे। यहां आकर आपने झगड़ों को निपटाया।

महाराजा जसवंतसिंहजी का देहान्त हो गया था। उधर पेशावर में संवत् 1735 के चेत्र वदी 4 को अजीतसिंहजी का जन्म हुआ। मुगल अजीतसिंहजी को मारना चाहते थे। लेकिन स्वामीभक्त दुर्गादासजी ने गुप्त रूप से अजीतसिंहजी को पेशावर से मारवाड़ में ले आये। यहां आकर मेवाड़ के पहाड़ों में छिपते फिरे। दिवान राजसिंहजी दुर्गादासजी के घनिष्ठ मित्र थे। अतः दुर्गादासजी ने अपनी पत्नि व बच्चों को राजसिंहजी के संरक्षण में बिलाड़ा रखा। दुर्गादासजी, अजीतसिंहजी को लेकर छुपते फिरते थे। तथा दिवान राजसिंहजी को पत्र लिख कर मारवाड़ के हाल चाल मालूम किया करते थे। राजसिंहजी ने दुख के दिनों में अजीतसिंह को बहुत सहयोग दिया था। इसके प्रमाण हेतु दुर्गादासजी द्वारा लिखा गया पत्र प्रस्तुत है।

।। श्री परमेश्वरजी ।।

सिध श्री खीवेल सुथाने चोधरी श्री राजसिंहजी चरण कमल यने गुढा थी राठौड़ दुर्गादासजी लिखंतु जुहार वाचजो। अठारा समाचार श्री परमेश्वरजी रा किरपा थी भला छे जी। राज रा सदा भला चाहिजे जी। राजो ठाकुर छे बड़ा छे। महर राज उपरंच कोई बात ने छे राजो सुं कागल माहे किसी पड़वज लिखा अपरंच राज रो कागल आयो। समाचार पीरी छी था। राजो भोजराजजो रे कागल रा समाचार लिखियो हुता सु सगला ही वाचियाजी वीजो। सभा रे भाई बेटा उठ गया रा समाचार लिखीयो तो सु वाचियोजी राज लिखियो था म्हे भोजराज नूं दोय लिखियो छे। उठे सवाई कोई देखे तो मूढा आगे उभ रहने सीख मगे ने उरा आवजो तको उठारो वंतई सई छे। सीख मांगण रो काम कोन ही जो वंत ने देखी जे तो उभा रहिजो नही छटंक ने उरा आवजो। अहदी जोधपुर नागोर

विदा वद हुग्रा। जीये रे वास्ते सुजाण जहीज छै बीजो राजी लिखीयो हतो दीवाण फतेखां जी परवाणा रो लिखीयो हुतो सु समाचार बाचिया। राजो लिखीयो हुतो उदा हू कागद पाछो लिखंत को राजा वचन इण विध लिखजो ने तोयरे छे। ताव ग्रावे छे। पवा में हरस ताव ग्रावे छे प्रमाण हरे हुई। लाणों खेवेल सलारिया इण गवे महारा मधुवारा छे। तको महर धन चून बख्त घणा छे। सुब करने में ग्रवसे इजलखजो जी ने ग्रादमी दो ठावा उठे मेलजो। गांव ग्रापणे वंतरा हुवे सु लिखजो। लाव ने हंसा बंटरा ही लिखीयो हूँ तो ग्रादमी लायक नां नहलाया पुरण सगतसिंह रा वेणीदास रणावत कंवरा धांधिया चार ठाकुर मेलिया छे। बीजी राजी लिखीयो हु तो उठारो विचार हुवे सु मने लिखजो सु गने गने उठारो समाचार ठावा छे। श्री परमेश्वरजी सारी हवत छे। वलता कागल समाचार वेगा देजो। मिति पोह वद 1 संवत् 1736।

दुर्गादासजी के कहे ग्रनुसार दिवान राजसिंहजी उदयपुर जाकर राणाजी से मिले ग्रौर उनसे ग्रच्छा सम्बन्ध कायम किया। तभी से दिवान उदयपुर राणा को टीके में घोड़ा देते हैं। मुसलमानों का ग्रत्याचार ज्यादा होने के कारण ग्रपने लोगों की रक्षार्थ ग्रक्सर डायलाणा में ही रहते थे। दिवान राजसिंहजी की महाराजा ग्रजीतसिंहजी व दुर्गादासजी की दुख के दिनों में की गई सेवा प्रशंसनीय है। दिवान राजसिंह ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक मारवाड़ में मुसलमान रहेंगे तब तक मैं मारवाड़ में पांव नहीं रखूंगा। चाहे प्राण चले जांय लेकिन सिर नहीं झुकाऊंगा। यह प्रतिज्ञा ग्रापने निभाई।

एम कहे राजसी कमंध, भुज झाल करम्भर।
ग्रजावगर ग्रनधणी, शीश नह धरू ग्रव्वर॥

शाम धर्म कारणे कमे, जग इतको किधो ।
माहरो दादो मरे, लोह चढ वेकुण्ठ लिधो ।।
आवात मुखा सूं उच्चरे, कमधज छोडाणो कियो ।
बीलपुर हूत बांहां प्रबल, इम डायलाणा आवियो ।।

उदयपुर महाराणा ने दिवान राजसिंह का बहुत अच्छा मान किया था ।

राजी व्हौ मन रांण, स्वण डायलाणे आयो ।
मेले अस सिरपाव, वले मोतियां बधायो ।।
शौह परगह आपरी, सुरंद वहं लीधा साथां ।
दादो करमट जिही, भिडे जीवण भारा थां ।।
अंगजी कमध आरवाड़, सिध लाखा मुड़े जलमियो ।
मेवाड़ धणी अरधे भुजा, दान बड़ा पातां दियो ।।

दिवान राजसिंहजी ने जन कल्याण के लिये भी कई कार्य किये थे । उन्होंने तत्कालीन गांव हर्ष के पास एक बहुत बड़ा तालाब बनवाया था । उसकी पाल बहुत बड़ी बनवाई जिसे माटमोर के नाम से जाना जाने लगा । उसकी पाल के पास एक सुन्दर बगीचा लगवाया । जिसका नाम माटमोर का बाग रखा गया था । जो आज भी बिलाड़ा से 3 कि. मी. पूर्व की ओर विद्यमान है ।

राज संमंद राजसी, बड़ो दरियाव बंधायो ।
सांत समदो जिसो, समंद आठमो करायो ।।
कब कमल जल बीच, भंमर ताप शीश भभंता ।
हंस मोर सारस पंखा, केई केई कल करंता ।।
अंब कदम्ब चम्पक अति, कोयल झिगोख करे ।
धन खल समंद बाधो, जिकण एम प्रथी मुख उच्चरे ।।

दिवान श्री भगवानदासजी

इसी प्रकार दिवान राजसिंहजी ने बिलाड़ा गांव के पूर्व में एक तालाब बनवाया। जो आज भी विद्यमान है जिसका नाम राजेलाव रखा गया था।

आई माता की भक्ति करते हुवे दिवान राजसिंह जनसेवा का कार्य भी खूब करवाते थे। आपके तीन राणियां थी। (1) बाघेली भानकंवर (2) डोडियाणी रंभाकंवर (3) शोढी जड़ावकंवर तथा आपके दस पुत्र थे (1) सुन्दरदासजी (2) भगवानदासजी (3) सांमीदासजी (4) आसोजी (5) हरिदासजी (6) नरसींगदासजी (7) अनोपसिंहजी (8) सिंहमलजी (9) मुकन दासजी (10) जीवणदासजी।

सबसे बड़े भगवानदासजी थे। संवत् 1746 के द्वितीय वेशाख कृष्ण 5 को दिवान राजसिंहजी का स्वर्गवास हो गया। उनके पीछे उनकी तीनों राणियां सती हुई थी। तथा 34 भक्तों ने भी आत्म समर्पण किया था। सतियों के बारे में एक दोहा कहा गया।

सोढी सतीयां सूं मिली, कीध अरज किवलास।
साहब, माहब धारजे, ए राज रा एवास ॥

"दिवान भगवानदासजी"

जन्म—संवत् 1708
ब्याह—संवत् 1721
पाट—संवत् 1746

स्वर्गवास—संवत् 1773 वैशाख वद 7 बुधवार

दिवान भगवानदासजी भी बड़े वीर धीर व आई माता के भक्त थे। अक्सर अपने पिता राजसिंहजी के साथ रहा करते थे।

दुर्गादासजी इनके साथ पुत्रवत प्यार करते थे। दुर्गादासजी दुख के दिनों में कई बार इन्हें साथ रखते थे। जब राजसिंहजी का देहान्त हुआ था उस समय जोधपुर महाराजा ने बहुत रंज किया था। तथा भगवानदासजी को दिलासा देकर उदयपुर के राणा के साथ पितावत् सम्बन्ध रखने हेतु उदयपुर भेजा था।

भगवानदासजी बहुत वीर तथा बुद्धिमान थे। एक बार उदयपुर के महाराणा के कुंवर अमरसिंहजी ने अपने पिता को गद्दी से उतार कर आप गद्दी पर बैठने के लिये उपद्रव खड़ा कर दिया था। इस उपद्रव में भगवानदासजी ने आपस में सुलह करवाई थी।

एक समय ओनाड़ अमर कुंवर फिर पित हुता पलटियो।
उमराव सह महि पलटे मेवाड़ ।।
सकता चुडा सोय, साराई मिलिया अमर सूं।
जैसी मन में जाणियों, आपाणां नह काय ।।
भेलेधर मेवाड़, इम दिन देखे आपरो।
आयो रांव घाणेरपुर, गाढो गुर गोढाण ।।

इस उपद्रव से महाराणा गांव घाणेराव आ गये। घाणेराव आकर राणा ने भगवानदासजी को पत्र लिखकर अपने पास बुलवाया।

इंम घाणेरा आय, तुरंत भूप तेड़ावियो।
चढ आयो भूपालदे, वलि जेत रा वजाय ।।

जब दिवान भगवानदासजी घाणेराव पहुंचे तो महाराणा बहुत खुश हुवे।

राजी होय मनराण, वीर भूप पाधारियो।
हमें फते म्हारी हूसी, दाखे इम दीवाण ।।

पायो सुख अरणवार, राण मुखां यूं उच्चरे ।
राण मुखां यूं उच्चरे, ओ निकलंक अवतार ।।

महाराणा को भगवानदासजी बहुत हिम्मत बंधाई ।

आये भूप अभंग, एम मुखा थी उच्चरे ।
सारा ही होसी सहज, राण करो मत रंज ।।

दिवान भगवानदासजी ने अपने वीर सैनिकों को इक्कठा किया तथा दुर्गादासजी को भी घाणेराव बुलबाया ।

चढियो असवडचीत, दुरग आगण भूपालदे ।।
राण पाट बेसाड़ियो, गावडण गुणगीत ।
भागीरथ कुण माण, दिन चोथे लायो दुरग ।
दल अण कल भेला किया, राजी हुय मन राण ।।
शाके मन शोह साथ अमर सहता उंमरा ।
भीरोज्यां भूपालदे, भिड़े कवण भाराथ ।।

मारवाड़ की फोज देख इनकी वीरता की धाक सुन कुंवर अमरसिंह ने सुलह कर ज्यों त्यों फैसला कर लिया । अन्त में पुनः महाराणा जयसिंहजी को ही राज्य मिला । अमरसिंहजी इस कार्य में सफल न हो सके। महाराणा जयसिंहजी ने भगवानदासजी का बहुत आदर किया । तथा भगवानदासजी की प्रशंसा निम्न शब्दों में की ।

कीधा किरणा लेह, दल अणकल भूपालदे ।
राणा उपगारह करण, इण विध आभालेह ।।
इम कर दज अण पार, पाट राण पधरावियो ।
सांराही मिलिया सुहड़, मिलिया राजकुमार ।।
ओ राणा उपकार कमध, भूप संभलो किवौत ।

महाराजा जयसिंहजो ने दिवान भगवानदासजो का उपकार मान कर कहा कि मेवाड़ का राज मुझे आप ही ने दिया है । इस खुशी

में महाराणा ने भगवानदासजी को घोड़ा सिरपाव तथा राय की पदवी दी ।

राय पदवी देराण, दे घोड़ा सिरपाव दे ।
इण विध सूं किधो विदा, भागीरथ कुल भाण ।।

यह पदवी पाकर दिवान भगवानदासजी अपने पट्टे के गांव माडपुरा रवाना हुवे । माडपुरा की आय कम थी और डायलाणा से दूर भी पड़ता था । इसलिये विदा होते समय राणा से गांव माडपुरा की जगह दूसरा गांव देने की मांग रखी । तत्काल राणा ने मांग मंजूर करली और माडपुरा के बदले बाराहो गांव दिया । जिसका परवाना निम्न है । तांबा पत्र दिया था ।

"नकल तांबा पत्र"

"श्री रामो ज्यति"

श्री गणेशप्रशादातु श्री एकलिंग प्रसादातु

(सही)

महाराजाधिराज महाराणा श्री जैसिंघजी आदेशांतु राय भगवानदास रार्जासघोत कस्य ग्राम आधार मय्या कीधो गाम वाराहो परगने गोढवाड़ रे गांव माड़पुरा रे बदले प्रत हुवे । साह रामसिंघ लिखंतु पंचोली इन्द्रभाण दयाल दासोत संवत् 1750 ब्रीखे काती सुद 4 रीक ।

"अमल की चिठ्ठी"

श्री गणेश प्रशादातु श्री एकलिंग प्रशादातु

(सही)

स्वस्ति श्री जस नगर सुथाने महाराजधिराज महाराणा श्री जैसिंहजी आदेशांतु गांव वाली सवीत गरा कस्यं ।

अप गांव वाराहो राय भगवानदास है आधार मया हुवो छै। सो थे दरबार रा आदमी इणारी साथे मोकलने अमल कराव दीजो। लागत री चोलण री करो मती। प्रवानगी जोशी ताराचन्द संवत् 1750 ब्रिखे मिगसर वदी 2 सिनुं।

तथा महाराणा जैंसिहजी के देहान्त पर जब अमरसिहजी गद्दी पर बैठे तब अपने पूर्वज रायमलजी की प्रतिज्ञा अनुसार दिवान भगवानदासजी को 50 बीघा जमीन भेंट की थी।

"श्री रामो ज्यति"

श्री गणेश प्रशादातु — श्री एकलिंग प्रशादातु

(सही)

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथांने महाराजधिराज महाराणा श्री अमरसिहजी आदेशातु गांव वाराहा गोडवाड़ रा पटेला लोगा कस्य।

अप्र गांव चौधरी भगवानदास उत सो थी पछे मया कीधी है। गांव डायलाणा माहे धरती बीघा 50 पचास टीला री पावे सो गांव वाराहो मया किधो। ती माहे भरे लिधी। तागीर कुंवर हिम्मतसिहजी परवानगी पंचोली दामोदरदास संवत् 1757 ब्रिखे प्रथम फाल्गुन सुद 2 गुरुवार।

इसी प्रकार अमरसिहजी बाद उनके पुत्र संग्रामसिहजी ने भी अपने पूर्वजों की प्रतिज्ञा निभाई।

"श्री रामो जयति"

श्री गणेशप्रशादातु — श्री एकलिंग प्रशादातु

(सही)

महाराजाधिराज महाराणा संग्रामसिहजी आदेशातु, चोधरी भगवानदासजी राजसी रा कस्य।

अग्र ग्राम मय्या किधो धरती बीघा 50 ग्राम डायलाणों बड़ो परगणे गोढवाड़ रे पटे सोनगरा मोहकमसिंहजी उदे भाणोत रे जणी माहे पड़ेत धरती मय्या किधी सूं कूड़ी न वो दिवावसी। परवानगी पंचोली बिहारीदास संवत् 1768 माह सुदी 2 भोमे।

दिवान भगवानदासजी ने उदयपुर महाराणा से सम्मान प्राप्त किया था।

समवे बीह सनमान, पति मुरधर चितोड़ पति।
जो जाणिया खण तण, भाग विलंद भगवान ।।

राठोड़ दुर्गादासजी, दिवान भगवानदासजी को पुत्रवत समझते थे। एक बार दुर्गादासजी ने अकबर को अपने पिता के खिलाफ करना चाहा। लेकिन अकबर को इस चाल का पता लग गया और वह दुर्गादासजी तथा भगवानदासजी के खिलाफ हो गया। अकबर ने गोडवाड़ के गांवों में लूट खसोट करना आरम्भ कर दिया। भगवानदासजी उस समय डायलाणा में ही थे। यह बात जब महाराजा अजीतसिंहजी को मालूम हुई तो उन्होंने पत्र लिखा।

"श्री परमेश्वरजी"

श्री कृष्णजी

तलवार (सही)

सिध श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिंहजी वचनातु राय भगवानदास राजसिंघोंत दीसे। सु परसाद वाचजो। अठारा समाचार भला छे थोहरा देजो।

तथा अठे गोडवाड़ में फिसाद छे तिण सूं थो रद बदल तुर्कों सूं करने थांहरा माणसा ने बिलाड़े ले जाओ। थांने हुकम छे। मंहरा खासा छोरू छो। लिखावत छे हमांसू काबू वणों

सो करजो हुकम छे। संवत् 1752 रा जेठ सुदी 3 मु. घाणाराव श्री मुखे।

जब अकबर डायलाणे पर चढ आया तो भगवानदासजी ने मारवाड़ व गोढवाड़ के वीरों को इकट्ठा कर उससे युद्ध किया। अपने बाल बच्चों (माणसों) को तो पहले ही बिलाड़ा भेज दिया था। युद्ध भयंकर हुआ। आखिर अकबर हार कर भाग गया। सबका दुख दूर हुआ। जनता सुख चैन से रहने लगी।

अकबर सुज लागाह, शिर छत्र आया सांभले।
डायलाणे भूपाल दे, भिड़ अरिघट आघाह ।।

इस युद्ध में दिवान भगवानदासजी ने जो बहादुरी दिखाई थी, उनकी प्रशंसा निम्न शब्दों में की गई है।

त्रजड़ां बल तो पान, आघोहिज उड़ादियो।
कम धज धिन कहवाड़ियो, भलो भलो भगवान ।।
शोबा सगला सार, मारू लड़ मेटियो।
भिड़ पायो भूपालदे, इण विध जस अणवार ।।

इस युद्ध से औरंगजेब भी खुश हुवा था तथा महाराणा ने भी प्रशंसा की।

राजी होय मन राण, शाह ओरंगशाह वासियो।
पूगो इम सम दायरे, दुनिया जस दिवाण ।।
अरघे भुज अगजीत, भुज जै सिंह अरघे मुपाणी।
भागीरथ निकलंगभड़, राखे कुलवट रीत ।।
बीखो कियो वरवीर, अजमल छल किधो अभंग।
शाम धरम पालण सुवल, नरा चढावण वीर ।।

औरंगजेब खुश होकर दिवान भगवानदासजी को बुलाकर मनशब देना चाहता था। लेकिन दिवान भगवानदासजी

महाराजा की आज्ञा के बिना बादशाहा के पास नहीं गये। इस पर औरंगजेब ने घर बैठे ही मनशब भेजा था।

घर बैठा घरण जाण, मनशब औरंग मेलियो।
भुज पूजो भगवान रा, बड़ा करे बाखाण ॥

हालांकि औरंगजेब मुसलमान तथा भगवानदासजी का दुश्मन था। लेकिन भगवानदासजी ने अपनी योग्यता तथा वीरता से मनशब प्राप्त किया था। एक बार तुर्कों ने अचानक धोखे से डायलाणा पर हमला कर दिवान भगवानदासजी का धन माल लूट लिया था। इस सम्बन्ध में महाराजा अजीतसिंहजी ने भगवानदासजी को हिम्मत बंधाई थी।

"श्री परमेश्वरजी"

तलवार सही)

सिध श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिंहजी वचनातु चोधरी भगवानदास राज सिंघोत दिसे सु प्रसाद वाचजो। अठारा समाचार भला छे थांरा देजो। तथा अरदास थांहरी आई। हकीकत मालूम हुई। मता लाख री लूटाणी। तिणरी तो थे हकीकत तफसीलवार करेसा तरे म्हें सूं जाहर हुसी ने धरती में चेन हुयां सारी ही पाछी वाल स्यां। चाकरी की धेरी ने अरज लिखी थी। सूं सारी खरी छे। ने रावतमुकन्ददासजी पिण मांसू मालम वार दोय चार की छे। सूं थाहरा घर बराबर पिण माहरे कोई न छे। चाकरी री भरपावसी। ने वले माहरा दिल में निवाजसरी छे। सू ही श्री परमेश्वरजी करसी तो वेगी पावसो हमार रा दिया उपरे निजर मत धरो। बड़ी निवाजसरी उम्मेद राखो। दिल में कुछ मत विचारो। म्हारा खास छोरू छो। खातर जमा राखजो। संवत् 1753 रा चेत सुद 9।

महाराजा अजीतसिंहजी तो भगवानदासजी पर बहुत खुश थे। साथ ही दुर्गादास और भगवानदासजी के आपसी सम्बन्ध बहुत प्रगाढ थे। जिन दिनों महाराजा अजीतसिंहजी व दुर्गादासजी के दुख के दिनों में दिवान घराने ने जो सहायता की थी, उसी हेतु सादड़ी इजारे में दी हुई थी।

"श्री परमेश्वरजी सत छे"

स्वारूप श्री राज श्री भगवानदासजी जोग्यराज श्री दुर्गादासजी लिखंतु जुहार वाचजो। अठारा समाचार श्री परमेश्वरजी रा परताप सूं भला छे। राज सदा भला चाहीजे। राज घणी बात छो। राज उप्रांत कोई बात न छे। अप्रंच कागल राज रो आयो। समाचार पूगीया राज कोठारी ताराचंद साथे हकीकत कहाड़ी थी। सो मांसु मालूम कीवी राज खातर जमा राखजो। राज राजी हूं सौ सो करसां और राज रो घर छे। अप्रंच सादड़ी इजारे लीवी छे। जिणरो राज आदमी मेल ने भली भांत सूं जाबतो करावसी। ने हासल आवादान करावजो। इजारे छे तिण सूं कूब बधसी सो तो राज रो छे। ने इजारो छे ने इजारो हिज पूरो पड़सी तो भली बात छे। इजारा में कुछ घटसी तो महे निशा करावसा। वलता कागल समाचार वेगा देजो। संवत् 1762 रा आसाढ़ द्वितीय वद 3

दुर्गादासजी और भगवानदासजी के आपसी घरेलू सम्बन्धों की तो प्रशंसा का वर्णन ही नहीं किया जा सकता है। यहां तक कि जब दुर्गादासजी की पत्नि व पुत्री भगवानदासजी के पास ही रहते थे। दुर्गादासजी की पुत्री का सम्बन्ध दुर्गादासजी से पूछे बिना ही उदयपुर के महाराजकुमार तेजकरण के साथ कर दिया था। दुर्गादासजी को जब ज्ञात हुवा तो उन्होंने बहुत खुशी

जाहिर की। तथा शुभ-लग्न में दुर्गादासजी की गैर मोजूदगी में बाईजी का विवाह बड़े धूम धाम से कर दिया व खूब दहेज दिया। बारातियों की खूब खातिर की। उसके सम्बन्ध में महाराणा श्री अमरसिंहजी ने पत्र लिखा था।

"श्री परमो जयति"

श्री एकलिंग प्रशादातु

श्री गणेश प्रशादातु

(सही)

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी आदेशांतु चोधरी भगवानदासजी कस्य।

अप्र अरदास थांरी आयी। समाचार मालूम हुवा। हुकम हुवो थो सो विवरो वे। कुंवर तेजकरण थां कने (राठोड़ दुर्गादासजी है) लीखियो सो पण मालूम हुवो। अब कुंवर लाल परणावा आया है सो कहे जिणी बात रो घणो जतन रखावजो। संवत् 1762 रा आसाढ़ वद 5

बाईजी के विवाह में दुर्गादासजी की गेर मोजूदगी में बरात की जो खातर की गई थी, उससे महाराणा खुश होकर भगवान दासजी को पत्र लिखा था।

"श्री रामो जयति"

श्री गणेश प्रशादतु

श्री एकलिंग प्रशादतु

(सही)

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी आदेशांतु। चोधरी भगवानदास कस्य।

अप्रं कुंवर लाल परणवा आया सो आछी जाबता। किधी सो मुजरो हुवो। संवत् 1762 रा आसाढ़ सुद 15 सिनु

विवाह के बाद पुनः बाईजी को बिलाड़ा ही लाया गया था। महाराणा अमरसिंहजी इस कार्य से बहुत खुश हुवे और दिवान भगवानदासजी को एक हवेली बख्सीस की थी।

"श्री रामो जयति"

श्री गणेश प्रशादातु श्री एकलिंग प्रशादातु

(सही)

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री अमरसिंहजी आदेशांतु चोधरी भगवानदासजी कस्य।

अप्रं हवेली सारू जायगा कोट माहे बाल सथी उतम करे। मया किधी। लांबी गज 81 इकयासी चोड़ी गज 52 बावन इणी जायगा ठा. भगवानदास रा बेटा पोता थी कोई बीलवा पावे नहीं प्रवानगी मसाणी चुत्रभुज संवत् 1765 अखे पोह सुदी 5 री सु.

महाराजा अजीतसिंहजी को दिवान भगवानदासजी पर इतना भरोसा था कि भगवानदासजी किसी को जमीन या बेरा दे देते या उससे ले लेते तो महाराजा उस बात को मान लेते थे।

"श्री परमेश्वरजी" श्री महाराजाजी सहाय छे।

सिध श्री बिलाड़ा को टापते चोधरी भगवानदासजी योग्य जहांनाबाद थां भंडारी राव श्री खीवसीजी लिखवंत जुहार वाचजो अठारा समाचार श्री जी रा प्रताप करने भला छे थांरा सदा भला चाहिजे थे म्हारे घणी बात छो। थां उप्रान्त कई बात न छे। सो कागद मे की की मनवार लिखा अप्रच पातशा ही घणा मेरबान छे। थाहरो बड़ो जलूस तलूकात कारण कुरब हुवो। सु थे हकीकत सामलीज हुसी फेर मूता बगताजी रा कागद सूं जांण सो' अप्रच मूता तेजा भागचन्द

नूं बीलाड़ा में धरती दिराई सूं इण जाहिर कियो के भगवान दासजी दीवी छे सो हमें इणरी धरती आगे दीवी छे। तिण माफक मापने पटो कराय देजो ने धरती री खेंचल कोई करे तिणनूं मने करजो। 'वलता कागल देजो। माह सुद 2 संवत् 1772 लिखे।

जब महाराजा अजीतसिंहजी का स्वर्गवास हो गया व महाराजा की गद्दी पर अभयसिंहजी विराजे तभी से वे दिवान भगवानदासजी पर प्रसन्न थे। उन्होंने अपने पिता के दुख के दिनों में की गई सहायता से प्रसन्न होकर एक गांव दिया था।

श्री कृष्णजी की तलवार

"सही"

स्वारूप श्री महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिंघजी महाराज कुंवार श्री अभेसिंहजी वचनांतु तथा भगवानदास राजसिंघ लिखमीदासोत नूं मया करने गांव 1 प्रगने जोधपुर रो इनांम दाखल इनायत कियो छे ने आईजी नूं चढायो छे सु संवत् 1764 री सांवणू थां अमल पावसी विगत गांव-नांदण तवे पीपाड़ आगे खालसो थी रेख सुं 3001) री (विखा में चाकरी किधी तिणसू निवाजियो) 1 गांव रेख 3001) रु. संवत् 1764 रा काती वद 8 मु. गांव तखतगढ जोधपुर हुवे श्रीमुख प्रवानगी मुकनदास सुजाण सिघोत ॥

दिवान भगवानदासजी के सांत रानियां थी (1) गजराकंवर परमार (2) जतनकंवर पिड़ीयार (3) अतसुखदेभायलणीजी (4) गेराकंवर गेलोत (5) सीताकंवर चंदरावत (6 सुगणा कंवर सांखली (7) सायरकंवर परवार। तथा आपके नव पुत्र थे। (1) अनोपसिंहजी (2) कल्याणदासजी (3) चंदरभाणजी (4) मवेदासजी (5) मुकनदासजी (6) हिमतसिंहजी

दिवान श्री कल्याणदासजी

(7) केसूदासजी (8) आणंदकंवरजी (9) अभयसिंहजी। सबसे बड़े कल्याणदासजी थे। संवत् 1773 के वैशाख वद 7 शनिवार को मामूली रोग से दिवान भगवानदासजी का देहान्त हो गया था। आपके पीछे आपकी सात राणियां सती हुई थी तथा चालीस भक्तों ने आत्म समर्पण किया था।

"दिवान कल्याणदासजी"

जन्म—संवत् 1734 आषाढ़ सुद 10
पाट—संवत् 1773 वेसाख सुद 7
विवाह—संवत् 1758
स्वर्गवास—संवत् 1792 सावण वद 13

दिवान भगवानदासजी के स्वर्गवास होने की खबर जब महाराजा अभेसिंहजी को मिली तो वे बहुत दुखी हुवे और कल्याणदासजी को धेर्य बंधाया और पत्र लिखा।

॥ श्री परमेश्वरजी सहाय छे ॥

मोहर सही

स्वारूप श्री अनेक सकल ओपमा विराजमाना ने महाराजाधिराज महाराजा श्री अजीतसिंहजी महाराज कंवार श्री अभेसिंहजी देव वचनातु चोधरी कल्याणदास दीसे सु प्रसाद वाचजो तथा अरज दासत आई ने भगवानदास देह छोड़ी तिण री अरज लिखी थी। सूं मालम हुई ईश्वर रो चाह्यो थो सो हुवो। तूं किणी बात री दिलगीरी मत करे। म्हे थाहरे बाहत मेहरबान छा। तूं खातर जमा राखने हजूर आऐ हुकम छे। संवत् 1773 रा प्रथम जेठ सुद 10 मुकाम गांव पीवर तोड़े।

इसी प्रकार का पत्र उदयपुर महाराणा संग्रामसिंहजी ने लिखा था।

।। श्री रामो जयति ।।

श्री गणेश प्रशादातु श्री एकलिग प्रशादातु

'सही'

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री संग्रामसिंहजी आदेशातु । चो. कल्याणदास कस्य ।

अप्र अरदास आयी तथा चौधरी भगवानदासजी रामसरण हुवा तिणरो विवरो लिख्यो । सो मालूम हुवो । चिन्ता मत करो । थे दरबार रा हो । संवत् 1773 रा प्रथम जेठ वदी 8 भोमे ।

कुछ समय बाद महाराजा जालोर बिराजते थे । अतः दिवान कल्याणदासजी को जालोर बुलाया । वहीं पर दिवान साहब के डेरे पधार कर मातम पुरसी की रस्म अदा की थी ।

मातम पुरसी की विगत—

1726) श्री जी महाराजजी मुहकांण रे वास्ते राज श्री कल्याणदासजी रे डेरे पधारिया इतरो निजर किधो ।

1000) नकद अेन रावली सुपारी तासली में घात ने मुंहडा आगे मेलिया ।

601) घोड़ा 2 निजर कीधा—विगत ।

300) खरीद तुरकी पीलो दिल्ली रो ।

301) बछेरो बाजराज खाना जाद ।

120) बहलीया दोय वगेड़ा देसी ।

5) निछरावल

———

1726)

———

श्री जी फुरमायो थे छोरू छो खातर जमा राखजो । ने साथे उमराव था तिरण कह्यो कल्यारणदासजी थे बड़ा बखतावर ने श्री जी थांसू बहुत मेहरबान हुआ । वासरो वागो श्री जी पहरियो । था ने जरकस री पाग हीरा-मोती पहरीया बड़ो बरणाव ने श्री कल्यारणदासजी रे डेरे जायगा में हुतो पाछा आधी उपर घड़ी 4 बाजी तरे पधारिया । श्रावरण वद 2 रविवार मुकाम जालोर संवत् 1774

दिवान कल्यारणदासजी का विवाह कंवर पद में हुआ था, उस समय दुर्गादासजी व अजीतसिंहजी दुख के दिन काट रहे थे । इस पर भी उन्होंने न्योता भेजा था और बहुत प्रसन्नता जाहिर की थी ।

225) श्री महाराजा अजीतसिंहजी जालोर से भेजे हस्ते सांखला कान्हा ।

25) सिरपाव 7) मिसरू 7) पांगा कस्बी ।

10) दुर्गादासजी भेजिया हा. मूता सुखा ।

इसी प्रकार उदयपुर से न्योते आये थे ।

301) महाराणा अमरसिंहजी भेजिया ।

घोड़ो 1 तुर्की नीलो कमेत कीमत 300)

11) पागा 5) बाशतो 5) पांगा सूथरण दोय ।

महाराणा उदयपुर दिवान कल्यारणदासजी पर बहुत प्रसन्न थे । महाराणा ने पांच गांव काट कर कल्यारणपुरा गांव बसाने की आज्ञा देकर बख्सीस किये थे ।

"श्री रामो जयति"

श्री गरणेश प्रशादातु

श्री एकलिंग प्रशादातु

(सही)

महाराजाधिराज महाराणा श्री संग्रामसिंहजी आदेशातु चोधरी कल्याणदास-भगवानदास कस्य। ग्राम मया किधी विगत।

गांव ओडावडया रो खेड़ो उजड़ है से इ चार गांमा री कांकण मांहे बसावोगा-प्रगने गोढवाड़।

नवो हुकम विगत गांमा रा कांकड़ जण विचे। 1 गांम खीमेल 1 गांम देवतरा 1 गांम साडेरा 1 गांम ब्राह्मी 1 गांम अकवाड़ो।

इण खेड़ा रो नाम कल्याणपुरो हुकम परवानगी पंचोली बिहारीदास एवं संवत् 1771 वर्षे आसाढ़ सुद 11 शुभं।

यह गांव कल्याणपुरा-कल्याणदासजी को कुंवर पदवी में ही मिला था। जिससे इस गांव को बसा न सके थे। जब दिवान की गद्दी पर बिराजे तब दूसरा परवाना दिया गया था।

एक बार श्रावण के महिने में दिवान कल्याणदासजी जोधपुर महाराजा के पास ही थे। उस समय बादशाह ने महाराजा साहब को दिल्ली बुलाया था। महाराजा साहब ने दिवान साहब को भी साथ चलने की आज्ञा दी। दिवान साहब ने साथ चलने की आज्ञा को स्वीकार किया और कहा कि मैं पहले बिलाड़ा जाकर काम काज देख आऊं। फिर आपके साथ चलूंगा। इसके दूसरे दिन ही रक्षा बन्धन का त्यौहार था। रक्षा बन्धन के दिन महाराणी च्वाणजी ने दिवान कल्याणदासजी को राखी बन्ध भाई बनाया था। महाराणीजी ने बडारन नाथी के साथ दिवान साहब के राखी भेजी थी। कल्याणदासजी ने सहर्ष राखी स्वीकार की और 115) रु. नाथी को दिये। तथा अपनी धर्म बहिन महाराणी च्वाणजी के आठ मोंहरे सवाग की भेजी। बाद में महाराजा से बिलाड़ा आने की आज्ञा मांगी। इस पर महाराजा

ने कहा आज रूक जाओ । कल मैं तुम्हें हाथी इनायत करूंगा । फिर जाना । दूसरे दिन संवत् 1774 के भादरवा वदी 5 शुक्रवार कोमहाराजा ने दिवान कल्याणदासजी को हाथी इनायत किया ।

250) दिवान कल्याणदासजी को हाथी इनायत किया ।

नजर	निछरावल	हाथी पर सवारी कर डेरे आये ।
200)	50)	3)

गुड़ बांटा	हाथी के तिलक महावत को	फुटकर
1)	1)	1)

हाथी इनायत होने के बाद दिवान साहब ने बिलाड़ा आने की आज्ञां मांगी । महाराजा ने खुशी से आज्ञा प्रदान की । दिवान साहब अपनी हवेली पधारे और खूब खुशी जाहिर की । ठाकुर लोगों ने निछरावल की । उसके बाद हाथी पर सवार होकर बिलाड़ा पधारे । बिलाड़ा नगरवासियों ने खूब खुशी मनाई और गाजों बाजों से दिवान साहब को बधाया । कुछ दिन बिलाड़ा रहने के बाद वापिस "दिल्ली जाने हेतु" जोधपुर पधारे । और जाकर महाराजा से मिले ।

महाराजा साहब दिवान साहब को साथ लेकर दिल्ली के लिये प्रस्थान किया । जोधपुर से रवाना होकर बिलाड़ा पधारे । बिलाड़ा आकर महाराजा ने आई माता के दर्शन किये व ज्योति में घृत भेंट किया । बिलाड़ा से रवाना होकर आगे रास्ते में मुकाम करते हुवे दिल्ली पहुँचे । तीन चार माह तक दिल्ली में बादशाह के पास रहे । उन्हीं दिनों उदयपुर महाराणा का पत्र मिला । जिसमें दिवान साहब को उदयपुर बुलवाया था । पत्र प्राप्त होते ही दिवान साहब महाराजा की आज्ञा ले उदयपुर के लिये रवाना हुवे । उदयपुर पहुंचने पर महाराणा ने बहुत खुशी जाहिर की ।

तथा 5) रु. नजर किये। साथ ही एक बघेरा अबलख ढाई साल का भेंट किया। उदयपुर में खास उमरावों में बैठक दी। उस समय कुंवर पदमसिंहजी भी साथ थे।

दिवान कल्याणदासजी चित के बड़े उदार थे। व खर्च खाता तथा मेहमानवाजी में दिल खोल कर खर्च करते थे जिसका प्रमाण है। उनकी पुत्री कुशलकंवर के विवाह में जो खर्चा किया था उसका विवरण निम्न प्रकार है। यह विवाह संवत् 1782 के वेसाख सुद 15 को हुआ था।

गुड़ 572) मण रु. 2069)रु०, घीरत 46।) मण परत 4।। सेर लेखे 4098) रु., मूंग 771) मण प्रत 1) मण लेखे 771) रु., चीनी 118) मण, दलिया 533) मण बाजरी 460) मण, मेवा 121 सेर, इतना तो खाद्य पदार्थ व्यय हुआ। रोकड़ रुपये लाखों खर्च हुवे। साथ ही इस विवाह में निम्न प्रकार न्योते आये।

450) रु. महाराजा अभेसिंहजी।

340) महाराजाधिराज बखतसिंहजी नागोर से भेजे।
निवता में घोड़ो 1 नीलो, सिरपाव, पाग, पोतिया खीनखाब

500) रु. महाराणा संग्रामसिंहजी ने उनके प्रतिष्ठित मित्रों के साथ भेजे। श्री महकरणजी ने 1 घोड़ा भेजा।

90) रु. मेड़तिया ठाकुर अभेराजजी सवाग के साथ 90)रु रोकड़

100) रु. राज देवकरणजी घोड़ो एक ने नकद 100) रु.

111) रु. राजश्री चेनकरणजी बोडाणा वारसलजी रे साथे।

20) रु. बोडाणा वारसलजी रा घरू।

12) रु. राठोड़ रूगनाथसिंहजी।

चवाण प्रतापसिंहजी चत्र भुजोत घोड़ो भेजियो।
महाराणी कछवाहजो सवाग दो और रोकड़ रुपया
भेजिया।

महाराजा बखतसिंहजी दिवान कल्याणदासजी पर बहुत प्रसन्न थे। एक बार महाराजा बिलाड़ा पधारे तब दिवान साहब ने खूब स्वागत किया। पीला महल में ठहराया। और बहुत अच्छी गोठ दी। जिसमें 500) खर्च हुवे थे। उन्हीं दिनों एक उर्जा नामक डाकू मारवाड़ व नागोर के गांवों में डाका डाला करता था। उस डाकू से जनता अत्यन्त भयभीत थी। उस डाकू को जिन्दा या मुर्दा पकड़ने के लिये महाराजा ने ईनाम घोषित किया था। जब यह बात दिवान कल्याणदासजी को मालूम हुई तो तुरन्त उरजा डाकू का पीछा कर उसे मार डाला। जिससे महाराजा बहुत खुश हुवे और कहा कि तुम्हारा घराना स्वामीभक्त रहा है। मैं तुमसे बहुत खुश हूँ। ऐसा कह महाराजा ने 220 रू. ईनाम के दिये। उसके कुछ दिन बाद महाराजा बिलाड़ा पधारे। उन्हें भूलणियां महल में ठहराया गया था। खूब खातिर की। महाराजा ने खुश होकर बिलाड़े के सर्वोपरी बेरे (भादरवा व बीजूड़िया) बख्सीश किये।

कुछ समय बाद एक बार महाराजा दिवान कल्याणदासजी को साथ लेकर राजगढ पधारे। राजगढ पहुंचने पर पीछे से पत्र मिला कि मारवाड़ में लूट खसोट मच गई है। ऐसा पत्र प्राप्त होते ही महाराजा ने दिवान साहब को तुरन्त मारवाड़ भेजा। दिवान कल्याणदासजी ने मारवाड़ आकर लूट खसोट करने वालों को मार भगाया। जिससे पूरे मारवाड़ में शान्ति हो गई। तब तक महाराजा जहांनाबाद पधार चुके थे। जब जहांनाबाद में महाराजा को खबर मिली कि लुटेरों को कल्याणदासजी ने मार

भगाया है तो महाराजा ने खुशी जाहिर की और जहांनाबाद से ही सोने के लंगर 300) रु. के भेजे। खाली वीर ही नहीं, कल्याण दासजी खेती में भी दक्ष थे। महाराजा को इन पर बहुत भरोसा था।

"श्री परमेश्वरजी सहाय छे"

मोहर सही हुकम से

स्वारुप श्री राज राजेश्वर महाराजाधिराज महाराजा श्री अभेसिहजी देव वचनांतु। चोधरी कल्याणदास दीसे सु प्रसाद वाचजो।

तथा थोंहरी हकीकत भंडारी अनोपसिंघ लिखी छे। हासल रो घणों जाबतो करे छे। इण बात में थोंहरो मुजरो हुवो। फेर जाबतो पोहचने करजो। अठारी तरफ सूं खातर खुस्याली राखजो। हुकम छे। संवत् 1784 रा मिगसर वद 10 मु. जहांनाबाद।

उदयपुर महाराणा और जोधपुर महाराजा के रियासती कामकाज कल्याणसिहजी की सलाह से हुआ करते थे। दोनों रियासतों को आप पर पूर्ण विश्वास था। जिसका प्रमाण निम्न पत्र से मिलता है।

"श्री रांमजी"

सिध श्री डायलाणा सुभ सुथानेर सरब ओपमा छोछरी जी श्री कल्याणदासजी कंवर पदमसिहजी जोग्य श्री उदेपुर थी धाव भाईजी श्री नगराजजी लिखंतु जुहार वांचजोजी। अठारा समाचार भला है। राज रा सदा भला चाहिजेजी। राज म्हारे घणी बात छो। सदा हेत इकलास रखावो। जिण था विशेष रखावजोजी। राज रे ने दिखणियां री फोज रे राड वेवारो विवरो लिखियो थो। अह समाचार अठे पण आया है जी।

अठे राज रो दरबार जाण लड़ाई रो विवरो और दूसरा काम रो हमेसां विवरो लिखजो। अठे थांसू दुजी बात न छे। मिती आसाढ सुद 13 संवत् 1785 रा।

दिवान कल्याणदासजी तीर अन्दाज भी बहुत अच्छे थे। तथा आपके कंवर पदमसिंहजी भी अच्छे बाणबली थे। उदयपुर महाराणा-कंवर पदमसिंहजी से तीर चलाना सीखते थे। अतः कंवर पदमसिंहजी तीरन्दाजी में महाराणा के गुरू माने जाते थे। विजयादशमी को हर वर्ष तीरन्दाजी की हाजरी देने कुंवर पदमसिंहजी व दिवान कल्याणदासजी उदयपुर जाया करते थे। यदि किसी कारण विजया दशमी के पर्व पर उदयपुर नहीं पहुंच सकते तो महाराणा तत्काल पत्र लिखते थे। पत्र की नकल निम्न है।

"श्री रामो जयति"

श्री गणेश प्रशादातु श्री एकलिंग प्रशादातु

"सही"

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री संग्रामसिंहजी आदेशातु चोधरी कल्याणदास कस्य।

अप्रं थे हजू अरज मालम करे गया था। सो दशरावा. उप्र हूं तथा म्हारो बेटो तीरंदाज है। अवल हिरण ले हजूर आउंगा। सो न तो थो न थारो बेटो न हिरण आया। इबी प्रवाना दिष्ट थे तथा थारों बेटो ने अवल हिरण ले हजूर आवजो। ढील मत करो। संवत् 1776 वर्षे दुतिक आशोज वदी 77 शुकरवार सुभ्र।

दिवान कल्याणदासजी वीर, परोपकारी बहुत थे। उनकी प्रशंसा जितनी की जाय थोड़ी है। हर क्षेत्र में आप दक्ष थे। उनकी विशेषता की प्रशंसा निम्न छप्पय में की गई है।

कमधजियो कलियाण, करे सु सबद धर कीधो।
पोखे लखां अपार लखां, मुहडे जस लिधो ।।
खड़ो न होवे खंभ, शाहाधाका आलम सह ।
कर बटका कलियाण, ताम नभ सुख किधो तह ।।
दिन 2 प्रवाड़ किध दुभ्फल, सुख सैंणा सामावियो।
कोढिया किया निकलंक तन, सरणाया दुख कांपियो ।।
अनत प्रवाड़ा इसा, किया कमधज कलियाणे।
परचा दिया अपार, जके सेह आलम जाणे ।।
वचन साच सिधवंत, बिजड़ बुधवंत महाबल।
इल कंको आचार खंगा, खोगाला किया खल ।।
अणथक अछेह अणडिग, अघट वल अखूट नित प्रतवरे।
बीलपुर नगर घर बास, बंध कलो एम राजस करे ।।

उदयपुर महाराणा जगतसिंहजी अपने पूर्वज रायमलजी की प्रतिज्ञानुसार दिवान कल्याणदासजी को 50 बीघा जमीन भेंट की थी। जिसका परवाना निम्न है।

"श्री रामो जयति"

श्री गणेश प्रशादातु श्री एकलिंग प्रशादातु

'सही'

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री जगतसिंघजो आदेशांतु-चोधरी कल्याणदास भगवानदास कस्य।

अप्र धरती बीघा 50 पचास गांव डायलाणों परगने गोढवाड़ रे पटे राठोड़ अभेराम सांवल दासोत रे जंणी माहे पड़त धरती टीला रो पावो। सो पटायत राठोड़ अभेराम भरे देगा। पेहलो पीढी च्यार महाराणा श्री राजसिंघजी थी सो

महाराणा श्री संग्रामसिंघजी सूधी रा प्रवाना निजर हुवा । जंणा प्रवानां प्रमाणो मय्या कोधो । सो कूडो नवो दिवायल्यो गया । पड़त धरतो पत दाखल मया कोधी । प्रवानगो पंचोली बिहारीदास संवत् 1792 वर्षे सांवण वदी 4 सिनु ।

दिवान कल्याणदासजी के बड़े पुत्र दोलतसिंहजी जो कठोर स्वभाव व दिवान पद के योग्य न होने के कारण उमरावों ने सलाह कर उन्हें उतराधिकारी न बनाये जाने के विचार से पहले ही ईडर दरबार के पास भेज दिया था । दोलतसिंहजी फिर ईडर दरबार के पास ही रहे । वे ईडर की फोज में काम करते थे । एक समय युद्ध में दोलतसिंहजो का देहान्त हो गया । उनके पीछे उनकी पत्नि सती हुई थी ।

सुत हुवो दोलतसिंघ, उचभ भक्क रिण धींग ।
तिण करे तीरथधार, मंड मानपुर मंझार ।।
पिय संग परमार, सझी सही सत सिणगार ।
कही कंवर चोसंग कीध, दिल ग्रमल होते दधि ।।
तेजा सधू तिणवार, जाय मिली सुरग मंझार ।

दिवान कल्याणदासजी को ग्राई माता का बहुत इष्ट था । ग्राई माता की कृपा से वे जो बात कह देते वो सत्य होती थी । ग्राप भविष्य वक्ता भी थे । उदयपुर महाराणा-कल्याणदासजी की बात को मिथ्या नहीं मानते थे । दिवान कल्याणदासजी ने ग्रपनी मृत्यु की भविष्यवाणी पहले ही कर दी थी । जो कि सत्य सिद्ध हुई ।

संम्मत सतर सईक, मास सांवण वद तेरस ।
कलोताम सुरलोक, चको इंद दूजे एरस ।।
मांघ सीख रांणसू, कहे परलोक तणी कथ ।
ग्रवावसां ग्रग ग्रबे, सती त्रण हसी करे सथ ।।

इम कहे आय बीलह नगर, रेण करे ध्रम पुनिरुचिर।
सुभ प्रात समें वोहतो सुरग, अवतारी आई उचर ।।

दिवान कल्याणदासजी के पांच रानियां थी। (1) कायमदे भटियाणी (2) केसरकंवर सांखली (3) किसनाकंवर परमार (4) दाखांकंवर चवाण (5) कसुंबा कंवर पीड़ियार। तथा चार कंवर थे। (1) चुतरसिंहजी (2) पदमसिंहजी (3) विजेसिंहजी (4) केनदासजी (5) दोलतसिंहजी। इन सबमें दोलतसिंहजी बड़े थे। लेकिन उन्हें पहले ही ईडर दरबार के पास भेज दिया था जहां युद्ध में वे स्वर्ग सिधार गये थे। उनके बाद पदमसिंहजी योग्य थे जो दिवान की गद्दी पर बैठे थे। दिवान कल्याणदासजी की भविष्यवाणी के अनुसार संवत् 1792 के श्रावण वद 13 सोमवार को दिवान कल्याणदासजी का स्वर्गवास हुआ था।

"दिवान पदमसिंहजी"

जन्म—संवत् 1766
विवाह—संवत् 1790 यह पांचवा विवाह था।
पाट—संवत् 1792 श्रावण वद 13
स्वर्गवास—संवत् 1824 आसोज सुद 12 (जोधपुर में)

दिवान कल्याणदासजी के स्वर्गवास हो जाने पर दिवान की गद्दी पर संवत् 1792 को पदमसिंहजी विराजे थे। उस समय इनकी आयु 26 वर्ष की थी। बांण विद्या में तो आप अपने पिता के समय से ही निपुण थे। साथ ही जोधपुर महाराजा व उदयपुर महाराणा आप पर पहले से ही खुश थे।

दिवान कल्याणदासजी के स्वर्गवास की खबर महाराजा को जहांनाबाद में मिली थी। महाराजा साहब कल्याणदासजी को
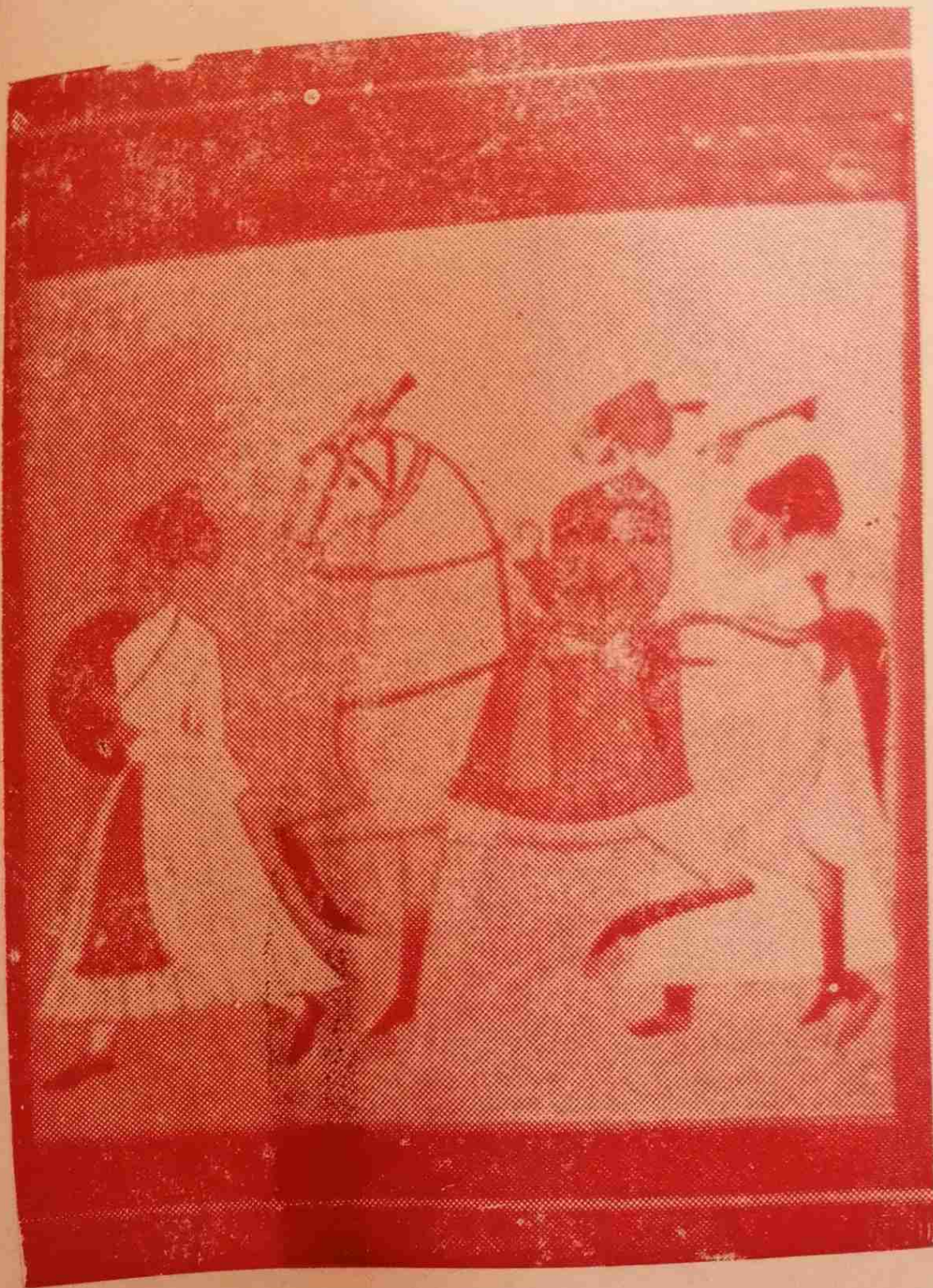
दिवान श्री पदमसिंहजी

बहुत चाहते थे। देहान्त की खबर से महाराणा ने बहुत रंज किया था और वहीं से पदमसिंहजी को पत्र लिखा था।

सिध श्री बिलाड़ा सुथाने चोधरीजी श्री पदमसिंहजी जोग्य जहांनाबाद थां मु. गोपालदास लिखंतु जुहार वाचजो। अठारा समाचार श्रीजी रा तेज प्रताप कर भला छे। राज रा सदा भला चाहिजे।

अप्रं राज माह सूं सदा प्यार हत राखो तिण था विशेष रखावसी-अप्रंच राज रो कागद आयो समाचार वाच्या राज लिखियो थो कि चोधरी कल्याणदासजी श्रावण वद 13 राम कह्यो। सू परमेश्वर सूं कोई जोर नहीं है। ईश्वर रो चाह्यो हुवो। राज लायक छे। और हकीकत सारी म्हे श्री हजूर मालूम कीवी छे। श्रीजी दिलासा फुरमाई छे। प्रवानो राज ने इनायत हुवो छे। मा. गिरधरदासजी रा कागद में घाल मेलियो छे सूं पोंहचसी म्हांसू कहणी आई सू हकीकत सारी श्रीजी नूं मालम किवी छे। राज अठारी तरफ सूं भांत भांत कुसाली रखाजो। काम काज होवे वो लिखावसी बहुड़ता कागद सदा दिरावजो। भादवा वद 9 संवत् 1792।

दिवान पदमसिंहजी ने अपने पिता कल्याणदासजी के पीछे ज्याग बहुत भारी किया था। इससे आपकी बहुत बढाई हुई थी। महाराजा अभेसिंहजी-दिवान पदमसिंहजी को मातमपुरसी की रस्म अदा करने हेतु जहांनाबाद बुलवाया था। पदमसिंहजी जहांनाबाद गये। वहीं पर महाराजा अभेसिंहजी ने नियमानुसार डेरे पधार कर मातमपुरसी की रस्म अदा की थी। घोड़ा, सिरपाव, कड़ा, मोतियों की कंठी मर्यादा अनुसार दिये। पदमसिंहजी स्वरूपवान अधिक थे। जिस समय मातमपुरसी की रस्म के समय परम्परानुसार पोशाक धारण किये हुए थे।

उस समय अत्यन्त स्वरूपवान दिखाई पड़ते थे। उस समय महाराजा साहब ने फरमाया कि तुम्हारी मोहन मूर्ति है। इसी से मैं तुम्हें मोहनदास के नाम से पुकारूंगा। यह कह महाराजा ने सब जगह यह आज्ञा प्रसारित करवा दी कि पदमसिंहजी को आज से मोहनदासजी के नाम से पुकारा जाय। तभी से आपका नाम मोहनदास पड़ा था।

"छप्पय"

इरेय सकल वडरीत, ज्याग आरंभ रचायो।
पदमसिंघ अवतार, सकलगत मृत मन भायो ।।
गंगा तीर मुकाम, महा छतरी मन रंजन।
कलश चढाय प्रतिष्ट, कीध भवके भ्रम भंजन ।।
अभिशेक प्रथम विध करदई, अब अभभाल मिलसकियो।
मरूधरां धीस दिल्लेस, जित पदम पहुंचे कुरब लिय ।।
आज्ञा लिख अजबेस, भतब अरजी दरसाई।
अभ महारा जस लोभ, वात भ्रते वे फुरमाई ।।
तबे भाण ततकाल, व्यास प्रोयत पे आवे।
खूनी गुनी समान, कही केसे भ्रम लावे ।।
जगनाथ कही ध्रम शामरी, सदा फते फुरमावसी।
कलियाण पाट पदमेसरे, मातमपुरसी आवसी ।।
महाराजा अभमाल, पदम डेरे पधराया।
मातमपुरसी कराय, अस्व निजरे गुदराया ।।
नाम जु मोहणदास, मुखां कमधेस कहायो।
दो घोड़ा सिरपाव, कड़ा मोती मन भायो ।।
दिय विदा रीत मरजाद सूं, अरठ अंब अखण कियो।
पुरबील आय हरखाय घण, मान व्यास भृत जसलियो ।।

मातमपुरसी की रस्म अदा होने के बाद जब दिवान साहब बिलाड़ा पधारे तो उदयपुर महाराणा ने उन्हें बुलाया। महाराणा पदमसिंह पर कुंवर पद से ही खुश थे। उन दिनों मेवाड़ के रजवाड़ों पर टका की लाग लगती थी। इस टके की लाग को दीवान पदमसिंहजी ने उदयपुर महाराणा से माफ करवाई थी। जिसका प्रमाण निम्न परवाना से मिलता है।

"श्री रामो जयति"

श्री गणेश प्रशादातु　　　　　　　　श्री एकलिंग प्रशादातु

'सही'

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री जगतसिंहजी आदेशातु चोधरी पदमसिंह कस्य।

अप्र थाहरे दरबार रो टको रा रु. 6001)रु० छव हजार एक हुवा था। सो माफ हुवा है। सो चोलण नहीं व्हेला। खातर जमा राखे। हजूर आवजो। थारी मरे मरजाद है। सो साबत है। प्रवानगी धाव भाई देवा संवत् 1773 वर्खे माह सुद 8

दीवान पदमसिंहजी की प्रशंसा निम्न शब्दों में की गई थी।

तखत कलारे नाम, मोहणदास महाबली।
नव खंड पृथी नाम, आई गादी ओपियो।।
सागे अंग सभाव, गत नायक भारी गुणा।
दिल उजल दरियाव, रिधधारी राजस करे।।
बड़ा लियण पाखाण, वडा वंडाला वंदिया।
जुगत सकल विध जाण, रोहित जिम मोटी रती।।

मेवाड़ में ऐसा कुरब था कि महाराणा को निवते में घोड़ा नजर करना पड़ता था। दिवान पदमसिंहजी ने भी निवते का घोड़ा नजर किया था।

"श्री रामो जयति"

श्री गणेश प्रसादातु   श्री एकलिंग प्रसादातु

'सही'

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री जगतसिंहजी आदेशातु चोधरी पदमसिंह कस्य।

अप्र अरदास आई समाचार मालूम हुवा। नोहता रे घोड़ो मोकल्यो सो नजर हुवो। संवत् 1796 वर्षे श्रावण वदी 7 वार सोम।

एक बार संवत् 1801 में गोढवाड़ के ग्राम मांडल में सीरवियों और वहां के ठाकुर के आपसी मनमुटाव हो जाने से समस्त सीरवी गांव छोड़कर कहीं अन्य जगह जाकर बस गये थे। (इसे छोडाणा कहते हैं) ठाकुर साहब के सभी बेरे पड़े रह गये। आय ठप्प हो गई। उन्होंने सीरवियों को बहुत समझाया लेकिन वे माने नहीं आखिर मांडल के ठाकुर सुरतानसिंहजी दिवान पदमसिंहजी (मोहनदासजी) के पास जाकर सीरवियों को बसाने की अरज की। दिवान साहब ने सीरवियों को समझा कर पुनः मांडल में बसाया। जिसका प्रमाण निम्न प्रवाणा है।

श्री माताजी प्रशादातु

(सही)

राजि श्री सुरतानसिंहजी कंवर श्री उम्मेदसिंहजी लीखावंतु गांव मांडल में सीरवी लोक बसता न था। तलाख थी सो ही मार राजि श्री मोहणदासजी, गांव मांडल में सीरवी लोगां नु बसाया सो अरट 1 खीदावों श्री माताजी नु केसर रो चढायो।

छे सो इण अरट रो भोग आवसी सो श्री माताजी रे केसर चढसी ओ अरट श्री माताजी रो छै। संवत् 1801 जेठ सुद 2 लीखत सुजग साख 1 मद्रचावागजी री छे।

संवत् 1807 में महाराजा रामसिंहजी बिलाड़ा पधारे थे। दिवान मोहनदासजी ने बहुत अच्छी खातिर की थी। महाराजा रामसिंहजी आई माता के मंदिर में दर्शन करने पधारे। तभी महाराजा साहब ने आई माता के केशर धूप हेतु बेरा उगणिया भेंट किया था। जिसका परवाना निम्न है।

मोहर

(सही)

स्वित श्री श्री राजराजे महाराजाधिराज महाराजा श्री रामसिंहजी देववचातु कसबे बीलाड़े सीरवीयां रे बडेर श्री आईजी रे थान दरसण नु पधारिया जद अरट 1 एक उगवणीयो दरबार री केसर नुं चढायो छे सो पसायतो वायां जावसी हुकम छे संवत 1807 रा पोष सुद 4 मु. गाव खारीये।

संवत 1820 में गोढवाड़ के 2000 सीरवी मेवाड़ त्याग कर जालोर चले गये थे। जिससे मेवाड़ की आय कम हो गई थी। इससे महाराणा जगतसिंहजी को चिन्ता हुई। उन्होंने पदमसिंहजी को पत्र लिखा कि किसी भी तरह सीरवियों को पुनः गोढवाड़ में लाकर बसाओ। सीरवो केवल आपही की बात मानते हैं। पत्र मिलते ही दीवान पदमसिंहजी तुरंत जालोर गये और सीरवीयों को समझाकर पुनः गोढवाड़ में लाकर बसाया।

"श्री रामो जयति"

श्री गणेश प्रशादातु   श्री एकलिंगजी प्रशादातु

(सही)

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री जगतसिंहजी वचनातु। चोधरी पदमसिंह कस्यः।

अप्र पड़गना गोढवाड़ रा गामा रा सीरवी छोडने जालोर जायने पाग बांधे। जालोर जांय थां सो नु बिलाड़ा थी दोड़े आवे गोढवाड रा गामा में ने सीरवीया थी साथी दिलासा करे गोढवाड़ रा गामा में थां राख्या ने जावा दीधा नहीं सो इणी बात में थारो मुजरो हुवो ने ते अरज कराई सो गांव एक दोय उजड़ पड़या व्हे ने जणी गाम में धरती घणी व्हे ने तलाब कुवा नहीं व्हे ने पड़त व्हे। दरबार माफक हासल बंद बेठतो व्हे सो मोहे सोपावतो धरती हकावे। दरबार हासल वदे सो हुकम है सो तु गाम अटकल से तो है। ग्राम सोपायगी सो गांमा री जमायत हुवा हासल आया थारो मुजरो व्हेगो। ने दिवावेगो। ने जणी गाम री जमीयत करोगो सो बांटो छूट मेल तूं कहेगो जणी प्रमाणे दे ने गोढवाड़ रा गामा रा सीरवी सारा नातत्रान है सो वोहरे बरतन सु दिलासा रा ने वरस 3 हुवा नादारी थी सो हासल उपज्यां माफक दस्तूर बधाय दीजो। प्रवानगी पंचोली छाजू संवत् 1821 वर्षे जेठ सुदी 7 रा।

दिवान पदमसिंहजी इन्दोर मल्हार राव के भी मित्र थे। वे अक्सर अपने पट्टे के गांवों में जाते थे तभी मल्हार राव से मिलते थे। मल्हार के वहां इनकी अव्वल दर्जे के सरदारों में बैठक थी। इन्दोर रावजी राजश्री मोहनदास लिखा करते थे। इन्दोर मल्हार राव के साथ आपने कई बार वीरता दिखाई थी। कुंवर

हरिदासजी कई बार आपके साथ इन्दोर जाया करते थे। रावजी हरिदासजी को बहुत चाहते थे।

दिवान पदमसिंहजी के पास एक बहुत वेगवान हाथी था। संवत् 1818 में घाव भाई जगनाथजी के विवाह में इस हाथी को मांग कर ले गये थे। लेकिन हाथी वापिस नहीं लोटाया था। इस पर महाराजा विजेसिंहजी को शिफारिस की गई तभी हाथी पुनः प्राप्तः हुआ था। एक बार आपने महाराजा की आज्ञा से दक्षिणियों पर चढाई की थी। उस युद्ध में आपने वीरता का परिचय दिया था। पदमसिंहजी की वीरता को देख दक्षिणियों ने भी दांतों तले उंगली दबाई थी। आपकी वीरता की प्रशंसा निम्न प्रकार की गई।

हे वालां हुकले कठ्ठ, पेखंडा कमाला।
गे खंभा हिन्दुले, रूले गल भिर तिरमाला।।
मद कपोल भल हले, तला खलहले ओरा।
भमर श्रुतां भयाहणे, घ्ररण मद मत रस घेंरा।।
ललवतां सूंड डूंडालियां, करे गाज नभ घरण कली।
काला पहाड़ अंगाकरी, रहे मत षट रित रली।।

इस युद्ध में महाराणा अभयसिंहजी भी साथ थे। इस युद्ध के बाद फोज सम्बन्धी कार्य से तीन नरेशों की अनुमति से मल्हार राव के पास भेजा गया था। वहां कुछ समय रहने के बाद संवत् 1795 की माह सुदी 13 शनिवार को मल्हार राव की आज्ञा लेकर वापस आ रहे थे। रास्ते में बांसवाड़ा में डेरा डाला। वहां पर रात में पं. रामजी लिखमन का भाई कई सवारों के साथ अचानक टूट पड़ा क्योंकि वह मारवाड़ से विरुद्ध था।

खूब युद्ध हुआ। अनेक योद्धा मारे गये। अन्त में पदमसिंहजी की जीत हुई। यह वृतान्त सुन महाराजा बहुत खुश हुवे।

परम्परानुसार महाराजा को होलों की गोठ देने हेतु बिलाड़ा आमंत्रित किया। महाराजा संवत् 1803 के चैत वद 7 को बिलाड़ा पधारे। यहां पर महाराजा को बहुत अच्छी होलों की गोठ दी थी। उस समय महाराजा साहब बहुत खुश हुवे और 5) रु. नजर व 3) रु. निछरावल के किये थे।

एक बार संवत् 1804 की कार्तीक सुद 13 को महाराजा श्री अभेसिंहजी ने प्रतिष्ठित सेनिकों के साथ दिवान साहब को देवगढ़ रावजी के पास युद्ध सम्बन्धी कार्य हेतु भेजा। देवगढ के रास्ते में जहां 2 रूके वहां पर उन्हें हाथी सिरपाव देना चाहा। लेकिन इन्होंने इन्कार कर दिया। देवगढ पहुंचने पर रावजी ने अच्छी खातिर की। कार्य समाप्त होने पर पुनः बिलाड़ा आये।

उदयपुर महाराणा अरसिंहजी ने भी अपने पूर्वज रायमलजी की प्रतिज्ञानुसार 50 बीघा भूमि भेंट की थी।

"श्री रामो जयति"

श्री गणेश प्रशादातु श्री एकलिंग प्रशादातु

(सही)

स्वस्ति श्री उदेपुर सुथाने महाराजाधिराज महाराणा श्री अरसिंहजी आदेशातु चोधरी पदमसिंह कल्याणसिंघोत कस्य।

अप्र धरती बीघा 50 पचास गांव डायलाणो बड़ो परगते गोढ़वाड़ रे पटे राठोड़ इन्द्रसिंह धरती माहे पड़त धरती टीला री पावे सो महाराणा श्री जगतसिंहजी रा प्रवाणा प्रभातो पटो किधो पड़ेत ती माहे कूडो नवो दीवाय जी जो। प्रवानगी साह सदा रामदेवरा संवत् 1817 वर्षे आषाढ़ वदी 14 बुधवार।

संव्रत् 1810 की कार्तिक कृष्णा 1 को ग्रमझेरा दरबार ने दिवान पदमसिंहजी को गांव सोयला दिया था। ग्रमझेरा से विदा होकर रामचन्द्रजी जो इनके परम मित्र थे। उनके गांव वेदले उनकी बाई की शादी में शामिल हुवे। महाराजा भी वहां विराजते थे। उस समय महलां में नजर निछरावल हुई थी। दिवान पदमसिंहजी ने भी घोड़ा एक पीलो चंदरण कपूर निवते में ग्रौर सवाग के 500) रु. दिये थे। वहां से विदा हो बड़ोदा रूके। वहां से संवत् 1811 में राजा विजेसिंहजी की सेवा में प्रस्तुत हुवे। 3-4 माह वहां रहे। फिर 1812 में महाराणा साहब ने ग्रपने जन्म दिन पर बुला लिया। ग्रापके साथ कुंवर हरिदासजी भी थे। दोनों पालखी में विराजमान होकर उदयपुर पधारे। महाराणा ने ग्रच्छी खातिर की। उस समय उदयपुर से भात के प्रति सप्ताह 188) रु. इन्हें मिलते थे। इतना खर्च बड़े 2 रईसों को भी नहीं मिलता है। यह बड़े ग्राश्चर्य की बात है।

संवत् 1812 में हरिदासजी को साथ लेकर इन्दोर गये थे। हरिदासजी को इन्दोर में ही फोज में रख दिया। तीन चार साल तक हरिदासजी इन्दोर ही रहे। फोज में बहुत नाम कमाया था। फिर वहां से बिलाड़ा ग्राये।

संवत् 1814 में काती सुद 7 शुक्रवार को जोधपुर महाराजा एक बार बिलाड़ा पधारे थे। उस समय दिवान पदमसिंहजी ने खूब खातिर की थी। तथा ग्रपने खास भवनों में ठहराया। महाराजा ग्राई माता के मंदिर में दर्शन करने पधारे। महाराजा ने ग्राई माता के 250) रु. छत्र हेतु भेंट किये। तथा ग्रखंड ज्योति हेतु 200) रु. प्रति वर्ष घी के लिये देने की ग्राज्ञा प्रदान की।

आपके पांच पुत्र थे। 1. खींवराजजी 2. मेगराजजी 3. हरीदासजी 4. जीवणदासजी 5. सांवलदासजी। हरीदासजी सबसे बड़े पुत्र थे। तथा पदमसिंहजी के पांच रानियां थी । 1. जाड़ीजी 2. गहलोतणजी (पटरानी) 3. हाबड़जी 4. मुलेवीजी 5. लटेचीजी।

दिवान पदमसिंहजी ज्यादातर जोधपुर रहा करते थे। संवत् 1824 के आसोज सुद 12 को मामूली रोग से आपका जोधपुर में ही स्वर्गवास हो गया था। जोधपुर से बिलाड़ा लाये गये। पदमसिंहजी के पीछे उनकी पांच रानियां सती हुई थी।

एक बही में सतियों का विवरण इस प्रकार मिलता है। दिवान मोहनदासजी देवलोक हुवा जोधपुर में ने दाग पड़ियो बिलाड़ा। संवत् 1824 रा आसोज सुद 12 उणरे पीछे सतियां हुई जिणरो खर्चो।

जाडीजी—गेहलोतणजी (पटरानी) पोशाक के कुल 153) रु. साड़ी जरी री 25) रु. चरणो खेमखाब 40) रु. कांचली 2) रु. रोकड़ 60) रु. थिरमो 26) रु.

वहुजी हांबड़जी रे	20) रु. पोशाक रा।
लाडीजी मुलेवीजी रे	20) रु. पोशाक रा।
लाडीजी जाड़ेलीजी रे	20) रु. पोशाक रा।
लाडीजी लटेचीजी रे	39) रु. पोशाक रा।

———
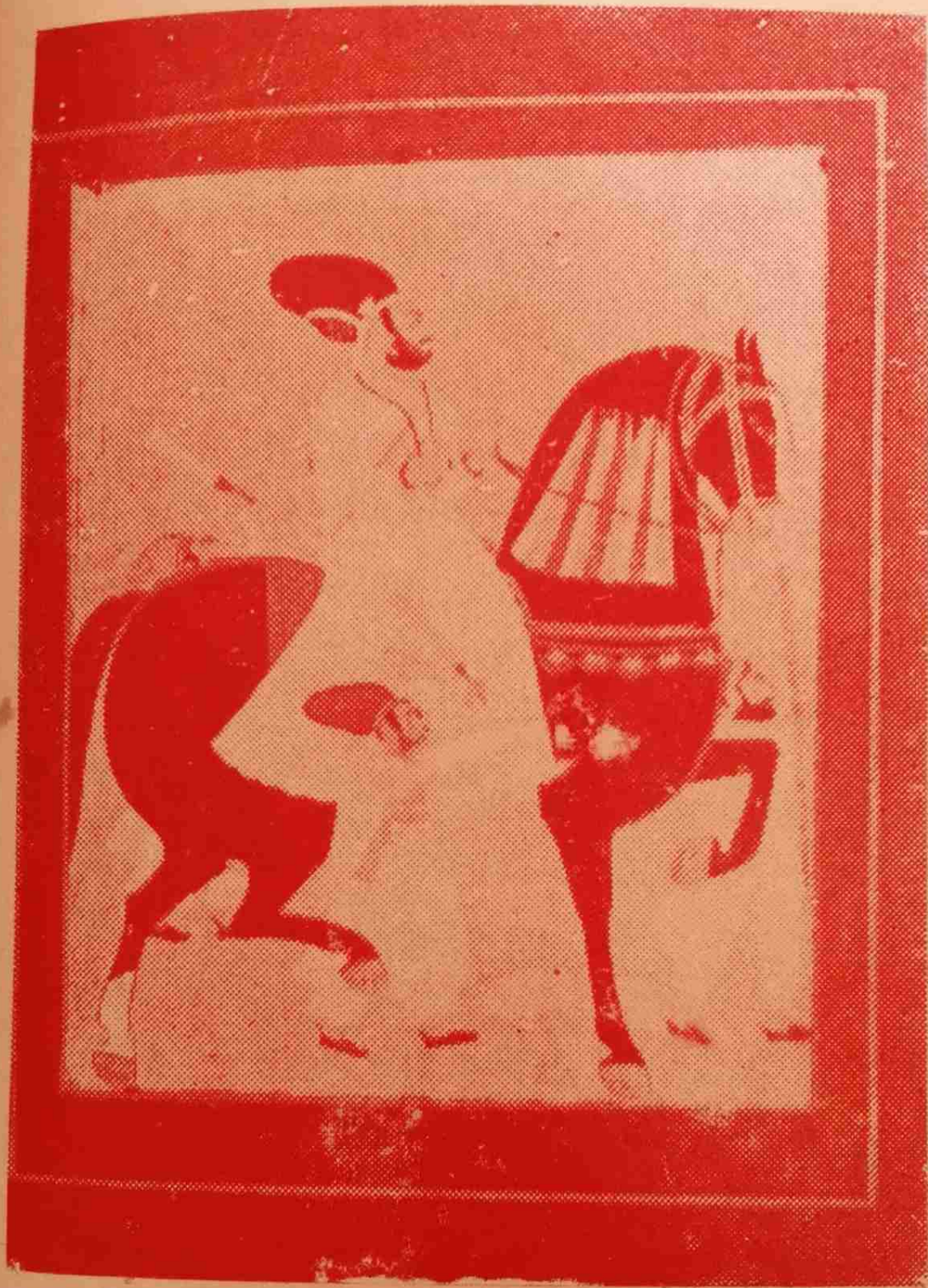
दिवान श्री हरीदासजी

आई माता की दिवान हरीदासजी पर अनन्त कृपा थी। आप आई माता के अटूट भक्त थे। संवत् 1833 में गोढ़वाड़ के बाबा गांव के सीरवियों के वहां के ठाकुर से कुछ मन मुटाव हो जाने से सीरवी गांव छोड़ कर चले गये थे। तब ठाकुर साहब ने आई माता के धूप दीप हेतु एक बेरा भेंट किया। तभी दिवान हरीदासजी के समझाने पर समस्त सीरवी पुनः आकर गांव में बसे। ठाकुर साहब के परवाने की नकल निम्न प्रकार है।

'श्री रामजी'

'सही'

सिध श्री राजश्री बीसनसोंघजी लीखावंता अप्रंच गांव बाबागांम खारलीया लोक रहरण री अडग थी सोत उग भांगी जदी अरट 1 बाबा गांम रो श्री माता जीनु केसर रो चढायो तरण रो हासल गांव बीलाड़े पोंहचसी सं. 1833 आसाढ वदी 9

जब कभी दिवान साहब बाहर दोरे पर जाते थे तो परम्परा से हाथी की सवारी पांव में सोने का लंगर, साथ में नगारा निशान बजते हुवे बेरोकटोक जाया करते थे। इसी प्रकार दिवान हरीदासजी नगारा निशान के साथ घोड़े पर सवार होकर इन्दोर राज्य के चोलीमेसर स्थान से गुजर रहे थे तो उसी समय अपने महलों में बेठी अहिल्या बाई के कानों में नगारे की आवाज पहुंची। तत्काल अपने मन्त्री से पूछा कि मेरे राज्य में यह नगारा निशान बजाता हुआ कौन आ रहा है। जाकर तुरंत उसे रोक कर मेरे सामने ला उपस्थित करो। मंत्री ने देखा और कहा कि बिलाड़ा के आई माता के दिवान है। मंत्री दिवान साहब के पास जाकर अहिल्या बाई का संदेश सुनाया। अहिल्या बाई का महल नर्बदा नदी के किनारे बना हुआ था। तथा दूसरे

किनारे पर दिवान हरीदासजी खड़े थे। उसी समय अहिल्या बाई ने कहा कि यदि तूं है जिस हालत में घोड़े पर बैठा हुआ नर्बदा पार कर मेरे पास आ जावे तो मैं समझूंगी कि तुम आई माता के दिवान हो। यह सुनना था कि दिवान हरीदासजी ने नर्बदा में स्नान कर वहीं पर बैठ कर आई माता का ध्यान करने लगे। ऐसे धर्म संकट में पड़े अपने दिवान को देख आई माता ने प्रत्यक्ष दर्शन देकर हरीदासजी को वचन दिया कि मैं तेरी पूठ पीछे हाजर खड़ी हूं। तूं निडर होकर नदी पार कर ले। इतना कह आई माता अलोप हुई। दिवान हरीदासजी झट घोड़े पर सवार हुवे और घोड़े को नर्बदा में उतार दिया। आई माता के चमत्कार से नर्बदा का पानी दो भागों में बंट गया। दिवान साहब को रास्ता दे दिया था। जब हरीदासजी नर्बदा पार कर अहिल्या के महलों के पास पहुंचे तो अहिल्या बाई ने यह चमत्कार देख दंग रह गई और झट दोड़ कर अपने महलों से नीचे आकर हरीदासजी के पांवो में गिरने लगी। उसी समय हरीदासजी पीछे लौट गये और नदी के किनारे अपना शरीर त्याग दिया साथमें उनके स्वामी भक्त घोड़े ने भी अपने प्राण त्याग दिये। हरीदासजी की चोलीमेसर में समाधी बनाई गई। आज भी लोग बड़ी श्रद्धा से पूजा करते है। दिवान हरीदासजी ने संवत् 1842 अपना शरीर त्यागा था। दिवान हरीदासजी के दो रानियां थी। 1. बाघेलीजी 2. कागणजी। कागणजी को हरीदासजी से विवाह के कुछ समय बाद मन से उतार कर दूसरा विवाह बाघेलीजी से कर लिया था (कागणजी रात दिन आई माता की भक्ति किया करते थे। जब हरीदासजी ने समाधी लेली तो आई माता की कृपा से कागणजी को यहां बैठे ही ज्ञात हो गया था। तुरन्त अपने पुत्र उदेसिंहजी को

बुला कर कहा कि दिवान साहब स्वर्गलोक पधार गये हैं। शिघ्र उनका मोलिया (साफा) मंगवावो। मैं उनके पिछे सती होऊंगी। यह सुन उदेसिंहजी ने एक ऊंट सवार को चोली-मेसर भेज कर हरीदासजो का मोलिया मंगवा कर कागणजी को दिया। इस पर कागणजी ने कहा यह मोलिया बाघेलोजी को दो। जब बाघेलीजी के पास गये तो उन्होंने सती होने से इन्कार किया इस पर कागणजी मोलिया लेकर माटमोर के बाग में समाधी ली व बाघेलीजी को श्राप दिया कि तूं पतिवृता नहीं है। अंधी होगी। और दिवारों से टक्करे खायेगी। सती के श्राप से बाघेलीजी अन्धी हो गई। दिवान हरीदासजी के दो पुत्र थे। 1. उदेसिंहजी 2. लालसिंहजी।

"दिवान उदेसिंहजी"

जन्म—संवत् 1798
विवाह—संवत् 1822 चेतवद 2
पाट—संवत् 1842 चेत वद 2
स्वर्ग—संवत् 1858 वेसाख वद 6

जब दिवान हरीदासजी ने चोलीमेसर में समाधी लेली। तब उनके पुत्र उदेसिंहजी दिवान की गद्दी पर बिराजे। हरीदासजी के समाधि लेते ही अहिल्याबाई को आई माता के चमत्कार का पता लगा। और उसने बहुत रंज किया। उसी समय जोधपुर महाराजा को पत्र लिखा। अहिल्या बाई के पत्र की नकल।

"श्री रामजी"

सिध श्री सरब ओपमा महाराजाधिराज राज राजेश्वर महाराज श्री बीजेसिंहजी जोग्य श्री अहिल्याबाई होल्कर केन।

दिवान श्री उदेसिंहजी

के समाचार भले है। राज के समाचार सदा बंबजो अठा के समाचार भले है। राज के समाचार सदा भलो चाहीजे। अपरंच राज श्री हरीदासजी श्री भवानी भगत वासी कसबे बीलाड़े के देवलोक हुवे सो देव इच्छा से किसी का जोर नहीं इस वास्ते लीखों छा सो अब जो कोई इनके घराने माहे से पाट बेठ कर श्री श्री की भगती कबुल करे उनकी हरेक प्रीकरी गोर रखावाला सो सुकर गुजार होय कर आसीरवाद देते रहेंगे। ठेठ से सुभचींतक उठाई का छे अठे व्योवहार राज ही को जाण कागद समाचार हमेसा लीखाबुओोला मिती चेत वदी 8 संवत् 1842

दिवान उदेसिंहजी अपने पिता की भांति आई माता के अनन्त भक्त थे। आप एक वीर पुरुष थे। अहिल्या बाई आपको बहुत आदर देती थी। कई बार इन्दोर भी बुलाया था। दिवान उदेसिंहजी अहिल्या बाई के साथ कई बार युद्ध में भी पधारे थे। इनकी वीरता देख अहिल्या बाई बहुत खुश होती थी।

अहिल्या बाई के बाद इन्दोर के काशीराव होल्कर ने दिवान उदेसिंहजी को अपनी सेना का सेनापति बनाया था। काशीराव का कहना था कि इन्दोर और होल्करों की ताकत आपके हाथ है। जब जोधपुर महाराजा पीपाड़ पधारे तो दिवान उदेसिंहजी को पीपाड़ बुलाकर परम्परानुसार मातमपुरसी की रस्म अदा की थी। खूब नजर निछरावल हुई। महाराजा को आप पर बहुत भरोसा था। राजकाज के कार्य की सलाह भी लिया करते थे।

एक बार महाराजा संवत् 1855 में बिलाड़ा पधारे थे। उस समय दिवान उदेसिंहजी ने महाराजा की बहुत अच्छी खातिर की थी। महाराजा के साथ महारानी बाघेलीजी भी आये हुवे थे। महारानीजी ने उदेसिंहजी को खुश होकर मिठाई

हेतु रुपये बख्से थे। जब तक महाराजा और महारानी बिलाड़ा ठहरे। उस वक्त तक बहुत अच्छी खातर की थी। विदा होते समय महाराजा व महारानी आई माता के दर्शन करने पधारे। उस समय 343) रु. व 6 मोहरे छत्र हेतु आई माता के भेंट किये थे।

दिवान उदेसिंहजी अक्सर इन्दोर ही रहा करते थे। एक बार मारवाड़ में युद्ध भड़क गया था। उस समय महाराजा ने पत्र लिखकर आपको इन्दोर से बुलाया था। यहां आकर बीकानेर, रतलाम, अमझेरा आदि के कई रईसो के साथ युद्ध में वीरता दिखाई थी। जिससे आपकी ख्याति बहुत फैल गई थी। यहां तक की पीपाड़ व जोधपुर के मेड़तिया गेट के बाहर महाराजा के साथ युद्ध में वीरता का परिचय दिया था। उसके बाद आप ज्यादातर जोधपुर ही रहा करते थे। दिवान उदेसिंहजी के एक ही पुत्र अनोपसिंहजी थे। आप आई माता के भक्त इतने थे कि आई पंथी इनको बहुत आदर से पूज्य माना करते थे। जोधपुर में मामूली रोग से आपका संवत् 1858 के वेसाख वद 7 शुक्रवार को स्वर्गवास हो गया था। उसी समय पालखी द्वारा बिलाड़ा लाये गये थे। दिवान उदेसिंहजी के देहान्त के समय कुंवर अनोपसिंहजी मात्र तीन साल के ही थे। राणीजी शोढीजी उनके पिछे सती हुई थी तथा आपके 50 श्रदालू भक्तों ने आपके साथ आत्मसमर्पण किया था। आत्मसमर्पण करने वाले भक्तों का विवरण निम्न प्रकार है।

14 आदमी और औरते बडेर के, 5 आदमी और औरते उचियाड़ा के, 4 आदमी और औरते अटबड़ा के, 5 आदमी, औरते डायलाणा के, 4 आदमी व औरते खींवले के, 5 आदमी व औरते बारावा के, 2 आदमी नाडोल के, 11 मालवे के कुल 50 आदमी, औरते शहीद हुवे।
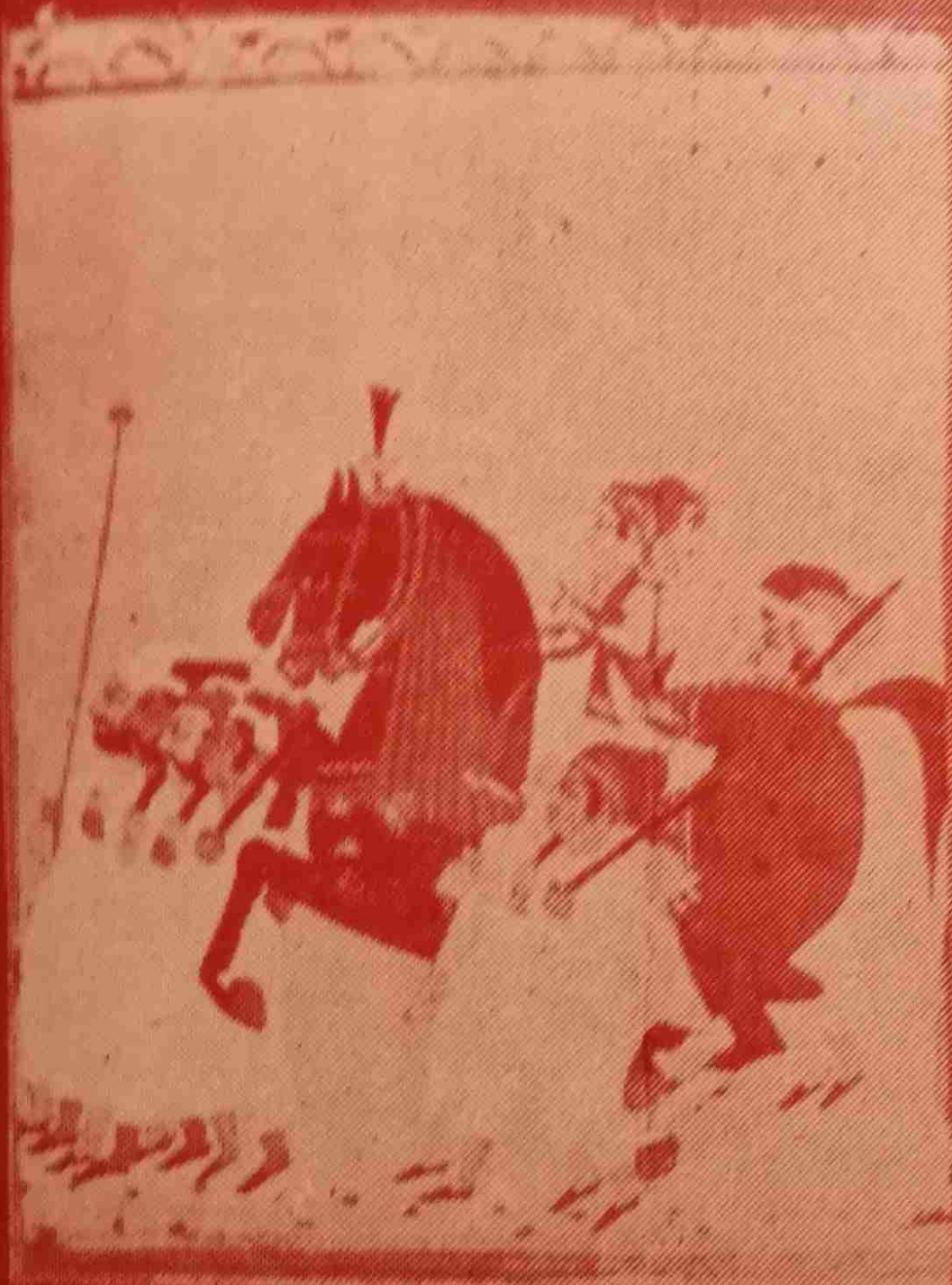
दिवान श्री अनोपसिंहजी

"दिवान अनोपसिंहजी"

जन्म—संवत् 1855 काती वद 5

पाट - संवत् 1858

स्वर्ग – संवत् 1860

दिवान उदेसिंहजी के स्वर्ग होने पर उनके पुत्र अनोपसिंहजी जो मात्र तीन वर्ष के थे। दिवान की गद्दी पर बैठाया गया। लेकिन आई माता को और ही मंजूर था। आईजी की लीला को कोई नहीं जान सकता। केवल दो वर्ष बाद अर्थात मात्र पांच वर्ष की आयु में ही आपका देहान्त हो गया। इनके कार्यों की भविष्य में बहुत आशा थी लेकिन आई माता को यही मंजूर था। दिवान अनोपसिंहजी के स्वर्गवास के साथ आई माता के नौ भक्तों ने अपने प्राण त्यागे थे। जिनका विवरण निम्न प्रकार है।

2 बडेर के, 3 बीलाड़ा के नयाबास के, 3 जांजणवास के, 1 वडारन चन्द्रजोत।

।। दिवान लालसिंहजी ।।

जन्म—संवत् 1802

पाट—संवत् 1860

स्वर्ग—संवत् 1869

जब दिवान अनोपसिंहजी का देहान्त हो गया तो उनके चाचा लालसिंहजी (उदेसिंहजी के भाई हरीदासजी के पुत्र) को दिवान की गद्दी पर बैठाया गया था। दिवान लालसिंहजी आई माता के परम भक्त थे। महाराजा मानसिंहजी आपसे बहुत

खुश थे। दिवान लालसिंहजी का बर्ताव आई पंथियों के साथ बहुत ही मधुर था। जोधपुर महाराजा के साथ युद्ध में लालसिंहजी ने वीरता का परिचय दिया था। दिवान घराने की स्वामी भक्ति से महाराजा बहुत खुश थे। एक बार महाराजा के साथ आप पीपाड़ पधारे हुवे थे वहां पर बीकानेर महाराजा ने अपने डेरे बुला कर लालसिंहजी का बहुत अच्छा स्वागत सत्कार किया था। अतः जोधपुर व बीकानेर दो ही महा-राजाओं को दिवान लालसिंहजी पर गर्व था। दिवान लालसिंहजी दिवान की गद्दी पर थोड़े समय ही रहे थे। संवत् 1869 में मामूली रोग से आपका स्वर्गवास हो गया था। दिवान लालसिंहजी के पीछे करीब बाईस आई भक्तों ने अपने प्राण त्यागे थे। जिनका विवरण निम्न प्रकार है।

1 मोची भोलिया री मां, 1 चोथरावास री सीरवण, 1 उचियारणा री सीरवण, 1 दलो चांदावत, 1 कोला चोधरी री काकी, 1 कुमार, 1 केसो सीरवी बडेर रो, 1 गोढवाड रो महाजन, 1 सरगरो नेतियो 2 सरगरियां 2 मेगवाल भोजियो ने उणरी बहु 3 जेतपुरा रा 1 सीरवी दीपो 2 सीरवी केसो ने उणरी बहु। 2 जाणूंदा रा 1 नगो सीरवी 1 दलो सीरवी 2 किशनपुरा रा 1 धरमो सीरवी 1 देदो सीरवी गांव झूठा रा 1 रतनो सीरवी 1 रतना री काकी।

।। दिवान शिवदानदासजी ।।

जन्म—संवत् 1852
पाट—संवत् 1869
स्वर्ग—संवत् 1901
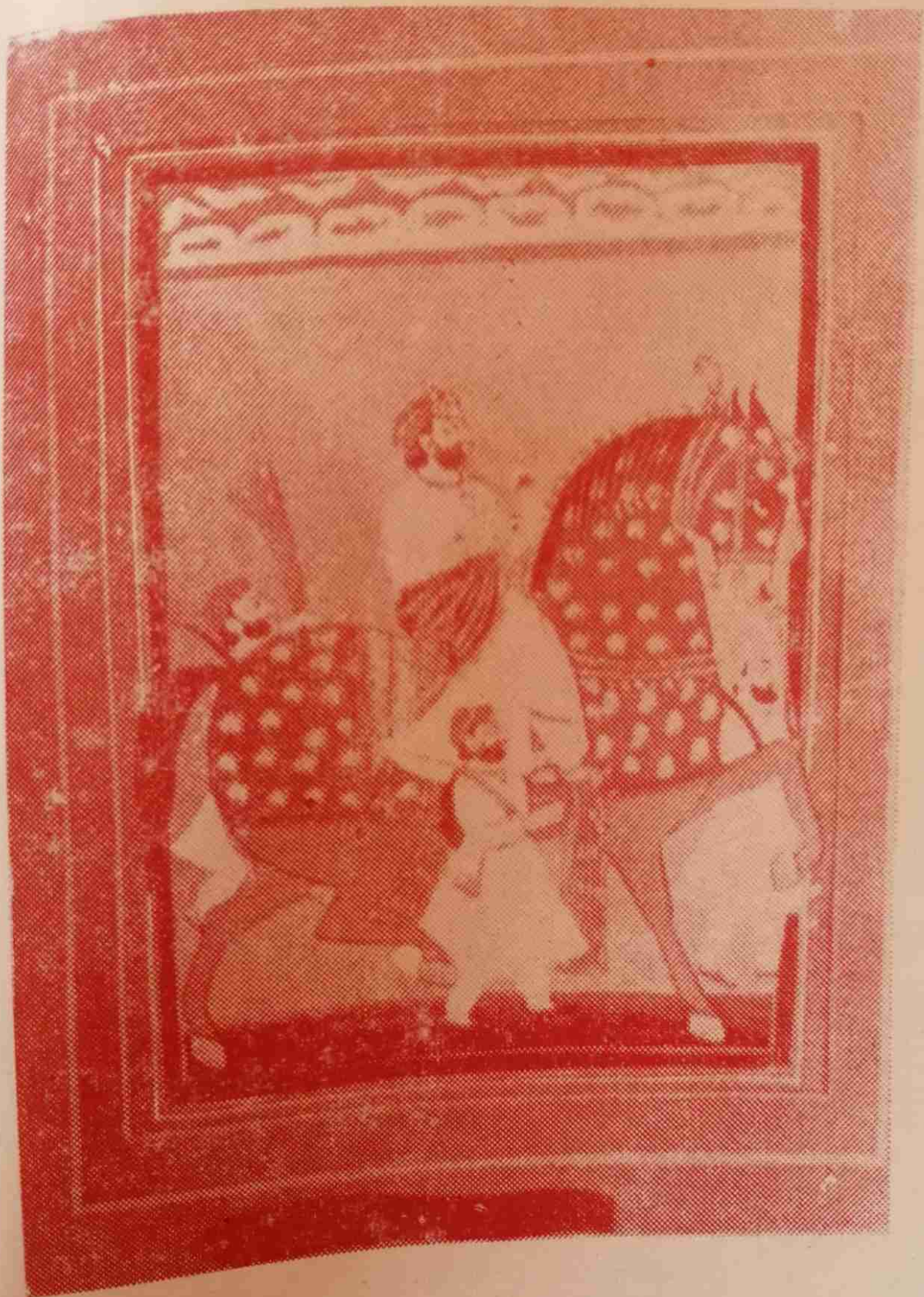
दिवान श्री शिवदानदासजी

दिवान लालसिंहजी के कोई पुत्र नहीं था । अतः पदमसिंहजी के पुत्र खींवराजजी (हरीदासजी के भाई) के पुत्र शिवदानदासजी को दिवान की गद्दी पर बैठाया था । शिवदानदासजी लालसिंहजी के चचेरे भाई थे । दिवान शिवदानदासजी ने दिवान की गद्दी पर बैठते ही बहुत बड़ा ज्याग किया था । जिसमें लाखों आदमी आये । और लाखों रुपये खर्च हुए थे । उन दिनों जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी थे । महाराजा ने परम्परानुसार मातमपुरसी की रस्म अदा की थी । मातमपुरसी महाराजा ने बिलाड़ा पधार कर करवाई थी । आपने आई माता के धर्म का खूब प्रचार किया था । धर्म प्रचार व आई पंथियों के दुख सुख सुनने के लिये आप पूरे मारवाड़ मेवाड़ मध्यप्रदेश का दोरा किया करते थे । संवत् 1897 में गांव सेंदरियां के सीरवीयों ने छोडाणा किया था । उस समय दिवान शिवदानदासजी ने सीरवीयों को पुनः सेंदरियां में बसाया था ।

"श्री माता जी"

सर्व श्री ठाकुरो श्री पेमसिंघजी आधीया आईदानजी हलतोजी गांव सेंदरियां रा खेड़े सोदरी लागा ने वसायो थो । श्री दीवाणजी शा 1897 रा म्हा वद 13 पदारिया तरे कोसीटो सोई री खारसीयो सडायो तरगरी गुगरी 9 सेर की दी त्णारी दीनो जावसी वरस वरस कोसीटो वेसी तर दीधो जावसी । कोसीटो 1 दीधो जावसी । दाः साभा कसारा छे राजी खुसी सु लख दीनों छे । डाणै पेसो श्री मात।जी सु वेमुख होसी साख 1 बुसी रो पंसेरी 1 दाः हकमा रा छे । चोधरीयां रौ क्या सूं गालीयो ।

शिवदानदासजी के एक ही पुत्र थे जिनका नाम लक्ष्मणसिंहजी था। संवत् 1901 में दिवान शिवदानदासजी का स्वर्गवास हो गया था।

"दिवान लक्ष्मणसिंहजी"

जन्म—संवत् 1896
पाट—संवत् 1901
स्वर्गवास—संवत् 1945 सावण सुद 4 दिन के 12 बजे

दिवान लक्ष्मणसिंहजी मात्र 5 वर्ष की आयु में ही गद्दी पर बिराजे थे। दिवान की गद्दी पर बिराजे उस समय लोग इन्हें धर्मगुरु मान कर आदर करते थे। संवत् 1902 में बुभादड़ा के सीरवियों ने छोडाणा किया था। तब आपको साक्षी में वहां के ठाकुर ने आई माता के धूप हेतु एक बेरा भेंट किया था।

श्री भटारक गुरां श्री देईचन्दजी लिखावंत गांव बुभादड़ा रो ढ़ीबड़ो 1 एक केरीयो श्रीजी रे मंदिर तालके बीलाड़े भेट कियो है। सु इण रो हासल बिलाड़े दरगा तालके पोंचसी। चोधरी जेसिंघ, धनो, कानो, जेतो सारा गांव रा लोक छोड़ने बारे गया था तरे मनावणों करया छा गांव में लाया जद ढीबड़ो भेट कियो है। ढ़ीबड़ा नीसे जाव मण 19 अखरे उगणीस मण रो इंण हेटे करसी सु थो भेंट कियो है। करसो सीरवी जेतो राजा रो बेटो ढीबड़ा करसी। संवत् 1902 रा आसाढ वद 2 बुद।

जब दिवान लक्ष्मणसिंहजी की आयु 13 वर्ष की हुई थी तब आप कुछ कुछ सामाजिक बातें जानने लगे थे। आई माता के अत्यन्त भक्त थे। संवत 1909 में दिवान साहब गांव खेरवा पधारे थे। उस समय वहां के ठाकुर साहब ने आई माता के धूप हेतु एक बेरा भेंट किया था।
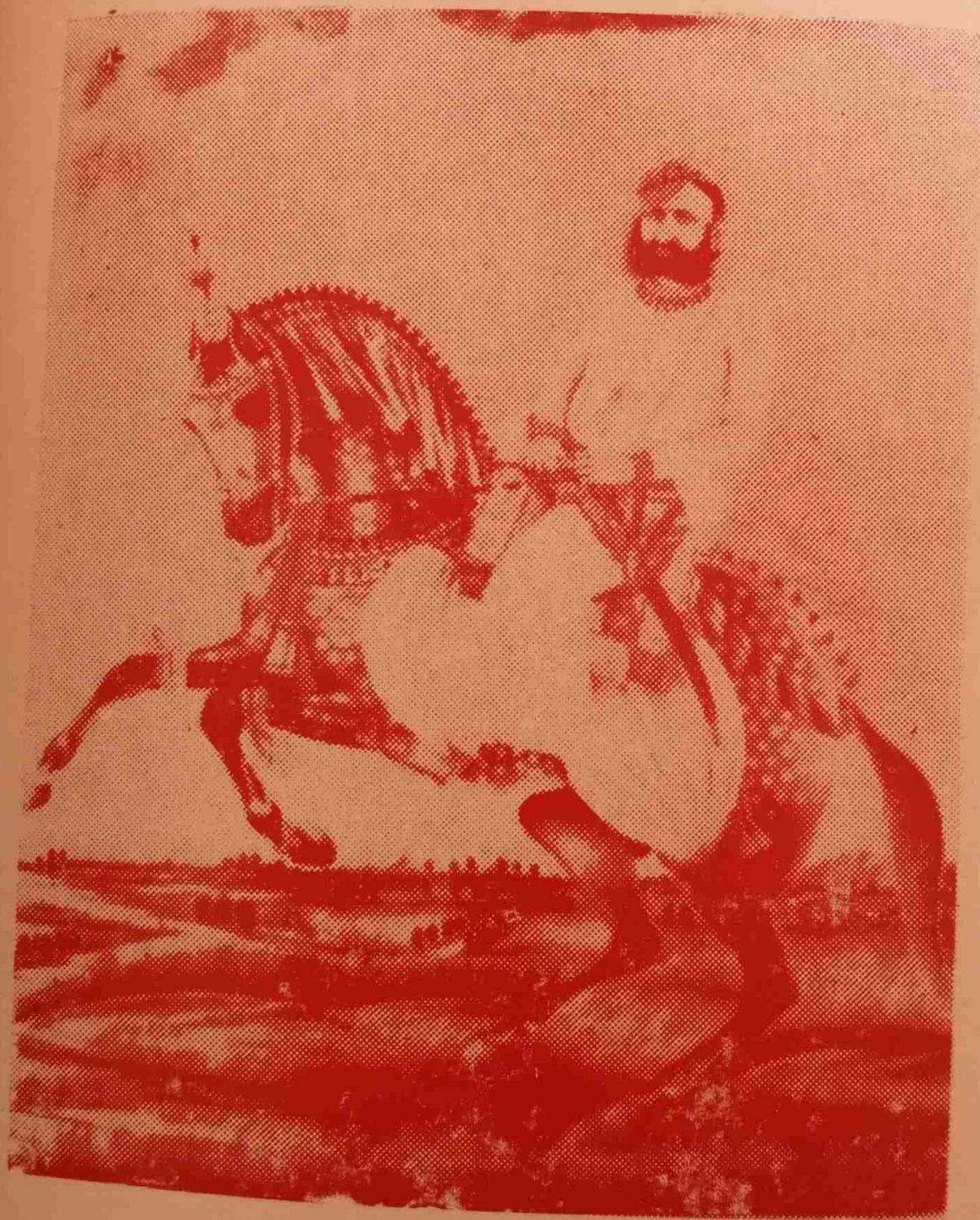
दिवान श्री लक्ष्मणसिंहजी

श्री मुरलीमनोहरजी सत छै

सही मोहर

सिध श्री ठाकुरा राज श्री सावतसिंघजी कंवरजी श्री समरथसिंघजी वचनायतु । तथा खास खेरवा में कोसीटो एक बीलाड़े आईजी म्हाराज रे भेंट कीनो छे । ईण कोसीटा रो सावणु उनाली रो हासल श्री आईजी रे बीलाड़े माताजी रे जावसी बीलाड़ा रा दीवाणजी लछमणदासजी आया तरे भेंट कीनो छे । आल औलाद इण कोसीटा रो हासल बीलाड़े श्री माताजी रे भेंट जावसी । ने इण कोसीटा हेटे जाव मण 16 सोले मण रो रेसी । 1909 रा जेठ वद 10 लीखतु लोढा नीहालचन्द रो छे श्री रावला हुकम छु ।

जब दीवान लक्ष्मणसिंहजी बालिग हुवे तब आपने देखा कि बडेर की मालीहालत बहुत सोचनीय है कर्जा बहुत हो गया था । बडेर में बने महल जीर्ण क्षीण हो गये थे । मारवाड़ के समस्थ सामन्त बडेर से असन्तुष्ट थे । माटमोर का बाग ऊजाड़ हो चुका था । ऐसी हालत में दिवान लक्ष्मणसिंहजी ने । अपनी बुद्धि चातुर्य से समस्त मारवाड़ के सामन्तों से पुनः मधुर व्यवहार कायम किये । तथा अपने सेवक आई पंथियों से पुनः मेल जोल बढाया । कास्त की तरफ ध्यान दिया । सीरवी समाज के बुजर्गों से सलाह मशवरा लेकर पुनः बडेर की हालत को सुधारा । लाखों रुपये लगाकर महलों की मरम्मत करवाई । माटमोर के बाग को हराभरा करवाया । जो आज भी देखने योग्य है ।

जोधपुर के महाराजा तखतसिहजी ने जोधपुर बुलाकर मातमपुरसी की रस्म अदा की थी । मातमपुरसी की रस्म जोधपुर में रायपुर की हवेली में अदा की गई थी । मातमपुरसी की रस्म अदा होने के बाद दीवान साहब घोड़े पर सवार होकर

महाराजा से मुजरा करने किले पधारे वहां पर इमरती पोल के पास घोड़े से उतर कर महाराजा के पास पधारे थे। खूब नजर निछरावल हुई। महाराजा ने कड़ा, मोती, सिरपाव, घोड़ा बख्शे।

संवत् 1917 में गांव कोटड़ी के सीरवियों ने छोडाण किया था। इस पर वहां के ठाकुर साहब ने एक बेरा भेंट कर पुनः सीरवियों को बसवाया था।

श्री रामजी रूप छे

मौहर

सिध श्री महाराज श्री नाहरसिंघजी वचनातु अप्रंच गांव कोटड़ी रा लोकां छोडाणों कीनो ने गदेड़ो उबो कीदो। जीण सु श्री माताजी रे अरट 1 पीपलियो तलाव रे हेटे आथणाउ कांनी है। सु भेंट कीनो सु इणारो हासल बडेर जावसी केसर चनण। संवत 1917 रा फागण वद 5 ओ अरट करसी जिणने राज सु वरजण थाव न्हीं केसासु।

इसी प्रकार 1918 में बूसी के सीरवी लोगों ने छोडाणा किया था। जिन्हें पुनः लाकर बसाया। इन बातों से साफ जाहिर होता है कि सीरवी केवल दिवान साहब को बात ही मानते हैं।

॥ श्री परमेश्वरजी ॥

'सही'

ठाकुरां राजश्री भभूतसिंघजी वचना अत दसे नग गांव बुसी रा चोदरीया रा आदमीया बालेण परभाते रे चोडाणा करने भाटा रोपने बारे नसरगा। आला गांव भादरलाउ गाअ तरे पाचा मना अने गांव में ले आया ने गांव बीलाड़ा सु दीवाण

रा भला ग्रादमी जती लाअे ने भाटा उकेला ग्राने रे श्री ग्राईजी महाराज रे ढीबरो 1 नाई सो बडेर तालके केसर सारू भेट कीनो सो ताई इणरो हासल ठिकानो जावसी तणा रो हासल सो ग्रावसी तको बीलाड़े श्री ग्राईजी महाराज रे पूगसी ग्रो कोसटो वेने श्री श्री महाराज रे भेंट कीनो है। सो करसा सु वनाउ खीसेल जीक रो नही ने इण कोसटा राजयरे से भाटा रोपाया देसे। 1918 रा जेठ सुद 14 दा: फोजमल रा छै। श्री रावला हुकम सु।

जोधपुर के महाराजा ग्राप पर बहुत प्रसन्न थे। ग्रक्सर राज काज में ग्रापकी सलाह लिया करते थे। एक बार संवत् 1926 में महाराजा साहब बिलाड़ा पधारे। उस समय दिवान लक्ष्मणसिंहजी ग्रपने पट्टे के गांव इन्दोर राज्य में दोरे पर पधारे हुवे थे। ग्रापकी गेर मोजूदगी में ग्रापकी राणी साहेबा ने महाराजा का खूब ग्रादर सत्कार किया था। महाराजा बहुत खुश हुवे ग्रौर सिरपाव इनायत किया था।

दिवान लक्ष्मणसिंहजी साहित्य प्रेमी भी थे। साहित्यकारों का ग्रादर करते थे। ग्रापने कई कविताए व दोहे लिखे थे। जो बडेर संग्रहालय में मौजूद है। महाराजा ग्रापकी योग्यता की बहुत प्रशंसा किया करते थे। ग्रापने बहुत बड़ा ज्याग भी किया था। जिसमें लाखों रुपये खर्च हुवे थे।

उन्हीं दिनों में जैतारण में सीरवी नहीं बसते थे। ग्रतः महाराजा ने ग्रापको पत्र लिखा था कि जैतारण में सीरवीयों को बसाग्रो। सीरवी केवल ग्रपने धर्म गुरु दिवान का कहना ही मानते हैं।

(मोहर)

।। श्री जलंधरनाथजी सत छे ।।

।। श्री महाराजजी ।।

सवारूप श्री चोधरी श्री लिछमणदासजी जोग्य जोधपुर थां म्हैता श्री हरजीवणदासजी लिखावंत जुहार वाचजो । अठारा समाचार श्री जी रा तेज प्रताप सुं भला छे । थारा सदा भला चाहिजे तथा थे पिंडा जेतारण जाय सीरवीयां री तलाक भंगाय देजो नै सीरवीयों नु उठे बसाय बेरा सरू कराय देजो । इण में श्री दरबार में थांरी बंदगी मालम हुसी ने बेरा एक थांने श्री दरबार सु दीरीजीयो है । तिणरी सनद कराय मेला पण सीर-वीयो नुं बेरा जलाय करसण सरू कराय देजौ । श्री हजूर रो हुकम छै । संवत् 1931 रा मिती चेत्र सुद 8 ।

आपके समय में संवत् 1935 में गांव सरथुड़ में पहले से 50 बीघा जमीन आई माताजी के नाम की थी लेकिन वहां के ठाकुर साहब ने इस जमीन का हासल देने में आनाकानो करने लगे । तभी वहां के ठाकुर को जोधपुर से खीची बखतावरसिंहजी ने पत्र लिखा था ।

।। श्री जलंधरनाथजी सत छे ।।

(मोहर)

स्वारूप श्री मेड़तीया श्री लीछमणसिंघजी जोग्य जोधपुर था खीची बखतावरसिंघ लिखावंत जुहार वाचजो अठारा समा-चार श्री जी रा तेज प्रताप सूं कर भला है थाहरा भला चाहीजे अप्रंच गांव सरथुड़ में सीरवी बसता नही तरे बीलाड़ा दिवाण ने केणो करने वसाया ने ओ गाम भाटी पेमसिंघजी रे पटो हो जद जमी हल 50 पचास हल आसरे बीलाड़ा रे दिवाणा रे पटा रो
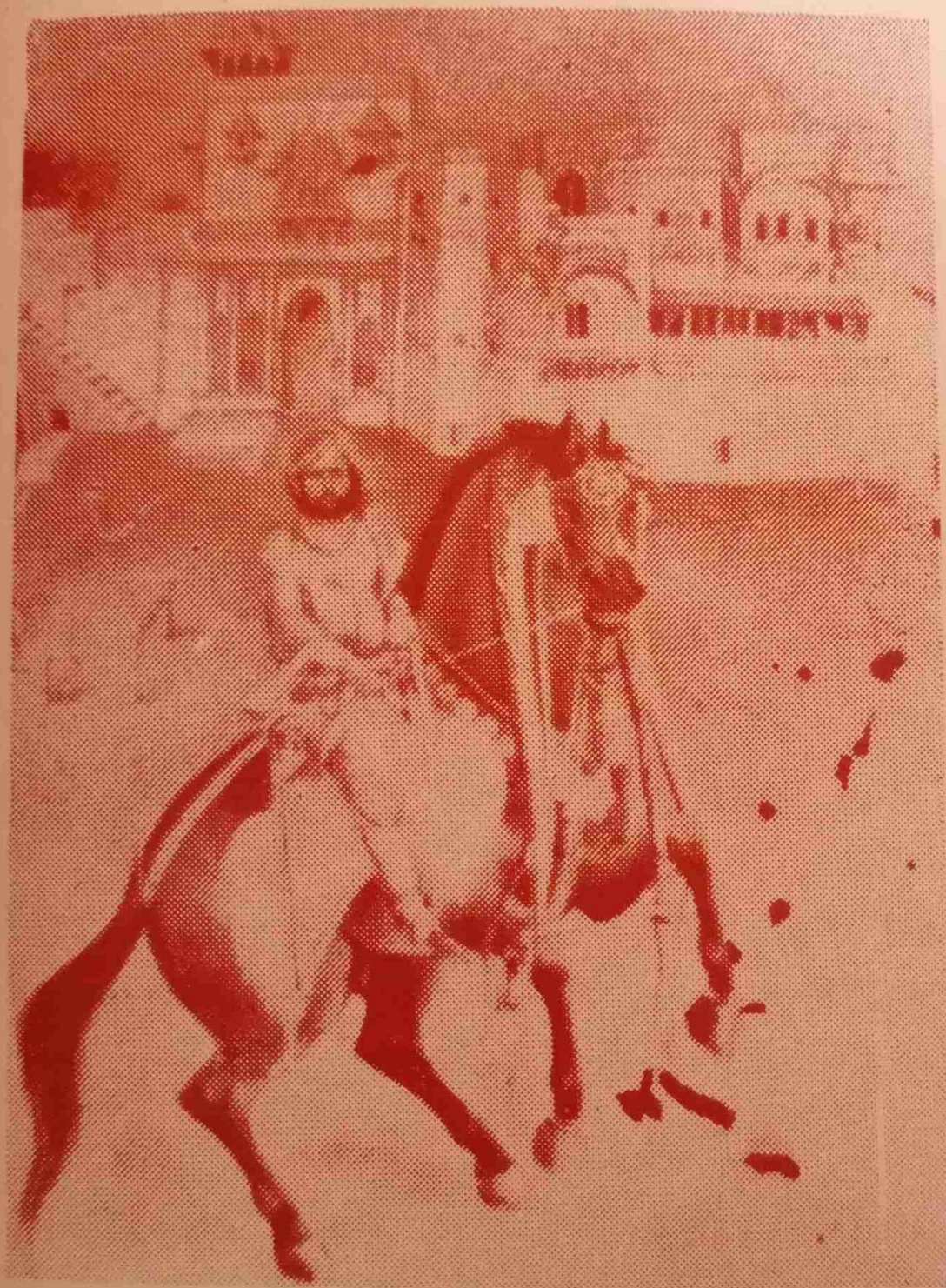
दिवान श्री शक्तिदानजी

गांव वारावा वाला ने दीयो ने श्री माताजी रे चढ़ाया रो लिखत कर दीयो छै उण जमी रो हासल साठ बरस तवा दीवाण रे गांव वारावा वाला लिया जावे ने हमार थे खेंचल करो हो सु करजो मती सदा भंद इण जमी रो हासल वारावा वाला लियो रेवे जिउ लेण दीजो थे अटकावजो मती देवसथांन रो काम है सु फेरू लिखणो पड़े नहीं । 1935 रा मिगसर वद 10

दिवान लक्ष्मणदासजी ने बडेर की बहुत तरक्की की थी । आपके समय में आई माता के धर्म का खूब विस्तार हुआ था । आपके दो पुत्र थे । 1. शक्तिदानजी 2. जसवंतसिंहजी । शक्तिदानजी बड़े थे । संवत् 1945 में आपका स्वर्गवास हुआ था ।

।। दिवान शक्तिदानजी ।।

जन्म—संवत् 1913 माघ वद 2
विवाह—संवत् 1939
पाट—संवत् 1945
स्वर्ग—संवत् 1961 पोह वद 12

दिवान शक्तिदानजी 32 वर्ष की आयु में दिवान की गद्दी पर बिराजे थे। उस समय जोधपुर के महाराजा सरदारसिंहजी थे। महाराजा सरदारसिंहजी दिवान घराने से बहुत खुश थे। महराजा ने बिलाड़ा पधार कर परम्परानुसार मातमपुरसी की रस्म अदा की थी । दिवान शक्तिदानजी आई माता के अनन्त भक्त थे। आप दृढ प्रतिज्ञ इतने थे कि जो कार्य सोचते उसे अवश्य पूर्ण करवाते थे । आपको भवन बनवाने का बहुत शौक था । इसी शौक से आपने होशियार कारीगरों को बुलवा कर एक बहुत ही सुन्दर महल बनवाया था । जिसका नाम बाड़ी महल रखा गया । जो आज

भी देखने योग्य है। बाड़ी महल की खूबसूरती को देखकर एक कवि ने कहा था।

दखल पड़े सुरग दोखियां, आखा यह लहशेश।
सहल किया सब वहे सुखी, बाड़ी महल बशेश ।।

जिस समय महाराजा सरदारसिंहजी मातमपुरसी की रस्म अदा करने बिलाड़ा पधारे थे। उस समय उन्हें इसी बाड़ी महल में ठहराया गया था। महाराजा साहब इस महल की कारीगरी व सुन्दरता को देख कर बहुत खुश हुवे थे। दिवान साहब ने महाराजा का बहुत अच्छा आदर सत्कार किया था व विभिन्न प्रकार के भोजन बनवाये थे। उस भोजन सामग्री में एक दो व्यंजन दिवान साहब की राणीजी भटियाणीजी ने अपने हाथ से बनाये थे। महाराजा उन व्यंजनों को खाकर बहुत खुश हुवे तथा कहा कि इतना स्वादिष्ट भोजन मैंने पहले कहीं नहीं खाया। खूब तारीफ की थी। राणी भटियाणीजी पाक शास्त्र में निपुण थी। दिवान शक्तिदानजी अति बुद्धिमान व दूर दृष्टता के धनी थे। आपके विषय में एक कवि ने कहा है।

शाम धरम स्वछा सरस, लछ कच्चा नहलेस।
अच्छा 2 एकटा (थामे) सच्चा गुरग सगतेस ।।
अत विद्या चित ऊमदा, दाखे धिन २ देस।
शाम धरम अर वचन सिध, सत सानंग सगतेस ।।

दिवान शक्तिदानजी के समय में गांव दादाई के सीरवीयों ने छोडाणा किया था। तब वहां के ठाकुर साहब ने दिवान साहब को पत्र लिखा था।

दिवान श्री प्रतापसिंहजी

श्री परमेश्वरजी सहाय छे ।

मोहर

श्री रामजी सत छे

स्वारूप श्री बीलाड़ा सुभ सुथानेर सरब ओपमा श्री दीवाणजो श्री सगतीदानजी जोग्य बहेड़ा थी रांणावत रूघनाथसिंग लिखावंत जै श्री कुंवार श्रीनाथ दीवसीजी अठारा समाचार श्रीजी रे तेज प्रताप सूं कर भला छे। राज रा सदा भला रखावो जिण थाविशेष रखावसी अप्र म्हारे पटा रो गांव दादाई रा चोधरीया उसलो कियो ने गदोतरो रोप दियो । तिण री इजाजत राजदिराई ने गदातरो उखेलायो तीण सूं श्री आईजी मांराज रे कोठार दादाई रा हासल समउ जव 5) अखरे जव मण पांच दादाई रे मापरा भेट कीया जाही । उवरसी वरसी दादाई रा हासल सी पछे दीया श्री जीवसी इण में कोई तरा रा रोक रंक राखसी नहीं अठासी हुकम की जरूर की लीखावसी अठे राज रो ठीकाणों है संवत् 1947 रा जेठ सुद 15

दिवान शक्तिदानजी के पुत्र नहीं होने से आपके भाई जसवंतसिंहजी (जिनके दो पुत्र प्रतापसिंहजी, मोतीसिंहजी) के बड़े पुत्र प्रतापसिंहजी को गोद लिया था । संवत् 1961 के पोह बद 13 को आपका स्वर्गवास हुआ था ।

"दिवान प्रतापसिंहजी"

जन्म—संवत् 1940
पाट—संवत् 1961 पोह सुद 13
विवाह—संवत् 1963
स्वर्गवास—संवत् 1976 भादवा सुद 11

दिवान प्रतापसिंहजी, दिवान शक्तिदानजी के भाई जसवंत सिंहजी के पुत्र थे । शक्तिदानजी के पुत्र न होने से आप गोद आये

थे। दिवान प्रतापसिंहजी आपने समय में युवकों में माने हुए थे। आप आई माता के अनन्त भक्त थे। परोपकारी दिवान थे। दिवान शक्तिदानजी के समान आपको भी भवन बनवाने का शौक था। आपने बाड़ी महल नामक महल के ऊपर एक ओर मंजिल का निर्माण करवाया था। जो कि पक्की ईंटों द्वारा बनवाया था। जिसका नाम हवा बंगला रखा गया तथा आई माता के मंदिर में संगमरमर की फर्श बनवाई व दिवारों पर चीणी की टाईलें लगवाई थी।

दिवान प्रतापसिंह की यूरोपियन आफिसरों से अच्छी दोस्ती थी। एक बार अंग्रेज गवर्नर जनरल एजेन्ट साहब राजपूताने के दोरे पर आये तब बिलाड़ा आकर रेलवे स्टेशन पर ठहरे थे। उस समय दिवान साहब रेलवे स्टेशन पधार कर गवर्नर जनरल से मुलाकात की और उन्हें साथ लाकर अपने महलों में ठहराया था। तथा खूब आदर सत्कार किया। गवर्नर जनरल बहुत खुश हुवे। यहां से जाने के बाद इंगलैण्ड से पत्र व्यवहार होता था।

दिवान प्रतापसिंहजी बड़े मधुरभाषी व परोपकारी थे। आई माता के भक्त थे। तथा आई पंथियों के दुख सुख को सुनते व उनका निवारण करते थे। आपने आई पंथियों की साल सम्भाल के लिये पूरे मारवाड़ मेवाड़ मध्य प्रदेश के दौरे किये थे। आई माता की कृपा से आपके संवत् 1972 के आसाढ सुद 1 को पुत्र रत्न हुवे थे। जिनका नाम हरीसिंह रखा गया था। दिवान प्रतापसिंहजी भी जोधपुर महाराजा के स्वामी भक्त थे। जोधपुर महाराजा आप पर बहुत खुश थे। आपके बारे में एक कवि ने कहा है।

ते आदू सगतेसतरण, व्रद धरिया वरवीर ।
सचवादी सगतेस सुत धिन पोरूष गुण धीर ।।

आई पंथ के डोरा बंद सीरवी आपहो की बात को मानते थे। संवत् 1972 में नाडोल के सीरवीयों और वहां के ठाकुर के आपसी रंजस हो जाने से समस्त सीरवी गांव छोड़ कर चले गये थे। इस पर ठाकुर साहब ने दिवान प्रतापसिंहजो से निवेदन कर वापिस सीरवीयों को नाडोल में बसवाया था ।

श्री मुरलीधरजी, श्री रामजी सहाय छे ।

'साबत'

सीध श्री महाराजा श्री जोधसिंहजी वचनासे ता गांव नाडोल रा चोदरीया जा की सटे थराध नाडोल में बील बजै भाटो रोप दीयो तीण कारण सु बीलाड़े बडेर धान मण 10 दस कीयो सो ओ धान साडाना सीरकार सु मलबो दीरीजैए उणमेंड दीरीजीया जावसी । फकत सं. 1972 रा आसाढ सुद 8 ता. 9 जुलाई सन् 1916 Jabarsingh.

इस बात से साफ जाहिर होता है कि सीरवी अपने धर्म गुरु दिवान को कितना पूज्य मानते थे। दिवान प्रतापसिंहजी को घुड़सवारी का बहुत शौक था। आपके पास सदा अव्वल दर्जे के घोड़े रहा करते थे। प्रतापसिंहजी साहित्य के प्रेमी थे। विद्वानों का आप खूब आदर किया करते थे। आई माता के धर्म का भी आपने विस्तार किया था। आप एक योग्य दिवान थे। संवत् 1976 के भादरवा सुद 11 को आपका स्वर्गवास हो गया था। उस समय कुंवर हरीसिंहजी मात्र 4 वर्ष के थे ।

।। दिवान हरीसिंहजी ।।

जन्म—संवत् 1972 आसाढ सुद 1

पाट—संवत् 1976 भादवा सुद 11

विवाह—संवत् 1989 माह सुद 3

स्वर्ग – संवत् 2003 आसोज सुद 3

दिवान प्रतापसिंहजी के स्वर्गवास के समय हरीसिंहजी मात्र 4 साल के थे। बाल्यकाल में ही आपको दिवान की गद्दी पर बैठाया गया था। नाबालिग होने के कारण बडेर ठिकाने का कार्य कोर्ट ऑफ वार्डस के अधीन था।

दिवान हरीसिंहजी की प्रारम्भिक शिक्षा बिलाड़ा में ही हुई थी। बाद में सन् 1925 में जोधपुर महिलाबाग स्कूल में दाखिला दिलाया गया था। कुछ समय वहां पढे लेकिन वहां की शिक्षा व वातावरण इस घराने के अनुकूल न होने के कारण सन् 1925 के अगस्त माह में अजमेर के मेयो कालेज में भर्ती करवाया। वहां पर आप शिक्षा में हमेशा अग्रणी रहा करते थे। तथा आपको घुड़-सवारी का बहुत शौक था। साथ ही पोलो के अच्छे खिलाड़ी थे। अजमेर मैयो कालेज से आपने डिप्लोमा की डिग्री प्राप्त की व शिक्षा छोड़ बिलाड़ा पधारे। यहां पधार अपना कार्य देखने लगे।

संवत् 1989 के माह सुद 3 को आपका विवाह हुवा। तथा संवत् 1990 के माह सुद 3 को जोधपुर महाराजा उम्मेद सिंहजी ने जोधपुर बुलाकर राईकाबाग पैलेस में परम्परागत नियमानुसार मातमपुरसी की रस्म अदा की। आप आई माता के अनन्त भक्त थे। बड़े शान्त व गंभीर प्रवृति के थे। हमेशा

स्वर्गीय दिवान साहब श्रीमान् हरीसिंहजी

आपके दिल में परोपकार की भावना रहती थी। आई माता की कृपा से संवत् 1991 के आसाढ वद 5 को कुंवर नरेन्द्रसिंहजी का जन्म हुआ। दिवान हरीसिंहजी ने सीरवी जाति के सुधार के कई कार्य किये थे। शिक्षा पर बल देते थे। सीरवी जाति के सुधार हेतु आपने सन् 1939 में "मारवाड़ सीरवी किसान सभा" की स्थापना की थी। जिसका उदघाटन कुंवर नरेन्द्रसिंहजी के द्वारा किया गया था। कुंवर नरेन्द्रसिंहजी बाल्यकाल में ही खेलते हुवे बाड़ी महल के झरोखे से गिरकर स्वर्ग सिधार गये थे। दिवान हरीसिंहजी को बहुत दुख हुआ।

दिवान हरीसिंहजी बड़े मृदुभाषी थे। आई माता की कृपा से आपका वचन सिद्ध होता था। आई पंथ के अनुयाईयों के दुख सुख का आप खूब ध्यान रखते थे। तथा इसी कारण मालवा मीमाड़ मारवाड़ का दोरा करते थे। दोरे में कई ऊंट, घोड़े, नौकरचाकर, गांव के प्रतिष्ठित लोग जाया करते थे।

संवत 1993 के जेठ सुद 5 को दिवान हरीसिंहजी ने बहुत बड़ा ज्याग किया था। जिसमें 11 सौ मण गुड़, 2 हजार मण गेहूं, 140 मण घी तथा अन्य सामग्री के साथ लाखों रुपये व्यय हुवे थे। ज्याग हेतु बिलाड़ा ग्राम की 200 औरतों ने 20 दिन तक गेहूं का दलिया तैय्यार किया था। तथा सैकड़ों आदमीयों ने इकट्ठा होकर बड़े कड़ाहों में 3 दिन तक लापसी बनाई थी। उस लापसी को बड़े कड़ाहों में तथा एक बड़े होज में भरा गया था, वो कड़ाह तथा होज आज भी देखने लायक हैं। इस ज्याग में आस-पास के गांव धुंवा बन्द (किसी के घर चूल्हा नहीं जलना) रहे।

लाखों लोग मालवा मीमाड़ पश्चिमी राजस्थान से आये थे। बड़ा भारी मेला लगा था। भोजन की व्यवस्था एक दो ट्रकों व गाड़ियों में लापसी भरकर चलते हुए फावड़े से डालते थे। लोग थालियों की जगह कपड़ों पर लेकर खाते थे। तीन दिन भोजन चलता रहा।

दिवान हरीसिहजी के समय में भी कई गांवों में छोडाणा हुआ था। गांव गरणिया के सीरवीयों ने छोडाणा किया था। जिसका प्रमाण निम्न है।

श्री

ठाकरा साहबा राजश्री 105 श्री बालूसिहजी साब कंवर साब श्री रामसिहजी देव वचनांता।

परगने जेतारण रे गांम गरणियो सीरवी नाराज होयने श्री माताजी रो पाट राजाडंड ले गीया और श्री दिवान साहब रा हुक्म सूं मोती बाबो आयो चोदरियो ने ठाकर साब ने आपस को तना जो मेटने श्री माताजी रो पाट पाछो दस्तूर गाम गरणिया में पाट थापन कीयो ने मारी तरफ सूं श्री माताजी रे केसर रो धान मण 11) ईग्यारे गरणीया तोल रो भेंट कियो। जीमेय सुं गउं 5।।)साडी पांच मण गूजी 5।।) साडी पांच मण जुमले ईग्यारे मण गरणिया तोल सूं दीया जावसी "मारे गांव में सीरवो आबाद रेवेला जब तक दीया जावसी ओ परवानो श्री जती बाबाजी भीकाजी रे सामने सो सनंन रेवे संवत् 1996 रा आसाढ वद 9 तारीख 11-6-39

दा. कोसोरसिह

का. ठा. गरणिया

वर्तमान दिवान साहब श्रीमान् माधवसिंहजी

एक बार दिनांक 26-12-25 को जोधपुर महाराजा व महाराणीजी भटियाणीजी बिलाड़े पधारे थे उस समय महाराजा को गाजों बाजों से बधाकर लाया गया था। तथा बाड़ी महल में ठहराया खूब खातर की गई। महाराजा ने दिवान साहब को अपने सामने कुर्सी पर बैठाया और अच्छा कुरब दिया था।

संवत् 1997 में आपने आई माता के मंदिर पर गाटरे लगवाकर छीणें डलवाई थी। तथा प्रवेश द्वार संगमरमर का बनवाया था। आई माता की कृपा से 1999 के पोह सुद 1 को आपके पुत्र रत्न हुवे। जिनका नाम माधवसिंहजी रखा। आई माता की भक्ति करते हुवे संवत 2003 के आसोज सुदी 3 को आपका स्वर्गवास हो गया। स्वर्गवास के 6 माह बाद कुंवर गोपालसिंहजी का जन्म हुआ था।

दिवान हरीसिंहजी के स्वर्गवास के समय माधवसिंहजी मात्र 4 साल के थे। अतः माधवसिंहजी संवत् 2003 के आसोज सुद 3 को दिवान की गद्दी पर बिराजे। आजकल दिवान माधवसिंहजी सोजत क्षेत्र के विधायक हैं।

।। इति ।।

दिवान परिवार की वंशावली के बारे में कवियों ने निम्न प्रकार लिखा है ।

"छप्पय"

धूहड़ चन्द अजेस, अप्पे बापल बगसिय अस ।
धारड़ बसतो लखो जाण माधव गोयन्द जस ।।
लख क्रम रोहिताश्व लिखम राजड़ सिधा लग ।
किय भगवान किल्याण पदम हरीदास प्रभाजग ।।
ऊदल अनोप लालो शिवो, थिर गादी लिछमण थपे ।
दिस आठ प्रसिध सगतो सुदत, तिकण पाठ पातल तपे ।।

इनके बाद प्रतापसिंहजी व हरीसिंहजी हुवे ।

गांव बोरून्दा के चारण कवि देथा जुगतीदानजी द्वारा रचित । फागण वद 5 रविवार संवत् 1963

जांणो मधो गोयंद लाखो क्रमसी जसलेता ।
रोहितास लिख्म राज हरक भगवान हुवेता ।।
कले पदम लीकीत हरि उदल हदहांतां ।
आखां फेर अनोप लाल देता अरिलातां ।।
शिवदान लछा सगतेस रे थिर गुण आदू थापसी ।
दईवाण बीलपुर में दिपे पाट तिका प्रतापसी ।।

राज संभाली ने सुजस, नगर बील निज राज ।
भारमल के संचित भणि, सहुकृत राज सुकाज ।।
कमधजली रवि वंश में, धूहड़ राव सधीर ।
धूहड़ रे चडेस भो, ताहि चन्द्र रनवीर ।
ताही अजेसी सुत भयो, बापलता सुत बंग ।।
वग सुत तवादो भयो, ताकै धारड़ अंग ।।
धारड़ सुत बसतो भणे, बसता सुत लाखेस ।
लाखा सुत जाणो भयो, जाणा सुत माधेस ।।

वर्तमान कामदार श्री पन्नेसिंहजी पड़िहार

वंशावली दिवान परिवार

राव सीहाजी

↓

राव आसथानजी

↓

राव धूहड़जी

↓

चन्डीपालजी

↓

अजयसिंहजी

↓

बापलजी

↓

बगसीजी

↓

धारड़जी

↓

बसतोजी

↓

लखोजी

↓

जाणोंजी

(राव जोधाजी के पुत्र भारमलजी के मंत्री)

…णोजी संवत् 1517 के माघ वदी 2 शनिवार को बिलाड़ा आये थे।

श्राई माता द्वारा दिया गया दिवान पद की वंशावली।

जाणोजी
↓
माधवजी
दिवान ↓
गोयन्ददासजी
↓
लखधीरजी
↓

1. पंचाणसिंहजी 2. करमसिंहजी
3. रतनसिंहजी 4. मालसिंहजी
↓

1. हेमराजजी 2. चोथजी 3. रोहिताश्वजी
4. डूंगरदासजी 5. मोवनसिंहजी 6. खींवसिंहजी
7. अखेराजजी 8. केसूदासजी 9. लिखमीदासजी
↓

1. कनोजी 2. पीथोजी 3. लिखमीदासजी 4. चांदोजी
5. दुदाजी 6. देवराजजी 7. विजेसिंहजी 8. अमराजी
9. खेतसिंहजी 10. भारमलजी
↓

1. सोनींगसिंहजी 2. पुरमलजी 3. राजसिंहजी
4. डूगरदासजी 5. हरिदासजी 6. भीवराजजी
7. तेजसिंहजी 8. मानसिंहजी 9. भोजराजजी
10. जगमालजी

↓

1. सुन्दरदासजी 2. आसोजी 3. भगवानदासजी
4. सांमीदासजी 5. मुकनदासजी 6. हरिदासजी
7. नरसींगदासजी 8. जीवणदासजी 9. सिहमलजी
10. अनोपसिंहजी

↓

1. अनोपसिंहजी 2. केसूदासजी 3. कल्याणदासजी
4. चंदरभाणजी 5. अणदकंवरजी 6. मवेदासजी
7. मुकनदासजी 8. हिम्मतसिंहजी 9. अभयसिंहजी

↓

1. चुतरसिंहजी 2. पदमसिंहजी (मोहनदासजी)
3. विजेसिंहजी 4 केनदासजी
5. दोलतसिंहजी

↓

1. खींवराजजी 2. हरीदासजी 3. जीवणदासजी
4. मेगराजजी
5. सांवलदासजी

1. खींवराजजी ↓ शिवदानदासजी (खोले लालसिंहजी रे)

2. हरीदासजी ↓
1. उदेसिंहजी 2. लालसिंहजी (खोले अनोपसिंहजी रे)

1. उदेसिंहजी
↓
अनोपसिंहजी
↓
लालसिंहजी
↓
शिवदानदासजी

↓

लक्ष्मणसिंहजी

↓

1. शक्तिदानजी 2. जसवंतसिंहजी

(1. शक्तिदानजी)	(2. जसवंतसिंहजी)
↓	1. प्रतापसिंहजी (खोले गया शक्तिदानजी)
	2. मोतीसिंहजी

प्रतापसिंहजी

↓

हरीसिंहजी

↓

1. नरेन्द्रसिंहजी 2. माधवसिंहजी (वर्तमान दिवान) 3. गोपालसिंहजी